

प्रकरणा	पृष्ठि	प्रकरणा	पृष्ठि	प्रकरणा	पृष्ठि
गान विद्या सीखना	३१	कारण जानने की रीति	३६	संक्राति वाहनं ...	४७
रोगोत्पन्न शुभाशुभ	३१	नाम कर्णों का ...	४०	किस्तुघ्नमें मृत्यु ...	४७
रोग मुक्ति स्नान	३२	कर्णों के स्वामी	४०	संक्राति के वस्त्र ...	४८
अथ लता श्रौषधी		हस्त्य कर्णों का जा		संक्राति के आयु	४८
वृक्ष लगाना ...	३३	नना ...	४०	संक्राति के भोजन	
हल चलाना ...	३३	भद्रा विचार ...	४१	पात्र ...	४८
वीज रोपण करना	३३	शास्त्रार्थ ...	४१	संक्राति के भक्ष्य	
तृण काष्ठदि संग्रह	३४	भद्रा का प्रारंभ का		पदार्थ ...	४८
हाथी लेना देना	३४	विभाग ...	४२	संक्राति की गंध ...	४६
अथ गवादि पशुओं		भद्रा के अंग का फ	४२	संक्राति जाति माह	४६
में लेना देना ...	३४	अथ चंद्रजन्य भद्रा		संक्राति के पुष्प	
राज्याभिषेक ...	३५	बास फल ...	४२	माह ...	४६
राजा का दर्शन ...	३५	भद्रा फल ...	४३	संक्राति के आम्रमूष	४६
दूज के चंद्रमा का फ	३५	वार के अनुसार भ		संक्राति की कुंच	४६
राशि पग्ल चंद्रोदय	३६	द्रा का नाम ...	४३	संक्राति की अन्न	
द्रव्य स्थापित करना	३६	कर्णों के नाम दिशि	४४	स्था ...	५०
चूल्हा पूजन मूर्त्त	३७	स्वामी ...	४४	संक्राति कितने	
काष्ठ स्थापन मूर्त्त	३७	वार अनुसार संक्राति		मूर्त्त होती है ...	५०
पुष्प नक्षत्र के गुण		के नाम ...	४५	धान्य विचार ...	५२
दोष ...	३८	नक्षत्रों के अनुसार		नक्षत्र के अनुसार	
योग प्रकारों ...	३८	संक्राति ...	४५	नक्षत्र की पीडा ...	५२
प्रति दिन योग जा		संक्राति फल ...	४५	जन्म नक्षत्र का फ	५२
नने की रीति ...	३८	काल फल ...	४६	अथ संक्राति का	
योगों के नाम ...	३९	दिशा का मुख ...	४६	स्वरूप बर्णन ...	५३
अथ योगों में घटि		अथ कर्णों के अनुसार		चंद्रमा से संक्राति	
का वर्जनीय ...	३९	र संक्राति स्थित ...	४७	का बर्णन फल ...	५३

# श्रीगणेशायनमः

श्लोक

शुकेन्द्रकालार्कयुतः कृत्वाश्रन्यस्सैर्हतः ॥

शेषाः संवत्सराज्ञेयाः प्रभवादिबुधैः क्रमात् १

टीका ॥ शालिवाहनके शकमें १२ वारह मिलावै और ६० का भाग देय शेष रहे तो प्रभवादिक संवत् का नाम जानना ॥ १ ॥

श्लोकः

सावपंचाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि

रेवायाउत्तरेतीरेप संवत्साम्नाति विश्रुतः ॥ २

टीका ॥ शालिवाहन के शकमें १३५ एकसौ पैतीस मिलावे तो रवानदी के उत्तरके किनारे ये वसे जो विक्रम राजा जिसका स संवत्सर जानना ॥ २ ॥

## संवत्सरनामानि

श्लोक

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोथ प्रजा षतिः ॥

अंगिराः श्रीमुखोभावो युवाधातातथैव च १।

दुश्चरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो हृषः ॥

चित्रभानुः सुभानुश्च ताराणः पार्थिवो व्ययः २।

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विक्रतिः खरः ॥

नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथ दुर्मुखो ॥ ३ ॥

हेमलवो विलंबी च विकारी शर्व्वरी लवः ॥

शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसु पराभवो ४

पूवंगः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत्

परिधावी प्रमादी च आनंदो राक्षसो नलः ॥ ५ ॥

पिंगलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मतिः ॥

दुन्दुभी रुधिरेश्वरी रक्षाक्षी क्रोधनः क्षयः ६ ॥

॥ ६ ॥

भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः  
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥

विश्वदेवाश्चंद्रज्वलनो नासत्यनामानो च भगः २ ॥

टीका ॥ वारह वर्ष का एक युग कहते हैं ऐसे पांच मिलकर ६० संवत्सर होते हैं तिन वर्षों के क्रम से अधिदेवता मुनियों ने कहे हैं ॥ १ ॥ विष्णु १ वृहस्पति २ इंद्र ३ अग्नि ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ पितर ७ विश्वदेवा ८ चंद्रमार्द अग्नि ९ अश्विनी कुमार १० सूर्य ११ ये संवत्सरो के स्वामी कहे ॥ २ ॥ भेद कहते हैं ॥

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरो न्यस्तस्माद्दिडा  
न्विदिति पूर्वपदाद्बुधेयुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु  
तदीयनाथा बन्धुके सौम्यु विरचि शिवा क्रमेण

टीका ॥ प्रथम संवत्सर का स्वामी अग्नि द्वितीय परिवत्सर का स्वामी सूर्य तृतीय इडा वत्सर का स्वामी चंद्रमा चतुर्थ अनुवत्सर का स्वामी ब्रह्मा पंचम इद्वत्सर का स्वामी शिव ये सवरे युगों के विभे जानिये ॥

अन्यमते तु

आनंदादि भवद्ब्रह्माभावादिर्विष्णुरेव च ॥

जयादि प्रक १ः प्रोक्ता सृष्टिपालननाशकाः

टीका ॥ आनंदादिक २० वीस संवत्सरो का स्वामी ब्रह्मा और भावादिक २० संवत्सरो का स्वामी विष्णु और जयादिक २० वीस संवत्सरो का स्वामी रुद्र ब्रह्मा सृष्टि कर्ता विष्णु पालनकर्ता रुद्र संहार कर्ता ये जानिये ॥ १ ॥

ऋतु अथन प्रकाणि

शिशिर पूर्वमृतु त्रयमुत्तरत्ययनमाहुरहश्च तदामरम् ॥

भवति दक्षिणामन्य ऋतु त्रये निगदिता रजनी मरुता हि सा

टीका ॥ शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतों में सूर्य उत्तरायन होते हैं सो देवताओं का दिन जानिये और वर्षा शरद हेमंत इन तीन ऋतुन में सूर्य दक्षिणायन होते हैं सो देवताओं की रात्रि जानिये ॥ ८ ॥

**मास परत्व ऋतु**

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्यतवश्चषट्  
दक्षिणान्याग्रगृह्णति दैवपित्रे च कर्मणि ॥१॥

टीका ॥ चैत्रादिक दो दो महीनों में दक्षिणान्य के मत से दैवकर्म  
पितृकर्ममें वसंत आदि छहों ऋतु ग्रहण करते हैं ॥१॥

**उदाहरण**

१ चैत्र ...	} वसंत १	७ आश्विन ...	} शरद ४
२ वैशाख ...		८ कार्तिक ...	
३ ज्येष्ठ ...	} ग्रीष्म २	९ मार्गशिर ...	} हेमंत ५
४ आषाढ ...		१० वीष ...	
५ आवण ...	} वर्षा ३	११ माघ ...	} शिशिर ६
६ भादों ...		१२ फाल्गुण ...	

**मास परिज्ञान**

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः।

साराशिः संक्रमाख्या स्या मासत्पतनहायने

टीका ॥ पूर्व की राशि को छोड़के आगे की राशि को जायतो सर्वसे  
मेष राशि से आदि देके उसको मास संक्राति ऋतु वर्ष अ  
यन या गिनती ले होते हैं ॥

दर्शावधिमासमुप्रांति चंद्रं सौरं तथा भास्कर

राशि चारात् ॥ त्रिंशद्द्वयं सावन संज्ञमार्या

नाक्षत्रमिंदोर्भगणा भ्रमाच्च ॥१॥

टीका ॥ भावस से भावस तक चंद्रमास कहते हैं संक्रांति से सं  
क्रांति तक सौरमास कहते हैं तीस ३० दिन का सावन मास कहते  
हैं । चंद्रमा के नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र तार्द्धे नक्षत्र मास कहते हैं १

**मास नाम**

मघस्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ



आवणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ॥

आश्विने पद्मनाभं च ज्येष्ठे दामोदरं तु ४

टीका ॥ मार्गशिरमें केशव नाम । वष्णु का नाम जानिये - पौष  
में नारायण नाम जानिये - साध में साधव नाम जानिये - फा  
ल्गुण में गोविंद नाम जानिये - चैत्र में विष्णु नाम जानिये - वै  
शाख में मधुसूदन नाम जानिये - ज्येष्ठ में त्रिविक्रम नाम जा  
निये - आषाढ में वामन नाम जानिये - आवाण में श्रीधर नाम  
जानिये - भाद्रों में हृषीकेश जानिये - आश्विन में पद्म नाम जा  
निये - कार्तिक में दामोदर नाम जानिये - मार्गशिर में केशव  
नाम जानिये - पौष में नारायण नाम जानिये ॥ ४ ॥

मास परत्व देवीनके नाम

मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥

माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्री नामका ।

चैत्रे मासि रमा देवि वैशाखे मोहिनी तथा ॥

पद्माक्षी ज्येष्ठे मासे तु आषाढे कमले तिव ॥

कांती मती आघणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥

पद्मावती आश्वने तु राधा देवी तु कार्तिके ॥ १

टीका ॥ चैत्र में रमा देवी जानिये - वैशाख में मोहिनी नाम जा  
निये - ज्येष्ठ में पद्माक्षी नाम जानिये - आषाढ में कमला देवी  
नाम जानिये - आवाण में कांतिमती जानिये - भाद्रों में अपराजिता  
नाम जानिये - आश्विन में पद्मावती नाम जानिये - कार्तिक में  
राधा नाम जानिये - मार्गशिर में विशालाक्षी नाम जानिये - पौ  
ष में लक्ष्मी नाम जानिये - माघ में रुक्मिणी नाम जानिये - फा  
ल्गुण में धात्री नाम जानिये - ये देवीन के नाम हैं ॥ १ ॥

वार परत्व मास फलं

पंचार्क वासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयं

पंचार्क वारा दुर्भिक्षप्रोषा वाराः शुभप्रदः

## अधिक मास

द्वात्रिंशद्भिर्गतमासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा  
घटिका नाञ्चतुष्केनपतत्यधिकमासकः

टीका ॥ ३२ महाना १६ दिन ४ घटी इनके भागजाने पर्यंत अधि  
क मास संभव होता है ॥ १ ॥

## क्षय मास

असंक्रातिमासाधिमासःस्फुटंस्याद्विसंक्रातिमा  
सःक्षयारव्यःकदाचित् ॥ क्षयकार्तिकादित्रयेना  
न्यतःस्यात्तदावर्षमध्येधिमासद्वयंच ॥ १ ॥

टीका ॥ जिस महाने में संक्राति होय नहीं तो अधिक मास होता  
है और जिस महाने में दो संक्राति होंय तो क्षय मास जानिये का  
र्तिकादि तीन मासों में संक्राति का संभव न होता उस वर्ष में दो  
अधिक मास होते हैं ॥ १ ॥

## तिथि प्रकरणां

## तिथिज्ञान

मासमाच्चंद्रभयावत् गणयेत्तावदेवतु ३ ॥

यावति गणना दानितावंत्यः स्तिथयः क्रमात्

टीका ॥ मासके नक्षत्रसे लेके दिवसके नक्षत्रकी जितनी संख्या हो  
य तितनी तिथि जानिये परंतु पूर्णिमास की गिनती समझले ॥ १ ॥

## तिथि कर्म फल

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृती

या रोगयदात्री चहानिदा च चतुर्थिका ॥ शुभातुपंचमी

ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभामता ॥ सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्ट

मी व्याधिनाशिनी ॥ नवमी मृत्युदा ज्ञेया द्रव्यदा दश

मी तथा ॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥

त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा

पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्याः शुभा तिथिः ॥ २४ ॥

तिथिजानिये - पंचमी ५ दशमी १० पूर्ण १५ ये पूर्ण तिथि कृष्ण पक्ष में पंचमी पर्यंत शुभ जानिये - पंचमी से मावस पर्यंत मध्यम - मावस से पंचमी पर्यंत हीन - शुक्ल पक्ष में पंचमी तक हीन - पंचमी से दशमी तक मध्यम - दशमी से पंचमी पर्यंत श्रेष्ठ जानिये ॥ १ ॥

### तिथि वर्ज्यतानि

कृष्णान्दं दृहती फलानि लवणं वर्ज्यं तिला  
मृतघातैलं चासलकं दिवं प्रवसताशीर्षक  
पालांशकम् ॥ निष्पावांश्च मसूरिकाफल  
मद्यं हंताकसंज्ञं मधुघृतं स्त्री गमनं क्रमात्  
प्रतिपदादिश्वे वना षोडशः ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ पड़वा को पेठानखाय - दूज को कटहल नखाय - तीज को नोन नखाय - चौथ को तिल नखाय - पंचमी को आमकी खटाई नखाय - छठ को तेल नखाय - सप्तमी को आंवलानखाय - अष्टमी को नारियल नखाय - नौमी को काशीफल नखाय - दशमी को परवल नखाय - एकादशी को दलिया नखाय - द्वादशी को मसूर नखाय - त्रयोदशी को वेगन नखाय - चौदश को सहत नखाय - पूर्णों को जूआनखेले - मावस को स्त्रीसंभाग न करे ये प्रायु वारे को वर्जित करे है - अष्टमी को मास नखाय चौदश को इजामत नकरावे - ये बातें ऊपर लिखी सो वर्जित हैं ॥ १ ॥

### तिथियों के काल्य

नंदासुचित्रीत्सववास्ततंत्रक्षेत्रादिकुर्वीततथैव नृत्यं  
॥ विवाहभूषाशकटाध्वयानेभद्रासुकार्य्याण्यपि पौ  
ष्टिकानि ॥ जयासुसंग्रामबलोपयोगी कार्याणि सिद्धं  
त्यपि निर्मितानि ॥ रिक्तासुविद्वधघातसिद्धिर्विषा  
दिशस्त्रादित्रयांतिसिद्धिम् ॥ पूर्णासु मागल्यविवा  
हयात्रासपौष्टिकं प्रांतिकं कर्मकार्यं ॥ सदैवदर्शोपि  
लकर्ममुक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥ ३ ॥

# ज्यातपत्र



मुन्शी किशनलालने पंडित वृंदा  
वनदासजीके द्वारा संस्कृतसे  
भाषाटीकाकारके मूलसहित

श्रागरा

मुहल्ला खिलीईटसतवेईजादकिशन  
में छपवाया

एक २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार  
रजिस्टरीहुईकोईसाहबनकलइसटीका  
कीनछापें सन् १८७६ ई०सवी

चौथीबार ३००० पुस्तक॥ मूल्यप्रतिपुस्तक १

3000 Copies }

1 Rupee

बुधोदहस्यतिश्चैव दिशामीशास्त्रथाग्रहाः

टीका ॥ पूर्व का स्वामी सूर्य अग्निकोण का स्वामी शुक्र दक्षिण का स्वामी मंगल नैऋत का स्वामी राहु पश्चिम का स्वामी शनि वायव्य का स्वामी चंद्रमा उत्तर का स्वामी बुध ईशान का स्वामी गुरु ये दिशाओं के स्वामी जानना चाहिये ॥

ग्रहों की जात

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियो भौमभात्करौ  
सोमसौम्यो विप्रो प्रोक्तौ राहु मंदौ तथात्पजौ ।

टीका ॥ बृहस्पति शुक्र यह ब्राह्मण जानिये - सूर्य मंगल ये क्षत्री बुध चंद्रमा ये वैश्य जानिये - राहु केत शनि ये शूद्र जानना ॥

ग्रहों के वर्ण

रक्तावंगारकादित्यो श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ  
गुरुसाम्यो पीतवर्णो शनि राहु सितौ शुभौ ॥

टीका ॥ सूर्य मंगल ये लाल वर्ण जानिये - बुध बृहस्पति ये पीला वर्ण जानिये - शनि राहु ये काला वर्ण जानना ॥

रविवारादि कर्म जानना

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमंत्रो  
षधशस्त्रकर्म ॥ सुवर्णाताम्रौर्णिकचर्मका  
ष्टसंग्रामपरायादिरवौ विदध्यात् ॥ १ ॥

टीका ॥ रविवार के दिन राजा का अभिषेक गीत बाजा पालकी चढ़ना राजा की सेवा गौ बैल का पालना अग्नि में हवन करना मंत्र उपदेश करना श्रेष्ठि खाना शस्त्र बनाना दुकान का करना सोना तांबा ऊन चमरा काष्ट युद्ध प्रसंग ये रविवार को कृत्य करना ॥ १ ॥

सोमवार के कर्म

शंखाङ्गमुक्तास्रुते शुभोज्यस्त्री वृक्षक  
स्याधुविभूषणाद्याः ॥ गानं क्रतुक्षीरवि  
कारशृंगी पुष्पावरांभणमिन्दुवारे ॥ २ ॥

सिद्धाति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥६॥

टीका ॥ शुक्रवार को स्त्री संग गोवन्त शय्या मांछे रत्न उत्साह  
अलंकार वाणिज्य कर्म गर्द द्रव्य ये शुक्र को छत्य करनी ॥६॥

शनिवार

लोहास्यसोसत्रपुशस्त्रदास पापानृतस्ते  
य विषादविद्या ॥ गृहप्रवेशद्विपबंधदी  
क्षास्थिरचकर्मासुतवन्हिकुर्यात् ॥ ७ ॥

टीका ॥ शनिवार को लोहे का काम पत्थर का शीशे का काम तर  
वार दास दासी पापकर्म मूठ बोलना चारी विषका गृह प्रवेश हाथी  
वाँधन मंत्र उपदेश और स्थिर कर्म शनिवार को करना ॥७॥

वारदेवता

सूर्यादितः शिव शिवा गृह विष्णुकेन्द्र  
कालः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम ॥

टीका ॥ सूर्य का स्वामी शिव - चंद्रमा का पार्वती - मंगल का स्कंद  
- बुध का विष्णु - गुरु का रुद्र - शुक्र का ब्रह्मा - शनि का चंद्रमा  
स्वामी यह ग्रहों के क्रम से स्वामी कहे मुनियों ने ॥

ग्रहों के अधि देवता

वन्हिवुभूमिहरि प्राक्रशची विरंचि  
स्तेषां पुनमुनिवैधिदेवताश्च ॥ १ ॥

टीका ॥ सूर्य का अग्नि अधिदेवता - चंद्रमा का जल - मंगल का भू  
मि - बुध का हरि - बृहस्पति का इंद्र - शुक्र का इंद्राणी और शनि  
का ब्रह्मा अधि देवता मुनिवरों ने ग्रहों के अधिदेवता कहे ॥ १ ॥

काल परिणाम

पतंगशुन्यो दिवसाधिपत्यं निशाप्यरुश्चै  
वतुतिगमभानोः ॥ रात्रिद्वयं चैकदिनं चसौ  
मो शेषेग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ २ ॥ ३ ॥

टीका ॥ शनिश्चर का दिनवली - सूर्य का दिन रात्रिवली - चंद्रमा का

शुक्र को गोमय डालकर तेल लगावे तो तेल दोष दूर होय ॥ ६ ॥

वार	रवि	शुक्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वामी	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	रुद्र	ब्रह्मा	चंद्र
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
कालवि	८ प्रहर	२ रात्रि ४ प्र	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
दोषादोष	रात्रि दोष	दिन दोष	दिन दोष	रात्रि दोष	रात्रि दोष	रात्रि दोष	दिन दोष
कृत्य	उत्तकर्म सि.	सर्वकर्म सि.	उत्तकर्म	कर्मसि.	कर्मसि.	कर्मसि.	उत्तकर्म
तलाभ्यं.	ताप	शोभा	मृत्यु	धन	हानि:	दुःखम्	सुखम्

**प्रथम नक्षत्र ज्ञान**

हिनिष्टमासस्त्रियुक्तविधुनी  
भूषोपितः स्याद्दुष्टप्रोषसर्व्या ॥

टीका ॥ चैत्र से आदि लेकर गत सहीनों को दूना करे नई नई तिथि जाडदे और १ घटाये दे तब सत्ताईस २७ का भाग देय शेष रहे सो नक्षत्र जानिये ॥

**प्रथम शुभाशुभ नक्षत्र ज्ञान**

प्रश्चिनीतु शुभा प्रोक्ता भरणी नाश कारिणी ॥  
 कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः  
 मृगः शुभास्ततश्चाद्रो मध्यमस्त पुनर्वसुः ।  
 पुष्यः शुभः सर्पसघा पूर्वाशुक नाश मृत्यदाः  
 उत्तराहस्त चित्रास्त विद्या लक्ष्मी शुभ प्रदाः ।  
 स्वाती विशाखेत्व शुभे मैत्रं सर्वाथ सिद्धि हम् ३  
 ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोर्यक्षय नाशार्थ दानि हम् ।  
 विष्णु ब्रह्मा विष्णु वश्र बुद्धि हृदिकर प्रदाः ४  
 वासव वारुणा शैवं शुभं मद्र मृति प्रहम् ॥ ५ ॥  
 उत्तराभाद्रकं श्रीदेवती काम होयिका ॥ ५ ॥

उत्तरभाद्रपद पूर्वा कहिये रेवती ये नक्षत्रों के स्वामी कहे ॥ १ ॥

अधोमुख नक्षत्र ॥

मूलाग्ने यम घा द्वि देव भरणी सर्पादि पूर्वात्र  
ये ज्योतिर्विद्विरधोमुखं हिनवकं माना मि हं  
कीर्तितम् ॥ वापी कूप तडाग गति परिस्वाखा  
तौ निधेरुद्धति क्षेपौ धूत विलप्रवेश गणिता  
रन्मः प्रसिध्यंति च ॥ २ ॥

टीका ॥ मूल हातिका मघा बिशाखा भरणी श्लेषा तीनों पूर्वाये  
अधो मुख नक्षत्र कहे इन नौ नक्षत्रों में वावडी कुआ तलाव गढेला  
खार्द द्रव्य खोद के रखना जूआ खेलना विलमें प्रवेश करना ग  
णित का आरंभ ये कर्म अधोमुख नक्षत्रों में शुभ है ॥ २ ॥

तिर्यङ्मुखन

ज्येष्ठादित्य काराश्विनी मृगशिरः पौषाः ऽनु  
रधा निलत्वश्चख्यानि वहंति भानि मुनयस्ति  
र्यमुखान्येषु च ॥ अश्वेभोष्टुलायरासभृ  
षोरभादि दंत्यश्वनौ गत्रीयत्रहल प्रवाह गम  
नारंभाः प्रसिध्यंति च ॥ ४ ॥ ३ ३ ३ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृगशिर रेवती अनुरा  
धा स्वाति चित्रा इन नौ नक्षत्रों में घोड़ा हाथी ऊंट भैंस गधा  
वैल मेढा कुत्ता नाव नत्र नागर धरना गमन ये कर्म करना ४

ऊर्ध्वमुखन ॥

पुष्यार्द्रा श्रवणोत्तराश्रत भिषक ब्राह्म श्रवि  
ष्ठा हूयान्पूर्ध्वास्यानिनवो दितानि सुनिभि  
धिषायान्यथेतेषु तु ॥ प्रासादध्वजद्यमवार  
णगृह प्राकार सत्तोरणोच्छाया राम विधिर्हि  
तोनरपतेः पद्मभिषेकादि च ॥ ६ ॥

टीका ॥ पुष्य आर्द्रा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा उत्तराफा उत्तर



भेद बंधवध कर्म्य चात्रतु ॥१॥

टीका ॥ आदा श्लेषा ज्येष्ठा मल इन नक्षत्रों में भूत यज्ञ इन  
की पीडा निवारण मंत्र साधन करना बंधन कर्म भेद कर्म  
करना यह शुभ है ॥ १ ॥

### चरनक्षत्र

वैशाख त्रय युताः पुनर्वसु मारुतं च चर  
पंचकं त्विहम् ॥ इति वाजिकर्मेषवाह  
नायमयानविधिषु प्रसस्यते ॥२॥ २ ॥

टीका ॥ पुनर्वसु स्वाति अवाण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रों  
में हाथी घोड़ा इत्यादि नाना प्रकार के वाहन वागीचे को जा  
ना पालकी रख बनाना ये विधि इनमें शुभ है ॥ २ ॥

### उग्र नक्षत्र

पूर्विकात्रितयमांतिकं मघेत्पुग्रपंचकसि  
दंजगुर्वधाः ॥ शाह्यनाशुविषघातवधनो  
त्साहशास्त्रदहनादिषु स्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ मरुती मघा पूर्वाफल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वाभाद्रपद इन  
नक्षत्रों में शाठकर्म विषकर्म बंधन उत्साह शास्त्र ये कर्म शुभ हैं ॥१॥

### मिश्र नक्षत्र

हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मिश्रसंज्ञमथ  
मिश्रकर्मसु ॥ स्वामिधानसमकर्मसा  
धनेकीर्तितानिसकलानिसूरिभिः ॥ १

### टीका

हान्तका विशाखा इन नक्षत्रों में अग्नि कार्य मिश्रका  
वृषोत्सर्गादि ये कार्य सिद्ध हैं ॥ १ ॥

॥ अथ नष्टवस्तुप्राप्तप्रश्नमाह ॥

तिथिवारचनक्षत्रं प्रहरेण समन्वितं ॥ दिक्सं  
ख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ एकेन भूत

भाद्रपद भरणी ये मध्य लोचना जानिये - पुनर्वसु पूर्वा फाल्गुनी स्वाति मूल अर्वा उज्जराभाद्रपद कृतिका यह नक्षत्र सुलोचना जानिये ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

अंधके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा  
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उज्जरे तु सुलोचने १

टीका ॥ अंधे नक्षत्र में वस्तु जाय तो पूर्व की ओर कहना घर से मंदे नक्षत्र में दक्षिण की तरफ मध्य लोचन नक्षत्र में पश्चिम की तरफ - सुलोचना नक्षत्र में उज्जर की तरफ जानना ॥ १ ॥

दशाद्रीद्यास्त्रियस्तारा विशाखाद्यान पुंसका

मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ३ ३ ॥

टीका ॥ आद्री से आद ले जो दश नक्षत्र तिनमें वस्तु स्त्रीने लीनी विशाखा से तीन नक्षत्र में जो वस्तु जाय पुरुष स्त्री दो जानना मूल में से १४ नक्षत्र में जो चीज जाय तो पुरुष जानिये ॥

अंधके लभते शीघ्रं मंदके च दिनत्रयम्

मध्यके च चतुष्पष्टी नप्राप्नोति सुलोचने

टीका ॥ अंधे में वस्तु जाय तो शीघ्र मिले मंदे नक्षत्र में जाय तो तीन दिन तक खबर पावे मध्य लोचन में चौंसठ दिन तक मिले सुलोचना में जाय तो नहीं मिले ॥ १

नक्षत्र संख्या

वह्नि त्रिज्वर त्विषु गुणोन्दु कृताग्निभूत

वाणाश्चिनेत्र प्रारभू कु युगाब्धि रासाः

रुद्राब्धि रामगुण वेद प्रत द्वि शुभमदंता

बुधैर्निगदिताः क्रम प्रोभताराः ॥ १ ॥

टीका ॥ आश्विनी के तीन तारा ३ भरणी के ३ कृतिका के ६ रोहिणी के ५ मृगशिर ३ आद्री के १ पुनर्वसु के ४ पुष्य के तीन ३ श्लेषा के ५ मघा के ५ पूर्वा फाल्गुनी के २ उज्जरा फाल्गुनी के २ हस्त के पांच ५ चित्रा का १ स्वातिका एक १ विशाखा के चार ४

शय्याकारमचान - उत्तरभाद्रपद यमलाकार - रेवती  
मर्दलाकार गोल यह नक्षत्रों के रूप कहे ॥

संख्या	नक्षत्र	शुभ	स्वामी	मुख संज्ञा	रूप संज्ञा		लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आह्वति	संख्या
					नाम	नाम			
१	आश्वि	शुभ	अ. कु.	ति. मु.	लघु	क्षिप्र	मंदलो.	अश्वि मु.	३
२	भरणी	नाश	यम	अ. मु.	उग्र	कूर	मध्य. लो.	यो. मु.	३
३	कृति	शुभ	अग्नि	अधो मु.	मित्र	साधार	सुलोच.	सुराका	६
४	रोहि	सिद्धा	ब्रह्मा	ऊ. मु.	ध्रुव	स्थिर	अंध	शंकटा	५
५	मृग	शुभ	चंद्र	ति. मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	हिरन	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊ. मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	नणिस.	१
७	पुन.	मध्य	दि. मन	ति. मु.	चर	चल	सुलोच	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊ. म.	लघु	क्षिप्र	अ. लो.	शरसम	३
९	श्लेषा	शोक	सर्प	अ. मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मं. लो.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाश	पितर	अ. मु.	उग्र	कूर	मं. लो.	शाला	५
११	पूर्वा	मृत्य	भग	अ. मु.	उग्र	कूर	सुलोच	शय्या	२
१२	उत्तर. फा	विद्या	श्रयमा	ऊ. मु.	ध्रुव	स्थिर	अ. सो.	पर्यंक	२
१३	हस्त	सहस्री	रवि.	ति. मु.	लघु	क्षिप्र	अ. सो.	दंतसम	५
१४	चित्रा	शुभ	ब्रह्मा	ति. मु.	मृदु	मैत्र	मध्यलो	शोतीसम	१
१५	स्वाति	शुभ	वायु	ति. मु.	चर	चल	सुलोच	विद्रुम	१
१६	विशा.	शुभ	इंद्रानी	अधो मु.	मित्र	साधार	अंधा	तोरण	४
१७	अनू.	सर्वसि	मित्र	ति. मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	वलिनस	४
१८	ज्येश्ठा	क्षय	इंद्र	ति. मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	कुंडल	३
१९	मूल	हानि	राक्षस	अ. मु.	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोच	सिं. पु. स	११
२०	पूर्वा. क	हानि	उदक	अ. मु.	उग्र	कूर	अंधा	शय्या	४
२१	उत्तर. फा	दृढ़ि	वि. देवा	ऊ. मु.	ध्रुव	स्थिर	मंदलो.	हस्तीदंत	३
२२	शनिनि.	सिद्ध	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मध्य	कोणस	०

टीका ॥ अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति विशाखा  
अनुराधा - रवि भौम गुरु शुक्र सोम इन वार नक्षत्रों में सोना  
मोती मूंगा मणि हाती दात शंख ये पहरना और लाल वस्त्र प  
हरना शुभ है ॥ १ ॥

### मद्यारंभ करण

रोद्रे पैत्र्ये वारुणो पौर हते याम्ये सीर्ष्ये नै  
र्ऋते चैव धिष्ण्ये ॥ पूर्वोख्येषु त्रिष्वपि श्रे  
ष्ट उक्तौ मद्यारंभः कालविद्भिः पुराणैः १ ॥

टीका ॥ आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी श्लेषा मूल तीनों  
पूर्वा इन नक्षत्रों में मद्य काटना शुभ है ॥ १ ॥

### शौषधिग्रहण नक्षत्र

पौष्णा द्वये चादितिर्भेद्वये च हस्तत्रये च श्र  
वणत्रये च ॥ मैत्रे च मूले च मृगेश्च शस्तंभे  
षज्य कर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥ २ ॥

टीका ॥ रवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाति श्र  
वणा धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृगशिर इन नक्षत्रों  
में शौषध कर्म करना शुभ है ॥ २ ॥

### पुंसवन नक्षत्र

श्रवणः सकारः पुनर्वसु निऋतेर्भंच स  
पुष्य कोमृगः ॥ रविभूसुतजीव वासराः  
कथिताः पुंसवनादि कर्मसु ॥ १ ॥

टीका ॥ श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर रविभौम  
गुरु ये वार नक्षत्र पुंसवन कर्म में शुभ है ॥ १ ॥

### ॥ कार्णवेधः ॥

पौष्णा नैऋत्याश्चित्रा पुष्य  
वासव पुनर्वसु मैत्राः ॥ सेन्दवे श्रवणा  
वेधविधौ बृहस्पतिमनुयोहि शिशुनाम्

॥ सप्तश्रु कर्मसु वज्या ॥

भद्रा प्रक्षांत रिक्ता व्रत दिन वसुभू आद्द षष्ठी पुरा  
त्रौ संध्यायातारभास्वत् पानिपु घटधनुः कर्क  
कन्यागतेर्के ॥ जन्मर्क्षे जन्म मासे सुरदिन यज  
ने भूषितो ग्राम यायी भुक्तो भ्यक्तो पिभक्तः सम  
दिन रजिगः पूमश्रु कार्येन कुर्यात् ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ भद्रा में पूर्णो मावस में चौथ नौमी चादश रिक्ता में व्रत के  
दिन में अष्टमी पडवा में आद्द के दिन में षष्ठी में रात्रि में संध्या  
समय में व्यतीपात में दुष्ट योग में रवि मंगल सेनि इन वारन में  
कर्क कन्या धन कुभ इनके सूय में जन्म नक्षत्र में जन्म मास  
में देवता के दिन में हवन कर्म में अलंकार धारणा में यात्रा कर  
ने के समय में भोजन करे पर उबटना लगाये पर अभिषेक  
के पीछे मंगल कार्य में स्त्री रजस्वला के सम दिन में क्षौर  
कराना नहीं चाहिये ॥ १ ॥

श्लोकः

आज्ञयानरपते द्विजन्मनां दाह कर्मसूत  
सूतकेषु च ॥ बंधमोक्षमखदीक्षाणो पु  
चक्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम ॥ १ ॥

टीका ॥ ब्राह्मण राजा इनकी आज्ञा से क्षौर शुभ है दाह कर्म  
में सूतक के अंत में बंधी खाने से छूटने के समय अज्ञ में दी  
क्षा में क्षौर कराना श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धाव्रतदीक्षा  
शुक्रविशुद्धियात्रायां सर्वशुद्धिं प्राप्ताकेन

टीका ॥ ताराशुद्ध होय तो क्षौर शुभ है सूर्य वृहस्पति शुभ होय तो  
व्रत दीक्षा शुभ है शुक्र शुक शुभ होय तो सर्व शुभ यात्रा कराना  
शुभ जानये चंद्रमा शुभ होय तो सर्व शुभ कहना चाहिये ॥ १ ॥

॥ दंत बंधन ॥

श्लोकः

विद्यारंभे सुरगुरुं सितश्लेष्वभीष्टार्थदायी कर्त  
श्रुषुश्चिरमपि करोत्यं शुभान्मध्यमोत्र ॥ नीरा  
हां शुभवति जडता पंचता भूमि पुत्रे छाया सूना  
वपि च मुनयः कीर्तयंत्येवमाद्याः ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ विद्यारंभ करने में बुध बृहस्पति शुक ये शुभ हैं आयु के  
देने वाले हैं ॥ और सूर्य को मध्यम है। सोमवार को विद्यारंभ करे  
तो जड़ रहे। और मंगल शनिश्चर को विद्यारंभ करे तो मृत्यु के तुल्य क  
ष्ट पावे ॥ १ ॥ ॥ गान विद्या सीखना ॥

हस्तस्तिष्ठो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा षोष्ठा  
वारुणं चोत्तराच ॥ पूर्वाचार्यैः कीर्तितं श्रुं  
द्वर्तिर्नृत्यारंभे शोभेन्नोत्तरक्षवर्गः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शतभिषा  
तीनों उत्तर और चंद्रमा शुभ होय तो इनमें गान साखना अ  
वश्य करके शुभ है ॥ १ ॥

॥ सर्पदंष्ट्रा विचारः ॥

यः कृत्तिका मूल मघा विष्णारवा मार्या तु कार्द्वी सुभजंगरुष्टः  
सर्वेन ते येन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोति मृत्योर्वेदनं ननुष्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ कृत्तिका मूल मघा विष्णारवा श्लेषा रेवती आर्द्रा इन  
नक्षत्रों में जो सर्प काटे तो गरुड भी रक्षा करे तो न जीवे ॥ १ ॥

॥ रोगोत्पन्न शुभा शुभ ॥

स्वाति श्लेषा रोद्रपूर्वात्रयेषु प्राक्ने भोमेषु  
र्यंजसूर्य वारे ॥ नन्दारिक्ता स्वव रोगस्य  
वाप्तिर्नृत्युर्ज्ञेयः प्रां करो राक्षितापि ॥ ३ ॥

॥ टीका ॥

स्वाति श्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा रोस शनि रवि वा  
र नन्द तिथि १। ६। ११ रिक्ता ४। ६। १४ इनमें तो रोग

प्रकरण	पृष्टि	प्रकरण	पृष्टि	प्रकरण	पृष्टि
संवत्सरनामानि	१	ग्रहोंके जाति ...	१३	मिश्र नक्षत्र ...	२१
संवत्सर फल ...	२	ग्रहोंके वर्ण ...	१३	अथ नष्टवस्तु प्रा	
संवत्सरोंके स्वामी	२	रविवारादिकर्मजा.	१३	प्ति प्रथममाह ...	२१
भेद कहते हैं ...	३	सोमवारके कर्म	१३	नक्षत्र परत्व प्रथम	२२
अन्य मतेतु ...	३	भौमवारके ...	१४	अद्यादि नक्षत्र सं.	२२
ऋतुअयनप्रकार	३	बुधके ...	१४	नक्षत्र संख्या ...	२३
अयनमध्ये शुभाशुभ	४	गुरुके ...	१४	नक्षत्रकी आकृ	
संज्ञाति परत्व ऋतुक	४	शुक्रके ...	१४	ति स्वरूप ...	२४
मास परत्व ऋतु ...	५	शनिवारके ...	१५	इत्येवमश्चादिव	
मास परिज्ञान ...	५	ग्रहोंके अधिदेवता	१५	चक्र रूपम् ...	२४
मासनाम ...	५	काल परिणाम ...	१५	अथ नवीन वस्त्र	
मास परत्व सूर्यके ना	६	वार दोष ...	१६	धारणम् ...	२६
मास परत्व विद्युके ना	६	वार कृत्य ...	१६	मोती सोना मणिर	
मास परत्व देवीके ना	७	वार परत्व तैल ...	१६	ता वस्त्र धारण ...	२६
वार परत्व मास फल	७	नक्षत्र ज्ञान ...	१७	मद्यारंभ करण ...	२७
पक्ष फल ...	८	शुभाशुभ नक्षत्र ...	१७	अथ औषध ग्रहण	
अधिक मास ...	८	नक्षत्रोंके स्वामी	१८	नक्षत्र ...	२७
क्षय मास ...	८	अधोमुख नक्षत्रोंके	१८	पुंसवन नक्षत्र	२७
तिथि प्रकरण ...	८	तिर्यमुख नक्षत्र ...	१८	कारण वेधः ...	२७
तिथि ज्ञान ...	८	ऊर्ध्वमुख नक्षत्र	१८	अन्न प्राशन ...	२८
तिथि कर्म फल ...	८	ध्रुवस्थिर नक्षत्र	२०	समश्रु कर्म सुव.	२८
तिथियोंके स्वामी	१०	मृदु नक्षत्र ...	२०	दंत बंधन ...	२८
तिथि संज्ञा ...	१०	लघु संज्ञक ...	२०	मौंजी बंधन ...	३०
तिथि वर्जितानि	११	तीक्ष्ण नक्षत्र ...	२०	विवाह नक्षत्र ...	३०
तिथियोंके कृत्य ...	११	चर नक्षत्र ...	२१	अग्नि होत्र ग्रहण	
आदिपणके स्वामी	१२	उग्र नक्षत्र ...	२१	करना ...	३०

को स्नान करावना शुभ है ॥ १ ॥

लग्ने चरे सूर्य कुजे ज्य वारे रिक्ता तिथौ  
चंद्र बले च होने ॥ केन्द्र त्रिकोणार्थ गते च  
पापे स्नान हितं रोग विमुक्तकानाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ चर लग्न में मेष कर्क तुल मकर रवि भौम गुरु ये  
वार हों हीन बल चंद्रमा हो केन्द्र में १।४।७।९० त्रिकोण में ८  
।५ अर्थ २ दूसरे इनमें पापग्रह हाये तो रोगी को स्नान क  
रावना शुभ है ॥ १ ॥

लता औषधी वृक्ष लगाना

सावित्र तिष्याश्विनि वारुणानिमूलं वि  
शाखा च मृदु ध्रुवाणि ॥ लतोषधी पादपरो  
पाणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य अश्विनी शतभिषा मूल विशाखा और मृदु  
ध्रुव संज्ञक इन नक्षत्रों में लता औषधी पादप लगानी शुभ है  
हल चलाने के न.

मृदु ध्रुव क्षिप्र चरेषु मूले मघा विशाखा  
सहितेषु मेषु ॥ हल प्रवाहं प्रथमं विद  
धान्नी रोग मुष्कान्वित सौरभयै ॥ १ ॥

टीका ॥ मृदु ध्रुव क्षिप्र चर संज्ञक नक्षत्रों में और मघा वि  
शाखा मूल इन सहित नक्षत्रों बलवान् बलन करके प्रथम  
हल चलावना शुभ कहा है ॥ १ ॥

बीज बोवना

हस्ताश्विपुष्योत्तर रोहिणीषु चित्रानुराधा  
शुक्राश्वतीषु ॥ स्वाति धनिष्ठा मघा सु मू  
ले बीजोत्पि रूत्कष्ट फल प्रतिष्ठाः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तर रोहिणी चित्रा अनुराधा  
शुक्राश्वती स्वाति धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रों में बीज बोवना शुभ है



यह वर्जित है ॥ १ ॥

शक्रवासव करेषु विशाखा पुष्यवारुण  
पुनर्वसुभेषु ॥ अश्वि पूषभयुतेषु विधेयो  
विक्रयत्रयविधिः सुरभीणाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु  
अश्विनी रेवती इननक्षत्रोंमें गायबेचना खरीदना शुभ है ॥ १ ॥

### राज्याभिषेक

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैषावेषु ति  
स्पृत्तरासुच ॥ रेवतीमृगशिराश्विनी  
पुचक्ष्माभृतांसमभिषेकदृष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीर्था उत्तरा रेव  
ती मृगशिर अश्विनी इनमें राजा को गद्दी पर बैदना अभिषेक  
करना शुभ है ॥ १ ॥

### राजा का दर्शन

सौम्याश्वि तिष्यश्रवणश्रविष्ठाहस्तध्रुव  
त्वाष्ट्रचपूषभानि ॥ मित्रेण युक्तानि जश्च  
राणां विलोकनेभानि शुभप्रदानि ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव राण  
चित्रा रेवती अनुराधा इनमें राजा का दर्शन करना शुभ है ॥ १ ॥

### दूजके चंद्रमा का फल

रौद्राहियाम्या निलवारुणेन्द्रान्याहुर्जघन्या  
नितथा वृहति ॥ ध्रुवद्विदेवादितिभानि नूनंस  
मानि शेषाणि पुनर्मुनीन्देः ॥ १ ॥ वृहत्सुधा  
न्यं कुरुते समर्धे जघन्यधिष्यमिभ्युदितो म  
हर्धः ॥ समेषु धिष्ययेषु समं हि मां शुर्वदति  
सन्दिग्धमिदम् महान्तः ॥ २ ॥ ० ० ॥

टीका ॥ श्लेषाभरणी स्वाति शतभिषा ज्येष्ठा यह

टीका ॥ मंगल के दिन धन करण करके न ले बुधको न दे धन  
काज् को संक्रांति को रविवार को भराणी में करण न करे कभी ॥ १

चूल्हा पूजन न-

हस्त पुष्यो नुराधा च वायु विष्णु रवेर्दिनम्  
रिक्ता षष्ठ्याष्टमी त्वाज्या चूल्हा पूजन मिष्यते

टीका ॥ हस्त पुष्य अनुशुभा स्वांति श्रवण रविवार इनमें चूल्हा को पूजे रिक्त छठ अष्टमी इनको छोड़ के शुभ है ॥ १ ॥

मार्जनी अर्थात् बुहारी का

अश्विनी मृग पुष्येषु अनुराधा उत्तरात्रये ॥

मार्जनी बंधनं कुर्याच्छ्रमा वारे शुभे तिथौ १

टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य अनुराधा तीनों उत्तरा शुभ वार  
शुभ तिथि में बुहारी का बांधना शुभ है ॥ १ ॥

काष्ठ स्थापनम्-

सूर्यक्षीट्प्रभैरधस्थलगतैः पाक्षोरसैः

संयुतः शीर्षैर्युग्मसितैः सवस्यदहनमध्ये

युगैः सर्पभीः ॥ प्रागाग्रादिषु केदुर्भैः स्वसु

हृदां स्यात्संगमोरोगभीः काथाद्वैः करण

सुखं निगदितं काष्ठादि संस्थापनम् ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

सूर्य के नक्षत्र से लेके छः नक्षत्र अधस्थल के जानिये दु  
न में रख सहित पाक होय ॥ चार नक्षत्र सिरके हैं तिनमें जो  
काष्ठ संग्रह करे तो मुर्दे के जलाने में जाय है ॥ और बीच के  
चार नक्षत्र में जो काष्ठ स्थापन करे तो सुहृदों का संग होय  
और दक्षिण के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो रोग और  
भय होय ॥ पश्चिम के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो  
काथादिक उ० ॥ उत्तर के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे  
तो मुख में व्यंजन में लगे ॥ १ ॥

नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र ताईं गिने होंनों की संख्या को जो  
इ देना सत्ताईस का भाग देना वाकी रहे सो योग जानना ॥ १ ॥

### योगों के नाम

विष्कम्भः प्रीति आयुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा  
। अतिगंड सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च । गंडो  
वृद्धि ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा । वज्रसि  
द्धिव्यतीपातो वर्मानः परिघः शिवः । सिद्धिः सा  
ध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रो वैधृतिः क्रमात् । सप्तविं  
शति योगास्तुः कुर्युर्नामसमंफलम् ॥ १ ॥

टीका ॥ विष्कम्भ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५  
अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२  
व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वर्मान  
१८ परिघ १९ शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शु  
क्ल २४ ब्रह्म २५ ऐन्द्र २६ वैधृति २७ ये जो सत्ताईस योग  
हैं सो नाम के समान फल को करें हैं ॥ १ ॥

### योगों में घटिका वर्जनीया

विरुद्धसंज्ञाद्भये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पा  
दग्राह्य ॥ सर्वे धृतिस्तु व्यतीपातनासा सर्वोप्यनिष्टः  
परिघस्य चाईम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रव्या  
घातसंज्ञेन वपंच शूले ॥ गंडेति गंडे च षंडे वना  
ड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ विरुद्ध संज्ञक योगों का ग्राहिक चतुर्थोऽंश शुभ कार्य में वर्जित  
त है और व्यतीपात वैधृति से संपूर्ण वर्जित है और परिघ का पूर्वोद्ध व  
र्जित है और विष्कम्भ की ३ घड़ी वज्र की ४ घड़ी व्याघात की ५ गंड की  
६ अतिगंड की ६ शूल की १५ ये शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥ २ ॥

### करण जानने की रीति

गततिथयो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः

न सिद्धिः ॥ कृतं च विद्यां विषारिघाता  
 दिषु नवसिद्धिः ॥ मंत्रौषधानिशकुनौतुसपौ  
 थिकानि ॥ गोविप्र राज्यपितृकर्मचतुर्थेति  
 सौभाग्यदासुराधतिप्रवकर्मनागेकिस्त-  
 घ्ननाग्निनिखिलं शुभकर्मकार्यम् ॥ ३॥

टी० ॥ चव करण में पौष्टिक शुभकर्म करे - बालव में ब्राह्मनोहित  
 कर्मदानादिक करे - कोलव में उन्माद पूर्वकर्मिच कर्म करे - तैत  
 ल में विवाहादि शुभमंगल कर्म करे - गर करण में वीजवोदवाहल  
 चलानाये कर्म करे - चनिज में देवप्रतियादुकान के व्यापार के  
 कर्म करे । विष्णि में शुभकर्मनकरना जादू घात क्रूरकर्मकरना सि  
 द्दहै - शकुन में मंत्र औषधी ग्रह पूजादिक कर्म करना - चतु-  
 र्द में गो ब्राह्मण पितृ संबंधी कर्म करे - नाग में सौभाग्यकर्मयुद्ध  
 में जाना धीरता विद्याभ्यास ये कर्म करना ॥ ३॥

भद्राविचार तिथिमान

कृषोग्निदिशयो रुर्ध्वसप्तमीभूतयोरथः ॥

शुक्लेवेदेषायो रुर्ध्वभद्रा प्राग्वस्तपूर्णीयोः ॥

टी० ॥ कृषा पक्ष में तीज और दशमी को उत्तरदलकी भद्रा जानिये ॥  
 और सप्तमी चौदश को पूर्वदलकी भद्रा जानिये - शुक्ल पक्ष में १४  
 १९ को परदलकी भद्रा जानिये - और शुक्ल पक्ष में अष्टमी पूर्णों  
 को पूर्वदलकी भद्रा जानिये ॥ १॥

मनुवस्तुनि तिथिषु युगदश शिवगुरा

संख्यास्ततिथिषु पूर्वात्याः ॥ आयातिविधि

रेषा पृष्टे शुभदा पुरस्त्वशुभाः ॥ १॥ ५ ॥

टी० ॥ चौदश अष्टमी सप्तमी पूर्णौ चौदशमी एकादशी तीज  
 इन तिथियों में भद्रा पूर्वदल परदल की जानिये - भद्राकी पूंछ  
 शुभहै और सुख भद्रा का अशुभहै ॥ १॥

शास्त्रार्थ

पिविधिः कन्यायातौ लिसंस्थे धनुमिधुनम्  
 तेनागलोके निवासः ॥ कुंभे सिंहे वृषे वा मकर  
 रभुषगते राजते मृत्यु लोके भद्रा चंद्रप्रभावाद्दि  
 यकरतनया नो शुभालोकिके स्यात् ॥ २ ॥

टी० ॥ मेष मकर वृषकर्क इनके चंद्रमामें स्वर्ग में भद्रा का वासा-  
 कन्या मिथुन तुला धनु इनमें पाताल में वासा - कुंभ शील सिं  
 ह वृश्चिक इनमें मृत्यु लोक में वासा भद्रा का जानिये ॥ २ ॥

**स्थान भद्राफलं**

स्वर्ग भद्रा भवेत्सौरव्यं पाताले च धनागमः ॥

मृत्यु लोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदानिह १

टीका ॥ स्वर्ग की भद्रा में कार्य शुभ है - पाताल की भद्रा में धन का धा  
 गमन होय है - मृत्यु लोक की भद्रा कार्य का नाश करे है ॥ १ ॥

**वारानुसार भद्रा कानाम**

सोम शुक्रे च कल्याणी शनै चैव तु वृश्चिकी

गुरो पुण्यवती श्रेया चान्यवारेषु भद्रका ॥ १

टी० ॥ सोम शुक्र का भद्रा कल्याणी नाथ कहते हैं शनिवार को वृ-  
 श्चिक नाम कहावे - वृहस्पतिवार को पुण्यवती जानिये - रवि बु  
 ध मंगल वार की भद्रा नाम कहिये ॥ १ ॥

हेत्येन्दैः समरे मरेषु विजिते वीशः कुधाट्ट

खवान् स्वकायात् किल निर्गतारवरमुखीलां

गालिनी चक्यात् ॥ विधिः सप्तभुजा मृगेन्द्र

गलकाक्षामोहरी प्रेतगा देत्यधी मुदितैः सु

रैस्तु कररा प्राते नियक्ता तसा ॥ १ ॥ ५ ॥

ई	१५	४	११	७	१४	३०	१०	विष्ठी	यम	सर्वकर्मवर्जित
स्थिर	०	०	०	०	०	०	०	शत्रु	काल	श्लोषध
स्थिर	०	०	०	१	०	०	३०	नाग	सर्प	युद्धसौभाग्य

**वारानुसारसंक्रांतिनाम**

घोरा रवौ ध्वांक्षी मृतद्युनो च संक्रांतिवारि च  
 महोदरी स्यात् ॥ महाकिनी चैव नंदो च  
 मिश्रा भृगो राक्षसि चार्क पुत्रे ॥ १ ॥ ५ ॥ १ ॥

टीका ॥ रविवार को घोरा नाम संक्रांति - सोमवार को ध्वांक्षी नाम -  
 मंगल को महोदरी - बुध को महाकिनी - वृहस्पति को नंदा नाम  
 शुक को मिश्रा नाम - शनिश्चर को राक्षसी नाम जानिये ॥ १ ॥

**नक्षत्रोंके अनुसार सं-**

उग्रक्षिप्रचरे भैत्र ध्रुव मिश्रा रव्यदारु सौः ॥  
 चरक्षैः संक्रांतिरकेस्य घोराद्याः क्रमशो भवेत्

टीका ॥ उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में घोरा नाम क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में ध्वां  
 क्षी नाम जानिये - चर संज्ञक नक्षत्रों में महोदरी नाम मि  
 त्र संज्ञक नक्षत्रों में महाकिनी नाम - ध्रुव संज्ञक नक्षत्र  
 में नंदा नाम - मिश्र संज्ञक नक्षत्र में मिश्रा नाम जानिये - दारु  
 संज्ञक नक्षत्र में राक्षसी नाम जानिये ॥ १ ॥

**संक्रांतिफलं**

ध्वांक्षी वैश्यान् सुखयति महोदर्यलं चौरसार्ध  
 न घोराश्रानथ नर पत्नी नैव मन्दाकिनी च नंदा  
 रथ्या च हिजवरगरान् मिश्रकारव्यापश्रुचो  
 डालानां प्रकृति मखिला राक्षसी संक्रांति च ॥ २ ॥

टीका ॥ ध्वांक्षी नाम वैश्यों को सुख देय - महोदरी चोरों को  
 सुख देय - घोरा श्रद्धन को सुख देय - महाकिनी राजाओं को  
 सुख देय - नंदा ब्राह्मणों को सुख देय - मिश्रा नामी वृद्ध

॥ चतुष्यदत्तनुसारसंक्रांतिस्थिति।  
 चतुष्यदेतैतिलनागयोश्चसुप्रोख्यःसंक्र  
 मरां करोति॥ विद्याद्वारयेचगराह्वयेच।  
 सवालवारयेस्थितरवविद्ये॥ १॥ ६॥

टी०॥ चतुष्यद तैतिलनाग इन में सुप्र संक्रांति-गरल वशिज विधि  
 वच वालव इनमें निविष्ट जानिये -कोलव किंस्तुघ्न शकुन इन  
 में ऊभी संक्रांति जानिये ॥१॥ फलं

किंस्तुघ्ननामि प्राकुने वशि। कोलवारयेचो  
 ध्वंस्थितस्परवत्सु संक्रमरां रवे स्यात् ॥ ५  
 धान्यार्घविष्टेषु भवेत्क्रमशस्वनिष्ठो म  
 ध्येष्टतेति मुनयः प्रवदन्ति पूर्वे ॥ २॥ ६॥

टी०॥ धान्य महर्ष १५ सुहृती - समर्ष ४५ सुहृती - सम ३० सुहृती -  
 इसरीति से फल जानिये ॥ २॥ वाहनं

सिंहो व्याघ्रो वराहश्च गर्दभः कंजरस्तथा ॥  
 महिषी घोडकश्वाच छागो ह्यभकुक्कुर्यो ॥ ३  
 गजो वाजिर्वृषो मेषः खरोद्यो केसरी क्रमात्  
 शार्दूलमहिषी व्याघ्रवानराश्च वदादितः ॥ ४॥

टी०॥ वच में सिंह - वालव में व्याघ्र - कोलव में वराह - तैतिल में गर्द  
 भ-गरल में हस्ती - वशिज में महिषी - विष्टी में घोडा - शकुन में  
 कुत्ता - चतुष्यद में भैडा - नाग में बैल - किंस्तुघ्न में कुक्कुर - ॥ उप  
 वाहनं ॥ वच में गज - वालव में अश्व - कोलव में बैल - तैतिल में भैडा -  
 गरल में गर्दभ - वशिज में ऊट - विष्टी में सिंह - शकुन में शार्दूल -  
 चतुष्यद में महिष - नाग में व्याघ्र - किंस्तुघ्न में वानर ॥ संक्रांति वाहन  
 फलं ॥ वच वालव में भय होता है - कोलव चतुष्यद में पीडा होती  
 है - तैतिल विष्टी में सुमिस्त होता है - गरल में लक्ष्मी प्राप्ति होय  
 नाम शकुन में स्थिरता - वशिज में क्लेश जानना चाहिये ॥

किंस्तुघ्न में मृत्यु जाचना ॥ ४॥

चित्रान्नगुडमध्वाज्यं शर्करा तु ववा दितः ॥

री ॥ ववमें अन्न · चालव में वायस · कौलव में भस्य पदार्थ तैतल  
में पकान्न · गरल में दुग्ध · चरिाज में दही · विषी में चित्रान्न · शकुन  
में गुड चतुष्यद में सहत नाग में चत · किंस्तुघ्न में शर्करा ॥१॥

संक्रांतिके गंधलेपने

कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं मृत्तिका तथा

गोरोचन मलक्तुश्च हरिद्रा च तथा जनम्

सिंदूरम गुरुश्चैव कर्पूरश्च ववा दितः ॥२॥

री ॥ ववमें कस्तूरी · चालव में कुंकुम · कौलव में चंदन · तैतिल में  
माटी · गरल में गोरोचन · चरिाज में महावर · विषी में हलसी · शकु  
न में सुरमा · चतुष्यद में सिंदूर · नाग में अगर · किंस्तुघ्न में कर्पूर ॥



ब्राह्मे दित्ये द्विदेवे भवति शर कृतादुत्तरात्रीणि चरुसं  
 वारावेदेः समर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योम रामयोः ॥  
 मूर्तो पंच दशे याते दुर्भिक्षश्च प्रजायते ॥ १ ॥

दिका ॥ आद्या स्वाति भरणी शतभिषा श्लेषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में  
 जो संक्रांति अर्के तो १५ मुहूर्ती संक्रांति दुर्भिक्ष करने वाली जा  
 निये - पुष्य हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनु  
 राधा मूल ज्येष्ठा धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में संक्रां  
 ति अर्के तो ३० मुहूर्ती जानिये साधारण फलके देने वाली है -  
 रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इन में संक्रांति अर्के तो  
 ४५ मुहूर्ती जानिये - ये सुभिक्ष कार्य देने वाली होती है ॥ १ ॥

करण	चव	वाल	कील	दौतल	गरल	वरिण	विशी	शकु	चतु	नाग	किंस्तु
स्थित	भिव	भि	ऊ	सु	नि	नि	नि	ऊ	सु	सु	ऊभी
फल	मध्य	मध्य	मदि	सम	महंगा	महंगा	सम	महंगा	सम	सम	महंगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	बाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	घोडा	कुमा	मेढा	बैल	मुरगा
उपवा	हाथी	घोडा	बैल	मेढा	गधा	ऊँर	सिंह	शार्दू	महि	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुख	लक्ष्मी	लेश	सुभि	स्थैर्य	पीडा	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	श्याम	चित्र	कम	नग्न	धनवन
आयु	पुष्पुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	केतु	पाश	खड्ग	शंखु	बारा
पात्र	सोना	रूपा	ताता	कांसा	लोहा	ठीकरा	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठपा
भक्ष्य	अन्न	पावस	भक्ष्य	पक्का	पय	रही	चित्रा	शुड	मध	घृत	खंड
लेपन	कल	संकुम	बंदन	मारी	गोरेच	अलक	हल्दी	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देवता	भूत	सर्प	पशु	मृग	विशाल	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	शिका	अंत्यज
पुष्य	पुत्राग	जानी	चकुल	केनकी	बैल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जया
भक्ष्य	नसुर	कंकण	भोती	मृगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कोडी	नीलक	परन	सुवर्ण
कंसुकी	विचित्र	परा	हरित	गजपत्र	सीप	पाटल	नील	कृष्ण	अंतन	वल्क	पांडुर
वयं	बाला	कुमा	गताल	युवा	श्रीदा	प्रगल्भ	वृद्ध	वंध्या	अव	पुत्रवती	सुवासनी

प्रकरण	पृष्टि	प्रकरण	पृष्टि	प्रकरण	पृष्टि
कूप चक्रं ...	१८५	श्रंक प्रथम ...	१८१	शनि राहु ...	१८६
अथ वाग लगाने		रोगी प्रथम ...	१८१	केतु ...	
का मूर्त्त ...	१८५	केवल लग्न दोष	१८२	लग्न शुद्धिमें पंच	
अथ सिक्का ढालने		मेघ का प्रथम ...	१८२	क ज्ञान ...	२००
का मूर्त्त ...	१८६	जल लग्नम् ...	१८३	वारोंमें पंचक व.	२००
अथ प्रथम प्रकरण	१८६	स्त्रीनपुसकनक्ष		दिन रात्रि मानं ...	२००
तिथि आदि प्रयुक्त प्र	१८६	त्र जानना ...	१८३	दिन कितना चढा	
अथ अपनी छाया		अथ सूर्य चंद्र नक्ष		है जानना ...	२०१
से प्रथम ...	१८६	त्र की संज्ञा ...	१८३	रात्रि कितनी गर्द	
दूसरा प्रकार ...	१८७	धान्य प्रथम ...	१८४	यह जानने की	
कार्यो काय प्रथम	१८८	पशुविषय प्रश्न ...	१८४	रीति ...	२०१
श्रंक प्रश्न ...	१८८	राज्यभंगादि योग	१८५	अंतरंगवहिरंग	
दूसरा मत ...	१८८	सूर्य चंद्र के परिवे		नक्षत्र ...	२०२
अथ धारनक्षत्रयत्न		षमंडलका फल ...	१८५	सूति का स्तानं ...	२०२
पंथा प्रश्न ...	१८८	उत्पातों का फल ...	१८५	अथ अस्यामेव	
नष्ट वस्तु प्रथम	१८९	ग्रह चक्र प्रकरण ...	१८५	दिग्विषे वायु	
गर्भणी प्रथम ...	१९०	सूर्य चंद्र ...	१८८	संचार फलं ...	२०२
मुष्टिक प्रथम ...	१९०	भौमकोष्ठक बुध	१८८	अथ अस्या पूर्णि	
लग्न से मन चिंत्ति		गुरु ...	१८८	माया हुतासनी	
प्रश्न कहना ...	१९०	शुक्र ...	१८८	फलम् ...	२०२

इति सूचीपत्रज्योतिषार समाप्तः शुभम्



टीका ॥ जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर हो  
 यजिसके जन्म मास में संक्रांतिका संभव होयती क्लेश कहना - और  
 जन्म दिन में संक्रांति पड़े तो धन का नाश होय ॥ १॥

**संक्रांति का स्वरूप**

**षष्ठियोजन विस्तीर्णा संक्रांतिः पुरुषाकृतिः**

**एकवक्रानवभुजालंबोष्ठी दीर्घनासिका १**

**पृष्ठा ललाकाभ्रमंत्येव गृहीत्वा खपरंकरे ।**

**एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः २**

टीका ॥ संक्रांति का शरीर ६० योजन कालंवा है और पुरुष की स-  
 मान चौड़ा एक मुख है और नो भुजा है ओठ नासिका लंबी है और  
 खपर हाथ में लिये है और सब लोकों में गिरे है ॥ १॥ २॥

(संक्रांति का चंद्रमा से फल कहें)

**मेषालिकर्के च तथैव रक्तं चापि च मीने च तुलं च**

**पीतं ॥ चंद्रो मेषे स्त्री मिथुने च श्वेतं कुले त्वनक्षत्रे च**

**घटे च सिंहे ॥ १॥ रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेतं चैव सुखं**

**शुभं ॥ पीते श्रीस्तुतया प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः २**

टीका ॥ मेष वृश्चिक कर्क इन राशिन के चंद्रमा में संक्रांतिका प्रवेश  
 होय तो रक्त वर्ण जानिये - रक्त वर्ण दुःख दायक है ॥ और धन मीन  
 तुला के चंद्रमा प्रवेश होय संक्रांति तो पीत वर्ण जानिये - सो पीत  
 वर्ण लक्ष्मी देता है । और वृष कन्या मिथुन के चंद्रमा में संक्रांति हो  
 यती श्वेत वर्ण जानिये - सो श्वेत वर्ण सुख सुभ देता है ॥ और सिं  
 ह मकर कुंभ इनके चंद्रमा में संक्रांति होय तो काला वर्ण जानि  
 ये - सो काला वर्ण मृत्यु का दाता है ॥ १॥ २॥

**राशि अनुसार चंद्रफलं**

**यादृशेन हि मरिचि मभालिना संक्रमो भवति**

**तिग्म रोचिषा ॥ तादृशं फलं भवति बुधान्तर ६**

**साध्वसाध्वपिवशेन शीतलो ॥ १॥ ६॥**

उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छटी दशमी राशि पर  
 होय तो शुभ जानिये दूसरा सातवां नवमां मध्यम है पहला  
 चौथा पांचवां आठवां ग्यारहवां बारहवां ये नष्ट हैं ॥ १॥

**दसरापक्ष**

ग्रासात्तृतीयोऽधम गश्चतुर्थस्तथापसंस्थः

शुभदः स्वराशेः ॥ ग्रासाद्द्विः पंचनवतुं म

ध्यमास्तनोधमोक्ताश्चतुर्थेश्चशेषाः ॥ १

टीका ॥ जिस राशि पर सूर्य ग्रहण होय उससे अपना राशि नक मि  
 नेत्री १।८।४।१२ ये उत्तम हैं और ५।८।६ ये मध्यम हैं और १२।  
 ७।१०।१२ ये अधम हैं जैसी राशि होय तेसी फल होता है ॥ १

**ऋतुधर्म प्रकरण**

निधिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रंचचतुर्गुणम्

वारः षष्ठगुणो ज्ञेया मासश्चाष्टगुणः स्मृतः

वस्त्रं शतगुणं विद्यादर्शनंचनतौधिकम्

आर्तवै प्रथमे चैत्रे वैधव्यं जायते धुवम् ॥

टीका ॥ निधिका एक गुना फल नक्षत्र का ४ चौगुना वार का ६

गुना मास का आठ गुना ८ वस्त्र का सौ १०० गुणा अधिक

फल जो ऋतु पहले चैत्र में होय तो वैधव्य करे अच्छे में अच्छे

फल बुरे में बुरा फल जानिये ॥ २॥

वैशाखे धन वृद्धि स्याज्ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत्

आषाढे मृत्यवत्सा च श्रावरो धनसंयुता १

भाद्रे च दुर्भगा नारी आश्विने धनधान्यभाक्

कार्तिके निर्धना नारी मार्गशीर्षे बहु प्रजा ॥ २

पौषे च पुंश्रली नारी माघे पुत्रवती भवेत् ॥

फाल्गुणे पुत्र सपत्ना ज्ञेयं मास फलं बुधैः ३

टीका ॥ चैत्र में रजोवती होय तो विधवा जानिये - वैशाख में रजोद

र्शन होय तो धनवती - ज्येष्ठ में होय तो रोगवती - आषाढ में मृत्यु होय

में मृतप्रजा जंगल में आत्म घातनी बुध में कन्या संतति होय दृहस्पति  
में पुत्र प्राप्ति होय शुक्र वार में कन्या शनि में व्यभि चारिणी ॥ १॥

नक्षत्रफलं

अश्विन्यां शुभानारी भरणीयां विधवा भवेत् ॥ कृत्तिका  
यां च बंध्यास्याद्गोहिरायां चारुभाषिणी ॥ १॥ मृगशिरा  
रिद्रुपयुक्ता का चार्द्रायां क्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसु पुत्र  
वती पुष्य पुत्र धनेश्वरी ॥ २॥ अश्लेषायां भवेद्बंध्यामया  
यां चार्ध संयुता ॥ पूर्वायां चार्ध युक्ता हि चोत्तरायां सतीत  
द्या ॥ ३॥ हस्त पुत्र धने युक्ता चित्रायां मनु चारिणी ॥ स्वा  
त्याय गर्भावयवा विशारवायां तु निष्ठुरा ॥ ४॥ मेष च ॥  
दुर्भागानारी ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ॥ मूलपतिव्रता ॥  
ध्वी पूर्वा सोभाग्य भोधिनी ॥ ५॥ उत्तराधवती प्रोक्ता म  
वरो भाग्य संपदा ॥ धनिष्ठायां शुभानारी प्रतिभद्रान्वि  
ता बुधैः ॥ ६॥ पुंभे चोक्ता कामिनी तु उभे लक्ष्मी युता  
शुभा ॥ रेवत्यां पति रिक्ता तु श्रेयं भानां फलं बुधैः ॥ ७॥

शिका ॥ अश्विनी में प्रथम ऋतु स्नान होयतो शुभ है भरणी में विध  
वा कृत्तिका में बंध्या रोहिणी में प्रिय भाषिणी मृगशिर में दरिद्री  
आर्द्रा में क्रोधनी पुनर्वसु में पुत्रवती पुष्य में पुत्रधन श्लेषा में  
वाग्म मया में धन पूर्वा में अर्थवती उत्तरा में पतिव्रता हस्त में पुत्र  
वती धनवती चित्रा में मन की दृच्छा से चलने वाली स्वाति में अन्ध  
गर्भवती विशारवा में कठोर चित्रा और अतुराधामें दुर्भागिनी -  
ज्येष्ठा में विधवा मूल में पतिव्रता पूर्वा में सोभाग्यवती उत्तराषाढ  
में लक्ष्मीवान् अवरा में भाग्यवती धनिष्ठा में शुभ शतभिषा में  
शुभ पूर्वाभाद्र में उत्तम उत्तरा भाद्र में लक्ष्मी रेवती में पतिरहित ७

योगफलं

आद्यतौ विधवा नारी विष्कुंभे चरजस्वला ॥ स्त्रि  
ह प्रीत्या तु हं पत्यो राखुष्मांस्तु धन प्रदः ॥ सोभागे

में पुत्र की प्राप्ति - कोलव में वैश्या - तैत्तिल में प्रिय भाविराणी - ग  
रुल में गुण संपन्न होय - वशिज में पुत्रिणी - वृद्धि में मृग वन्ता -  
प्रकन में कामातुरा - चतुष्पद में शुभगा - नाग में पुत्र वती -  
किंस्तुत्र में व्यभिचारिणी ॥२॥

### राशिफल

व्यभिचारितु मेवे स्याद्दृष मे सुख भोगिनी ॥ मियु  
ने धन युक्ता कर्कट दुःखिता बुधैः ॥ सिंह पुत्र  
वती नारी कन्यायां मानिनी शुभा ॥ तुले विचल  
ण नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी ॥ धने पतिव्रता ज्ञे  
या मास ही नाचन कके ॥ कुंभे धन वती शिवायी  
ने च चपला बुधैः ॥१॥

टीका ॥ मेष राशि में ऋतु वती होय तो व्यभिचारिणी - वृष में सुख  
भोगिनी - मियुन में धन युक्ता - कर्क में दुखी - सिंह में पुत्रवती -  
कन्या में अभिजानी - तुला में कुचालनी - वृश्चिक में नारिणी - धन  
में पतिव्रता यकर में कशांगी - कुंभ में धनवती - मीन में चपला ॥२॥

### होराफल

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चंद्रे होरे पतिव्रता ॥  
कुजे होरे तु दो भाग्ये बुधे होरे तु पुत्रिणी १  
जीवे सर्व समृद्धि स्याद्भृगो सौभाग्य मेव च ॥  
श्रानो सर्व विनाशाय होरे शस्ये फलं बुधैः ॥२॥

टीका ॥ रवि की होरा में प्रथम रजो दर्शन होय तो रोगरोगी जानिये -  
चंद्र की में पतिव्रता मंगल की में दुर्भगा होय - बुध की में पुत्रिणी -  
गुरु की सिद्ध दार्द शुक्र की सौभाग्य शनि की सर्व नाशक ॥२॥

### लग्नफल

मेष लग्ने हरिद्रा च वृष मे धन संयुता ॥ कामिनी  
मियुने लग्ने कर्कटे पति नाशिनी ॥ सिंह पुत्र प्रसू  
ता च पति युक्ता च कन्यके ॥ तुले वैवांधता दायी वृ-

पूर्वरात्रे तथा वंध्या दुर्भगा सर्वसंधिषु ॥

टीका ॥ जिस स्त्री को प्रथम रजो दर्शन प्रातः काल होय तो शुभगा जानिये - मध्याह्न में निर्धना जानिये - तीसरे पहर में शुभगा जानिये - संध्या को होय तो सर्व भोगवती - और रोजों संधि में होय तो वे श्या के तुल्य - आधी रात्र में होय तो विधवा - पहली रात्रि में होय तो वांछ - सर्व संधि में होय तो दुर्भागिनी जानिये ॥२॥

पहिरे लुचे वस्त्रों का फल

शुभगा म्वेत वस्त्राच रोगिणी रक्त वस्त्र का ॥

नीलांबर धरा नारी विधवा पुष्प वंतिका ॥

भोगिनी पीत वस्त्राच भिष्य वस्त्र वरप्रिया ॥

सहस्रास्यान्सूक्ष्म वस्त्राच दुःखवस्थापति व्रता ॥

दुर्भगा जीरा वस्त्राच शुभगामध्य बासला ॥

पीत वस्त्रा शुभानारी मलिनी मलिना भवेत्

टीका ॥ प्रथम रजो दर्शन के समय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तो शुभ लाल पहिरे होय तो रोगिनी - नीले वस्त्र पहिरे होय तो विधवा - पीत वस्त्र पहिरे होय तो भोगवती - मिले रंग का वस्त्र होय तो प्रति प्रिया - सूक्ष्म वस्त्र होय तो लुशांशी - मोटा वस्त्र होय तो पति व्रता जीरा वस्त्र होय तो दुर्भागिनी - मध्यम वस्त्र पुत होय तो शुभगा - धुले वस्त्र पुत होय तो शुभ - भलीन वस्त्र पहने होय तो मलीज जानिये ॥२॥

गर्भाधानसुहृत्

ऋतेऽनु प्रथमे कार्ये पुनश्च ह्ये शुभे दिने ॥

मघा भूलो म्य पक्षांतं सुक्ता चंद्रे इले सति १

टीका ॥ प्रथम ऋतु दर्शन के समय पुरुष नक्षत्र और शुभदिन मघा भूल रेवती अमा वास्या शशीमा इत को क्रीडि कर गर्भाधान करना शुभ है ॥२॥

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्री रां रात्रयः षोडशस्मृताः

तासां माघास्तु न स्वस्तु निदिने कादशी च या १।

टी०॥ छठ अशमी पूर्णों मावस चौथ चौदश इन तिथियोंको छौड के शेष तिथि शुभ हैं और सोम गुरु शुक बुध ये वार निषेक में शुभ हैं

**नक्षत्र**

विष्णु प्रजेश रवि मित्र समीर पोषा भूलो  
 त्ररावरुण भानि निषेक कार्ये ॥ पूज्यानि  
 पुष्य वसु शीत करा श्चित्रा दिव्याश्च म  
 ध्यम फला विफलास्युरन्ये ॥१॥ ५५५

टीका ॥ अवरुण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाति रेवती मूल तीनों उत्तरा शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम हैं ॥ और पुष्य धनिष्ठा मृगशिर अश्विनी चित्रा पुनर्वसु ये मध्यम जानिये और शेष नक्षत्र अधम जानिये । वेधति संक्रांति महापात आदि दुष्ट योग आडू का अंत पूर्व दिवस जन्म नक्षत्र ये वर्जित हैं । और जिस लग्न में विषम स्थानी न वांश में उचित रहस्यति वा सूर्य चंद्रमा होंय तो पुत्र प्राप्ति होय और यही ग्रह सन राशि के होंय तो कन्या की प्राप्ति करे ॥१॥

**प्रथम गर्भिणी के पुंसव नादि संस्कार**

मूलादि चितये करे अवरुण के भाद्र हयाद्री चये  
 रेवत्यां मृग वंच के दिन करे भौमेन रिक्ता तिथो  
 नेत्रे मास्यथ वाग्नि मासि धनुषी स्त्री मीनयोश्च  
 स्थिरे लग्ने पुंसवनं तथैव शुभं सीमं कर्मायमं

टीका ॥ मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ हस्त अवरुण पूर्वाभाद्र पद उत्तरा भाद्र पद आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कुनिका रोहिणी मृगशिर और रवि भौम ये वार और रिक्ता तिथि ये वर्जनीय हैं गर्भाधान होने पर्यंत दूसरे अथवा तीसरे मास और कन्या धन मीन ये स्थिर लग्न ये पुंसवन कर्म को कहे हैं और इन्ही लग्नों में सीमंत कर्म करना अष्टम मास में वार फलम् ॥१॥

मृत्युश्च सौरेस्तनु हानिरिंद्रोः प्रजामृतिः पुंस



### गर्भिणीके धर्म

भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहणं वरोहणं ॥ नदीप्रतर  
 णं चैव प्राकटा रोहणं तथा ॥ उग्रौषधं तथा क्षारं भेषुनं  
 भारवाहनं ॥ कृते पुंसवने चैव गर्भिणी ॥ परिवर्जयेत् १  
 टीका ॥ पुंसवन कर्म करे पीछे गर्भिणी स्त्री को ऊंचे नीचे उच्चार  
 ना चढाना भाग कर चलना नदी तैरना गाढी पर बैठ कर चल  
 ना नीला औषधी तथा क्षार आदि खाना भेषुन करना बीजा  
 उठाना ये कर्म उचित नहीं हैं सो वर्जित हैं ॥ १ ॥

### गर्भिणीका प्रश्न

नामाक्षरात्रि त्रिगुराणि कृतानि तुरंग देशेति  
 थि मिश्रितानि ॥ आठौच भागं लभते च शे  
 वं समेच कन्या विषमेषु च ॥ २ ॥ ४

टीका ॥ गर्भिणी के नाम के अक्षर त्रिगुने करे तिसमें घेरा की ना  
 मके अक्षर और देशके अक्षर मिलावे और वर्तमान तिथि मि  
 लावे आठ का भाग दे शेष अंक वचे सम तो कन्या का जन्म और  
 विषम अंक वचे तो पुत्र उत्पन्न होय ॥ २ ॥

### प्रसूता के स्थान प्रवेशके नक्षत्र

रोहिणीयें द्व पौषो स्वाति वारुणा योरपि ॥ पुनर्वसौ पु  
 ष्य हस्त धनिष्ठा च त्ररासुच ॥ मेवेत्वाष्टे तथा श्विन्यां सु  
 तिका गार वेषुनं ॥ प्रसूति संभवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥

टीका ॥ रोहिणी मृगशिर देवती स्वाति शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त  
 धनिष्ठा तीनों उत्तरा अनुराधा चित्रा श्विनी यह नक्ष  
 त्र प्रसूति का भवन के प्रवेश में कहे हैं प्रसूति संभवके सत्र  
 यमें यह नक्षत्र विचार तत्काल प्रवेश करे ॥ २ ॥

### प्रसूति समयका प्रश्न

मीने मेघे खियो द्वे च तस्त्रो दृष कुंभयोः ॥ ५  
 तुला कन्यकयोः सप्त चारणाख्या धनकर्कयोः १

हूनकी मयरी यह गंडांत की है मिथि गंड था इन्का गंड ये विविध  
गंडांत जानिये यात्रा विवाहजन्म काल इनमें वर्जित है ॥२॥

**गंडांत शुभाशुभफल**

अश्विनी मघ मूलानां पूर्वाह्ने वाधते पिता ॥

पूर्वाह्ने प्राच्य पश्चाह्ने जन्मनी वाधते शिशोः २

सर्वेषां गंड जातानां परित्यागो विधीयते ३

वर्जयेद्दर्शनं शाबंतश्च यास्य भासिकं भवेत् ४

टीका ॥ अश्विनी मघ मूल इनके पूर्वाह्ने में जन्म होय तो पिता को  
अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इनके उत्तराह्ने में जन्म होय तो माता को  
अशुभ और गंडांत में जन्म होय तो बालक को त्याग करना  
यत्रा छ मास तक न देखना ॥२॥

**रुक्मचतुर्दशी जन्मफल**

रुक्मपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलं ॥ चतुर्दशी च

दुभागं कुर्यादशुभं स्मृतम् ॥ द्वितीये पितरं हन्ति तृती

ये मातरं तथा ॥ चतुर्थे मातुलं हन्ति पंचमे जंशनाशनं

षष्ठे च धनहानिः स्यात् ॥ आत्मानेवं शनाशनम् ॥ २ ॥

टीका ॥ रुक्मचतुर्दशी के छः खंड दशदश घडी के होते हैं पहले  
खंड में जन्म होय तो शुभ है दूसरे खंड में पिता को अशुभ तीस  
रे खंड में माता को चोथे में मामा को अशुभ पांचवे खंड में  
वंशनाशन छठे में धनहानि करे ॥२॥ २॥

**अमावास्या के जन्मफल**

शुनी चाल्यां प्रसूता अदासी भार्या पशुलथा ॥ भजा

अशुभिणी चैव पाकस्यापि श्रियं हरेत् ॥ कुह प्रसूतिरि

त्यर्थे सर्वदोषकरी स्यात् ॥ यास्य प्रसूतिरनेषां तस्यायुध

ननाशनं ॥ सर्वगंडं समस्तदोषस्तु प्रवलो भवेत् १

टीका ॥ चतुर्दशी युक्त अमावास्या की दासी जयवा भार्या गाय  
की भी घोड़ा भेसाजी इनमें प्रसूती होय तो इंद्रकी भी संपत्ति

फलेषुलभते राज्यशिराया मल्पजीवितं ॥

टीका ॥ मूल नक्षत्र की वृश्च कल्पना करते हैं तिस की ६० घरी इस भांति जानना - पहली ४ घरी मूल की इन में जन्म होय तो नाश करे दूसरी सात घड़ी स्तंभ की तिस में जन्म होय तो हानि करे - तीसरी १० घड़ी त्वचा की तिस में जन्म होय तो भ्राता को अशुभ है - चौथी ८ घड़ी शारदा की तिस में माता के अशुभ - पांचवीं ६ घड़ी पत्र की तिस में परिवार नाश करे - छठी ५ घड़ी पुष्य की तिस में राजा का मंत्री - सातवीं ६ घरी फल की तिस में राज्य प्राप्ति करे - आठवीं ११ घरी शिरा की तिस में बालक अत्यायु जानिये ऐसे ६० घरी का विचार जानिये ॥ ११ ॥

जन्म समय में मूल किस लोक में सो जानना ।

व्यादि सिंहेषु घटेच मूलेदि विस्थितं युग्मतुलांगनात्य ॥

पाताल गं मेव धनुः कुलीर न केषु मर्त्येषु तिसंस्मरंति । १

टीका ॥ वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इन में जन्म होय तो स्वर्ग में मूल जानिये तिसका फल राज्य प्राप्ति करवे - मिथुन तुला कन्या मीन इन में जन्म होय तो पाताल में मूल जानिये तिसका फल धन प्राप्ति करे - मेष धन कर्क मकर इन में जन्म होय तो मृत्यु लोक में मूल जानिये तिसका फल कुटुंब नाश करे ॥ ११ ॥

श्लेषानक्षत्र कानरा कार चक्रम

मूर्धास्यनेत्रगलकासयुगंच वाङ्महज्जानुगुह्यपदमि

त्यहि देहभागः ॥ वाणादिनेत्रे न भुक् श्रुतिनागरुद्र

षण्मदपंचशिरसः क्रमशस्तुनाड्यः ॥ राज्यं पितृक्षयो

मातृनाशः काम क्रियारतिः ॥ पितृभक्तो वली स्वध्रं

स्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ ४

टीका ॥ श्लेषा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जन्म मस्तक की जिसें राज्य प्राप्ति - दूसरी ७ घड़ी मुख की तिस में पिता की अशुभ - तीसरी २ घड़ी माता की अशुभ - चौथी ३ घड़ी ग्रीवा की परस्त्री रत - पांचवीं ४ घड़ी कंधों की पितृभक्त - छठें ८ घरी भुजा की वली कहना - सातवें ११ घड़ी

धन ॥ ६ ॥ कर्मस्थान ॥ आदित्य भौम शलयः किल कर्म सं  
 स्थाः कुर्युर्नरं बहू कर्म रतिकु पुत्रम् ॥ चंद्रः सुकीर्ति सुश  
 ला बहू विनयुक्तं स्यान्वितं बुधशुभ कर्म भाजम् ॥ १०  
 लाभस्थान ॥ लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तं ताराप  
 तिर्वह धनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेकशुभगंच  
 धनायुधीज्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥  
 ११ ॥ व्ययस्थान ॥ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगोविशीलं का  
 रांशप्रीक्षिति सुतो बहू प्राप भाजम् ॥ चंद्रांगजोगत धतं  
 धिवराः कृशांगं शुक्रो बहू व्यय करं रविजः सुतीव्रम् १२  
 राहु केतु फलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥ इति जातके ॥ ४  
 टीका ॥ जन्म काल में जन्म कुंडली पुरुष की में जो ग्रह परे तिनका  
 फल १२ घरन में क्रमसे इसकोषक में पृथक् पृथक् जानना और  
 राहु केतु का फल शनिश्रर के फल के तुल्य फल जानना ॥

**जन्मकालमें मृत्युकारकग्रह**

चंद्राष्टमं च धरणी सुत सप्तमं च राहुर्नवमं च शनि  
 जन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्त पंचभृगुषष्ट बुध ॥  
 अतुर्ये जालोन जीवति नरः प्रवदंति सन्तः ॥ १॥

(टीका)

जन्म लग्न में चंद्रमा अष्टम में भौम सप्तम में राहु नवम में शनि दैलग्न  
 में गुरु १ छठें शुक्र चौथे बुध रेसे ग्रह जिसके पडे हों तो मृत्यु पावे १

सं.स्था	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श.रा.के
१	द्वैह पीडा	कांति सुखं	रक्त कोप	कांति सुखं	कांति सुख	कांति सुख	अतिदु खशय
२	अतिदुष धननाश	संपतिकी वहू प्राप्ति	दुख धन नाशक	नानाप्रका रके दुःख	नानाप्रका संतान प्रा.	नानाप्रका संतान सुख	अतिदुख धननाश
३	निरागी संपन्न	कीर्ति लाभा	शोध शुद्ध	समृद्धि	सुबुद्धि	नानाविध धातु	स्त्रिमीके विष

## टीका

१ प्रभवः	१६ चित्रभानू	३१ हेमलंब	४६ परिधावी
२ विभवः	१७ सुभानु	३२ विलंब	४७ प्रमादी
३ शुक्लः	१८ तारणा	३३ विकारी	४८ आनंदः
४ प्रमोदः	१९ पार्थिव	३४ शर्वरी	४९ राक्षसः
५ प्रजापति	२० व्ययः	३५ लव	५० नलः
६ अंगिरा	२१ सर्वजित्	३६ शुभहृत्	५१ पिंगल
७ श्रीमुख	२२ सर्वधारी	३७ शोभनः	५२ कालयुक्तः
८ भाव	२३ विरोधी	३८ क्रोधी	५३ सिद्धार्थी
९ युवा	२४ विहृति	३९ विश्ववसु	५४ रौद्रः
१० धाता	२५ खरः	४० पराभव	५५ दुर्मति
११ ईश्वर	२६ नंदनः	४१ लवंग	५६ दुंदभी
१२ बहुधान्य	२७ विजयः	४२ कीलकः	५७ रुधिराक्षरी
१३ प्रमाथी	२८ जयः	४३ सौम्यः	५८ रक्ताक्षी
१४ विक्रम	२९ मन्मथ	४४ साधारणा	५९ क्रोधनः
१५ वृषः	३० दुर्मुख	४५ विरोधकृत्	६० क्षयः

## संवत्सरफलं

प्रभवादिगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत् ॥ सप्तमिश्चहरेद्वा  
 गंशेषत्रये शुभाशुभम् ॥ १ ॥ एकचत्वारिदुर्मिक्षं पंचद्वया  
 सुमिक्षकं । त्रिषष्टे तु समं ज्ञेयं न्यूनं पीडानसंशय ॥ २ ॥  
 टीका ॥ प्रभवादि संवत्सरो मे वर्तमानजो संवत् त्रिसेदना करे  
 औरतान उस्मे से घटायदे और सात का भागदे शेष रहे तो शुभाशुभजा  
 नना १४ वचे तो महंगा कहना २।५ वचे तो सस्ता कहना ३।६  
 वचे समजानना और शून्य वचे तो पीडा जानना ॥ २ ॥

## संवत्सरो के स्वामी

पुंभवे द्वत्सरपञ्च केन युगानि च द्वादश वर्ष पष्ट्या ॥

**दशमों गारको यस्य सश्रेयः कुलदीपकः १**

टी० ॥ लग्न में बुध शुक्र हीं केंद्र में १४ १७ १९० वहस्यति हो मंगल दश  
में हीं य तो उस बालक को पराक्रमी और कुलदीपक जानियें ॥१॥

**नवशुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे वृहस्पतिः**

**दशमों गारको नैव सजातः किं करिष्यति**

टी० ॥ जिस बालक को लग्न में बुध शुक्र न हीं य केन्द्र में वृहस्पति न हीं  
दश में मंगल न हीं तो उस बालक का जन्म दृष्टा है

**जातिभ्रंश कारकयोग**

**धनस्थाने यदा सौरिः सैहि केयो धरात्मजः**

**शुक्रे गुरुः सप्तमे च त्वष्टमौ रविचंद्रौ । ब्रह्म**

**पुत्रे वापि वेश्या सुच सदारतिः । प्राप्ते विंशति**

**मे वर्षे स्नेच्छे भवति नान्यथा २**

टी० जिसके धन २ स्थान में शनि राहु मंगल अरु सप्तम स्थान में गुरु शुक्र  
अष्टम स्थान में सूर्य चंद्रमा ऐसे ग्रह हों तो बालक को जातिभ्रंश कहना २० वर्ष की  
अवस्था जानियें ॥

**माता पिता के नाशक ग्रह**

**षष्ठे च द्वादशौ यदा पापग्रहो भवेत् \***

**तदा मातृ भयं विद्या चतुर्यै दशमे पितः १ ॥**

टी० जो छठे और बारहें स्थान में पापग्रह होय तो माता को अशुभ जानियें  
बीधे दश में पापग्रह होय तो पिता को अशुभ जाने ॥ मृत्यु कारक ग्रह

**अर्का राहुः कुजः सौरिर्लेगति षति पंचमे**

**पितरं मातरं हंति भ्रातरं स्वशि श्रूत क्रमात्**

टी० जो सू० रा० मं० श० ये लग्न से पंचम स्थान में पडे हों तो क्रम से फल सूर्य  
से पिता राहु से माता भौम से भ्राता शनि से अपने बालक को अशुभ ॥

**लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चंद्रमा**

**कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति १**

टी० जिस बालक के जन्म लग्न में शनि छठे स्थान चंद्रमा सातम स्थान  
मंगल होय तो पिता न जीवे ॥

**बुधेर्द्वया पूर्णादृष्टिर्भोमस्यचतुरष्टकेः१।**

टी० जन्म लग्न से दशमे तीसरे स्थानजोन सेग्रह होयवेरक पाद दृष्टि सेजन्मलग्न को देखते हैं इसी क्रम से षे वें पूर्वे स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टि से देखते हैं और चौथे आठवें स्थान जो ग्रह पडे होय तो त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं और सातवें स्थान में पूर्णा दृष्टि से चार चरणा जानिये- और प्रानि एकादश वा तीसरे होय तो पूर्णा दृष्टि लग्न को देखना है और पांचवें षे वें गुरु पूर्णा दृष्टि से देखना है और औथे आठवें मंगल पूर्णा दृष्टि से देखना है ॥१॥

**ग्रहोंका उच्च नीचत्व**

रविर्मेघे तुले नीचो दृष्ये चंद्रस्तु दृष्टिके ॥ भोमश्च नके कर्के च त्रियां सौम्ये गये तथा ॥ गुरुः कर्के च नके च मीन कन्ये सितस्य च ॥ अदस्तु लापां भवे च कन्याराहु गृहस्य च । राहु युग्मे तु चापे च तमे च क्तुं फलम् । प्रोक्तं ग्रहाणां मुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद् बुधैः ॥

ग्रह	सू	चं	मं	बु	दृ	शु	श	रा	के	रा	स्व	के	स्व
उच्च	मेघ	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथु	धन	कन्या	मि	मीन	धन
नीच	तुला	दृष्टि	कर्क	मी	मी	क	मे	ध	मि	०	०	मी	मिथुन

**जन्मलग्न का फल**

मेघे दैन्यं भुपेति गर्वित दृषो नानामतिर्मन्मथे  
 सूरः कर्कचके धती च वनये कन्या च भाया विता  
 सत्यं चैव तुले त्वलौ मलिनता पापान्वितं वै धनु  
 मूर्खीयं मकरे घटे त्वतुरता मीने त्वधीरा मतिः १

टी० मेघ में जन्म होय तो हीन दृष में गर्विता मिथुन में नाना बुद्धि कर्क में सूरता सिंह में स्थिरता कन्या में असत्यवादी तुला में सत्यवादी दृष्टिक में मलीन धन में पापी मकर में सूरव कुंभ में चतुर मीन मीन में धीरवीर १॥

**स्त्रीजातक**

तनुस्थाना मूर्त्तौ करोति विधवां दिन कृत्कुजप्रराह

रघुसुर्मृगजः सुपुत्रीरहः करोति सुभगां सुखनीं बुधम् ११ अति  
 नव्ययवती दिनकृद्दिद्रां चं धांकुजः पररतां कृदिलां च राहुः ॥ सती  
 सिनेन्य शशिजा वद्द पुत्रपौत्रा युक्तां विधुः प्रकुरुते व्यगोदिनां धाम् १२

स्थान	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र	शनि	राहु केतु
१तन	विधवा	आयुना	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रनी	पुत्रनाश
१धन	दुःखी	वद्द पुत्र	रिः पुत्र	सौभाग्य	संपति	सौ-संप.	दरिद्रनी	दरि-दुखी
३सहज	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	लक्ष्मी	लक्ष्मीवान
४सुख	दरिद्रनी	दुर्भगा	अल्पसं	सुरवी	ऽतिदुखी	ऽतिदुखी	दुग्धज	पुत्रनाश
५सुत	पुत्रनाश	कन्यासं	पुत्रनाश	वद्दप्राप्ति	वद्दफला	पुत्रकन्य	रोगिनी	मरणप्राप्त
६रिपु	धन	विधवा	धनवती	कलहा	धन	दरिद्रनी	धनवती	धनवती
७जाया	रोगिनी	प्रवासि	विधवा	नाशक	भयबंधन	मृत्युदा	विधवा	विननाश
८मृत्यु	विधवा	मरणा	धनवती	स्वजन	वियोग	मरणादि	संतान	मरणा विधु
९धर्म	धर्म	पुत्रवती	धर्मकारि	उन्नमभो	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांरु	वांरु
१०कर्म	पापमति	अभिचा	चंडाली	धनवती	धनवती	वश्रेय	पापमति	विधवा
११लाभ	अतिपुत्र	लक्ष्मी	पुत्रवती	सुरवी	आयुवती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२व्यय	खचनी	दिनांध	अभिचा	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खचनी	अभिचारनी

(अष्टोत्तरी महादशाः)

आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा तुर वेदशा । मघा पूर्वोत्तरा  
 चैत्र चंद्रस्य च दशा तथा । हस्ते विशाखा चित्रा च सती  
 भौमदशा स्मृताः । ज्येष्ठा नुरा धामूले च सौम्यस्य च दशा  
 बुधैः ॥ अभिजिच्छुक्राः पूषा ऊषा चैव शने दशाः ॥ धनि  
 ष्टा शततारा च पूर्वाभाद्र पदागुरोः ॥ उभा पूषा भविनीका  
 लराहोश्चैव दशा स्मृताः ॥ कृतिकारोहिणी चोक्ता मृगः  
 शुक्र दशा बुधैः ॥ रषां भानां क्रमेणैव ज्ञेया सूर्यादिका  
 दशाः ॥ क्रूरजा अशुभा प्रोक्ता शुभस्यात्सोम्यखटजा । संख्या  
 का कममहा दशा ॥ श्लोकः । सूर्यस्य षष्ठ वर्षाणि द्वादोः पंच  
 दशैव च १५ भौमस्य वसु वर्षाणि ८ अश्विनं द्वादोः बुध



चंद्रमा की दशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफाल्गुनी - उत्तराफाल्गुनी

चंद्रमा	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य
२	२	२	१	२	१	२	०
१	१	४	४	७	८	११	१०
०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

मंगल की दशाके वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाति विशाखा येनक्षत्र

मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
०	१	०	१	०	१	०	१
७	३	८	४	१०	६	५	१
३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

बुधकी दशाके वर्ष २७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल येनक्षत्र

बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
१	१	२	१	३	०	२	१
८	६	११	१०	३	११	४	३
३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

शनि की दशाके वर्ष १० - पूर्वाषाढ उत्तराषाढ

अभिजित्प्रचरायेनक्षत्र

शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०	१	१	२	०	१	०	१
१०	४	१	२१	६	४	८	६
३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
२०	२०	०	०	०	०	५०	४०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

**केसूदनादशा सा भवत भोग्य संज्ञा ॥**

रीका ॥ जिस नक्षत्र में जन्म होय उसे पूर्व के नक्षत्र की षडशियों को साठ से घटाते शेष रहे जिसमें जन्म नक्षत्र की षडशियों से सब नक्षत्र होय और उस में दृष्ट जोड़े तो गल नक्षत्र होय गत नक्षत्र को दशा के वर्ष से गुणा करे सब नक्षत्र का भाग देवतो वर्षादिक आये उन को दशा पति के वर्ष में घटाये शेष रहे सो भोग्य दशा जानिये इसी रीति सो सब ग्रहों की दशा जानना चाहिये ॥ १॥

**कृत्तिकादि क्रमैः शतैः शेषा विंशोत्तरी दशा  
अंतर्दशा युता वर्षासु चारुवर्तिता ॥ १**

रीका ॥ कृत्तिका नक्षत्र से लेकर भरणी पर्यंत २० नक्षत्र दशा के पतिओं की क्रम से दश को एक में जानना चाहिये ॥ १॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	रहू	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
६	१०	७	१८	१६	१६	१७	७	२०
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ड
७	६	वि	स्वा	वि	शु	श्रे	म	पू
७	अ	ध	श	पू	उ	रे	अ	भ

दशा से दशा को गुने १२० का भाग देतो अंतर्दशा के वर्ष पावे फिर १२० से गुणा करे १२० का भाग देतो महीने पावे फिर तीस गुणा करे १२० का भाग दे दिन पावे इसी रीति से अंतर्दशा जानना अंतर्दशा की ॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	रहू	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योगि
०	०	०	०	०	०	०	०	१	६
३	६	४	१०	६	११	१४	४	०	०
३८	०	६	२४	१८	२२	६	६	०	०
चंद्र	मंगल	रहू	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योगि
०	०	१	१	६	१	०	१	०	१०
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	०

महादशा और अन्न दशा का फल  
 देशांतरचा जबंधु वियोगदुःख उद्देग रोग भय  
 चौर भवाच्च पीडा ॥ पूर्व स्थितस्य निरिपलस्य ध  
 नस्य नाशो भानो दशा जनन काल दशा भवति १

टीका ॥ देशांतर वासभाता का वियोग दुःख मन का उद्देग रोग भय चौर पीडा संचित धन का नाश होय ये रवि दशा का फल जानिये ॥ १ ॥

हेमादिभूतवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापवलदृष्टिपरंपरं  
 इच्छान्नदानशयनाशनभोजनानिनूनसदाशिशिदशागमनभवति

टीका ॥ सुवर्ग आदिक ऐश्वर्य का और अश्वगजपालकी इत्यादि वा हंगो कालाभ होय शत्रु की हार और बल की दृष्टि और नाना प्रकार के सरस अन्न दान शयन स्थान उत्तम आसन और भोजन यह सब चंद्रमा की दशामें प्राप्ति होती है ॥ २ ॥

भूपालचौरभयवन्निहतात्र पीडा सर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता  
 चचिताज्वरकषुदहृदयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशा जने भवति १

टीका ॥ राजा चौर अग्निसे पीडा सर्व अंग रोग सदा दुखी और नाना प्रकार की चिंता ज्वर कषुद हरिदुये मंगल की दशामें जानिये ॥ ३ ॥

दीनो नरो भवति बुद्धि विहीन चिंता सर्वांगरोगभयदुः  
 खसुदुःखिता च ॥ पापानिबंधवदुःखदरिद्रयुक्त  
 राहो दशा जनन काल दशा भवति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥

टीका ॥ मनुष्य बुद्धि हीन और दीन होय चिंता होय सर्व शरीर की रोग भय रहै और दुःख बंधन कषुद बद्धत हरिदुताये राहु की दशामें जानिये

राज्याधिकार परिवर्धिति चित्तवृत्ति धर्मोधिकार परि  
 पालनसिद्धि बुद्धिम ॥ सहिग्रहोपि धन धान्यसमृ  
 द्धिता च स्याद्विजिता गुरु दशा गमने भवति ॥ ५ ॥

टीका ॥ राज्याधिकार चित्त की वृत्तिमें वृद्धि धर्ममें नेष्टा शरीर की और धन धान्यकी वृद्धि यह गुरु की दशामें जानिये ॥ ५ ॥

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचवन्धुव

रुकद्वित्रीशिवेदाश्च पंचयत्सप्तमानिच ॥

अथ वर्षाणि हि भवेन्मंगलादावनुक्रमानि १

टीका ॥ मंगला १ वर्ष की पिंगला २ वर्ष की धान्या ३ वर्ष की ४ वर्ष की  
भामरी ५ वर्ष की भद्रिका ६ वर्ष की उल्का सिद्धा ७ वर्ष की संकरा  
८ वर्ष की ये योगिनी दशा के वर्ष और नाम कहे हैं ॥ १ ॥

अंग	मंगला	पिंगला	धान्या	भामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकरा	योगि
मंगला	१०	४०	६०	१६०	२५०	३६०	४६०	६४०	०
पिंगला	२०	६०	१२०	२००	३४०	४२०	५६०	८०	०
धान्या	३०	८०	१५०	२४०	३५०	४८०	७०	१६०	०
भामरी	४०	१४०	१८०	२४०	४००	६०	१४०	२४०	०
भद्रिका	५०	१२०	२१०	३२०	५०	१२०	२१०	३२०	०
उल्का	६०	१४०	२४०	४०	१००	१८०	२८०	४००	०
सिद्धा	७०	१६०	३०	८०	१५०	२४०	३५०	४६०	०
संकरा	८०	२०	६०	१२०	२००	३००	४२०	५६०	०
योगिनी	३६०	७२०	१०७	१४४०	१८००	२१६०	२५२०	२८८०	०

### योगिनी दशा का फल

मंगला मंगला नंदयशोद्द्विषादायिनी ॥ पिंग  
लाननुने व्याधिसानसोदुःखसंभ्रमो ॥ धान्या  
धनसुहृद्भुरूपसीमंतमीकरी ॥ भामरी जन्मभूमि  
प्रीभामयेत्सर्वतोदिशा ॥ भद्रिका सुखसंपत्तिविला  
सवश्रादायिनी ॥ उल्का राज्यधनाशयहारिणी दुः  
खकारिणी ॥ सिद्धा साध्यने कार्यं नरगां वै सुखरूप  
वेत् ॥ संकरा संकटव्याधिमरणाहोराकारिणी ॥ २

टीका ॥ मंगला आनंदयशोद्व्यप्राप्तिकी करवाने हारी और पिंगल  
रोगकी करन हारी धान्या धनसुतकी देन हारी भामरी दिशाओंमें  
प्राप्ति कराने हारी भद्रिका सुखसंपत्तिविलासकी कराने हारी ॥

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितं ॥ नवभिसुहरे  
द्रागं शेषं दिन दशोच्यते ॥ १० ॥ रविणा शोकसंतापोश्च  
शांके क्षेमलाभको ॥ भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्याद्बुधे मजा  
विवर्द्धनं ॥ गुरोर्वित्तभृगौ लौरयं शनौ पीडानसंशयः  
राहु रोगाघातपानोच केतौ मृत्युर्दश्याफलम् ॥ २० ॥ ३

टीका ॥ जन्म नक्षत्रको ज्योतिषा करे और गत तिथिवार मिलावे नव  
का भाग दे १ शेष रहे तो सूर्यकी दशा जानिये शोकसंतापकारक २ बुध  
तो चंद्रमाकी दशा लाभकारक और बुधके तो मंगलकी दशा मृत्यु  
कारक ४ बुधके तो बुधकी दशा बुद्धि वृद्धिकारक ५ बुधके तो गुरुकी  
दशा धनकी प्राप्ति करे ६ बुधके तो शुककी दशा सुखकारक ७ बुधके  
तो शनिकी दशा पीडाकारक है ८ शेषरहे तो राहुकी दशा घातक है  
९ बुधके तो केतुकी दशा मृत्युकारक फल जानना ॥ १० ॥ ३ ॥

(गोचर प्रकरांग्रह कितने मास एक राशिको भोगे हैं)

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धं मासं तु मंगलं ॥ त्रयोदश गुरु  
श्रेवसपाद द्वे दिने शशी ॥ १॥ राहु रव्यादशान्मासान् विश  
न्मासान् शनिश्चरः ॥ राहु बुधकेतुस्तंस्तु राशिभोगाः प्रकी  
र्तिताः ॥ २॥ फलं ॥ सूर्यः पंच दिनं शशी त्रिघटिकाभीमो  
ष्वेवासरं सप्ताहं द्वासनावुधस्त्रयदिनं मास द्वयं वै गुरोः  
षण्मासं रविजस्तथेव सततं स्वर्भानु मास द्वयं केतोश्चैव  
तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम् ॥ १॥ ५ ॥ ५

राशिप्रवेशे सूर्यादौ मध्ये शुक्रबृहस्पतिः ॥

राहुश्चंद्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदा शुभम् २।

टीका ॥ गोचर ग्रहों के दिनों की संख्या का कम लिरवते हैं - सूर्य १ मास  
में एक राशि भोगता है उसमें पहले पांच दिन फल देता है - चंद्रमा  
सवा दो दिन एक राशि भोगता है - शनि में तीन घरी फल देता है -  
मंगल डेढ मास एक राशि भोगता है पहले आठ दिन फल देता है -  
बुध एक मास एक राशि भोगता है और सब दिन फल देता है - ॥

दीका

नाम	रवि	चंद्र	शुभ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तन	नाश	धनना	शुभ	बंधन	भय	शुभ	सर्वना	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा	धनना	धनप्रा	धनप्रा	धनप्रा	द्विजना	धनना	वैर
सहन	धन	सुरख	धनप्रा	भीति	लेश	सौरव्य	धनना	धनना	सुरख
सहन	मानहा	रोग	भय	धनप्रा	धनप्रा	धनप्रा	शुभ	वैर	भय
सुत	हेन्य	कार्यना	अर्थना	रोग	सुरख	पुत्रप्रा	सुनप्रा	शुचि	शुचिप्रा
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थान	शुचि	पुत्रप्रा	धनप्रा	लक्ष्मी	धनप्रा
जाया	नाश	लक्ष्मी	स्वर्च	पीडा	मान	रिपुमु	दोष	कलह	मार्गक्र-
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शुभ	अर्थप्रा	रोग	भय	रिपुभय	धनप्रा	रोगप्राप्त
धर्म	पुन्यना	राजभ	पीडा	रोग	सुरख	शोक	धनना	पायक	दुष्टक
कर्म	लाभ	लाभ	धनप्रा	सौरव्य	लाभ	महाव	धनप्रा	सौरव्य	शोक
ध्यायु	लाभ	लाभ	धनप्रा	सौरव्य	लाभ	महाव	धनप्रा	सौरव्य	कीर्ति
व्यय	हानि	स्वर्च	हानि	नाश	पीडा	महाव	धनना	शुचि	शुभ

(गोचरके ग्रहोंका फल इस प्रकार है-)

जन्मदिने च ग्रहां केतु पंच कर्माणि वर्जयेत् ॥

यात्रां युद्धं विवाहं च शौरं च गृह वेशानम् ॥१॥

दीका ॥ जन्म के चंद्रमा में पांच कर्मन करे यात्रा युद्ध विवाह शौर गृह प्रवेश यह पांच कर्म वर्जित है ॥१॥

अभिषेकं निषेकं च प्रासनं व्रतवन्दनम् ॥

प्राणिगृहे प्रयारोच चंद्र द्वादशगः शुभः ॥

दीका ॥ चंद्रमा में यह कर्म करने शुभ हैं राजाभिषेक गर्भजन्म संस्कार अन्न प्रासन यज्ञोपवीत विवाह यात्रा ये कर्म करने शुभ हैं

हि पंच नक्षत्रे शुक्ले श्रेष्ठं श्रद्धो हि उच्यते ॥

अश्लेषे द्वादशे कृत्तिके चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥

शुक्ल पक्षे वृत्ती चन्द्रः कृत्तिके तारा वृत्ती यस्ती

दी० ॥ दूसरा पांचमा नौमा चंद्रमा होय तो शुक्ल पक्षमें अश्लेष

चित्रावरं शुभ्रतरस्करंगमं धनुश्च वज्ररजतं सुवर्णं ॥ स  
 तंदुलानुत्तमगंधयुक्तं वंदति दानं भृगुनंदनाय ॥ ६ ॥ मा  
 पाश्चतेलं विमलं दूनीलं तिलाः कुलत्यामहिषीचलो  
 हंकुस्मान् धेनुः प्रवदंति नूतं दुष्ठापदानं रविनंदनाय ७  
 येमेदरत्नं चतुरंगनश्च सुनीलं वेलासलकंबलाश्च ति  
 लाश्चतेलं खलुलोहमिञ्जस्वर्णानवेदानमिदं वंदति ८  
 वैडूर्यं सतिलं च नीलं च कंबलाश्चापि भद्रो मृगश्च ॥  
 हस्त्रं च कौः परितो वहेतोः शुभ्रं मत्स्यदानं कश्चित्तु नैवे

(ग्रहोकाजप)

रवेः सप्तसहस्रारिो चंद्रस्यैकादशैवतु ॥ भीमेदृशस  
 हस्रारिो बुधे चाष्टसहस्रकं ॥ एकौ च विंशतिजीवेशुके  
 एकादशैवतु ॥ च्योविंशतिभंदे च राहोरष्टादशैवतु ॥ के  
 नोः सप्तसहस्रारिो जपसंख्या प्रकीर्तिताः ॥ १० ॥ १० ॥

नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	मारिाद	वांसकी	भृगा	नीलोवे	मित्री	चित्रवट	उडर	गोमेद	वैडूर्य
	गेहूं	चावल	गेहूं	भृंग	पीतश	चावल	निलतेल	तिलतेल	तिलतेल
	गोवत्स	वैलमैत	नाश्रवे	कांससी	पोडा	गाय	नीलवट	कापाल	कंबुल
दान	रक्तवत्स	कपूरभो	गुडसो	घृत	पीतव	रूपासो	कुलत्या	लोहा	कस्तूरी
	नोनानं	रूपा	कनैरू	गारुम	नमरु	घोडाश्व	भैरव	कालरू	मैदा
	लानध	घृत	घृत	दासी	प्रवराज	चंदन	लोहा	घोडा	मृगमद
	कमल	सकरा	रक्तवत्स	हाथी	सीहा	पान	गोहृत्सा	रुसाप	धुरी
	मूलराय	वत्स चं	रक्तचंदन	वत्सपुत्र	घोपुष	धनुष	नीलम	नीलवटी	सतनजा
जप	१०००	११०००	१००००	६०००	१६०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

(ग्रहपीडानिवारणार्थं)

देवब्राह्मणा वंदनां हुरुवचः संपादनात्सत्यहं साधूना  
 मपिभाषणाच्छ्रुतिरवः श्रेयः कथाकारणात् ॥ होमा  
 दध्परदर्शनात् शुचिमनोभावाज्जपादानतो नो कुर्व-

अयन मध्येशुभाशुभकर्म ॥

गृह प्रवेशादि दूषाप्रतिष्ठा विवाह चोत्तव्रतबंधदीक्षाः  
सौम्यायनेकर्म शुभे विधेयं दुहिते तत्त्वलक्षणे च ॥१

टीका ॥ गृह प्रवेश विवाह देव प्रतिष्ठा मुंडन जनेक मंत्र दीक्षायुक्त  
रायण सूर्य मेशुभ है और निहित कर्म दक्षिणायन में करने शुभ है ॥१॥

संक्राति परत्व ऋतु कथनं

मन्त्रादि राशि द्वयभानुभोगात् षडर्त्तवस्युः शिशिरो वसंतः

ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरश्च तद्द्वे मंत नाम काथतश्च षष्ठः १

टीका ॥ मकर राशि से आदि लेके दो दो राशि सूर्य के भोगेंते छः ऋतु  
हैं हैं शिशिर १ वसंत २ ग्रीष्म ३ वर्षा ४ शरद ५ हेमंत ६ ये छः ऋ  
तु के नाम जानो ॥ १ ॥ उदाहरण ॥

१० मकर ...	} शिशिर ऋतु १	४ कर्क ...	} वर्षा ऋतु ४
११ कुंभ ...		५ सिंह ...	
१२ मीन ...	} वसंत ऋतु २	६ कन्या ...	} शरद ऋतु ५
१ मेष ...		७ तुला ...	
२ वृष ...	} ग्रीष्म ऋतु ३	८ दृश्विक ...	} हेमंत ऋतु ६
३ मिथुन ...		९ धन ...	

मतांतर राशि परत्व ऋतु व. मेषादितो द्वि  
द्विभानुभोगाद्वसंतपूर्वा ऋतुः षडुक्ता ॥१

टीका

मेष राशि से लेके दो दो राशि सूर्य के भागते छहों ऋ  
तु कहे हैं मतांतर तें सो जानना ॥ १ ॥

१ मेष } वसंत १	५ सिंह } वर्षा ३	६ धन } शिशिर ५
२ वृष } ग्रीष्म २	६ कन्या } शरद ४	१० मकर } हेमंत ६
३ मिथुन }	७ तुला }	११ कुंभ }
४ कर्क }	८ दृश्विक }	१२ मीन }



तारा येयो रारी तु चित्रका ॥४॥ रुरे रोता स्मृती स्वाती ती वृते  
 तो विशाखिका ॥ नानी नूने बुरा धार्द्वी ज्येष्ठा नोयायी यूस्म  
 ता ॥ येयो भावी मूलतारा पूर्वाषाढ बुधा फडा ॥ पूभि भोजा  
 ज्युत्तराषाढा जूने जो रवाभि जिद्धवेत् ॥ सीसू खेसो अचराभं  
 गागी गूमे धनिष्ठिका ॥६॥ गोसासी सूशत भिषक सेसोदा  
 ही पूर्वभाक् ॥ दूजम थोत्तरा भादू देही चाचीतुरेवती ॥७॥

टी० ॥ इसकी टीका को क्रम से समजना नाम की राशि कहते हैं ॥७॥

अश्विनी भरणी कृत्तिका पादे मेष कृत्तिका नां चयः पा  
 दारो हिराणी मृगशिशोर्द्वे हृषः १ मृगशिशोर्द्वे आर्द्रा पुन  
 र्वस्तु पादत्रयं मियुन पुनर्वसु पादमेकं पुष्य श्लेषांतक  
 र्क २ मघाच पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा पादे सिंह उत्तराणां त्र  
 यः पादा हस्त चित्रार्द्र कन्या चित्रार्द्र स्वाति विशाखा पा  
 दत्रयं तुल विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांत वृश्चि  
 क मूलच पूर्वा षाढ उत्तरा पादे धन उत्तराणां त्रयः पा  
 दा अचरा धनिष्ठा र्द्रं मकर धनिष्ठा र्द्रं शतभिषा पू  
 र्वाभादू पद पादत्रयं कुंभ पूर्वाभादू पादमेकं उत्तरारै  
 वत्यांतमीन ॥

टी० ॥ सवा दो नक्षत्र की एक राशि होती है इसी प्रकार से १२ राशि  
 जानना सब नक्षत्रों के क्रम से और इसी रीति से चंद्रमा वर्तता है ॥

( मंच कारोहरा )

शशितुरंग धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषगनु  
 राधा ज्युत्तरा स्वाति हस्ता ॥ बुध गुरु भृगु वारे सोम्ये  
 लग्ने भेकरु निगदिह त्तिह पूर्व मंच कारोहरांतु ॥१॥

टी० ॥ मृगशिशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा ती  
 नों उत्तरा स्वाति हस्त ये नक्षत्र और बुध गुरु भृगु वार तुला वृश्चिक कुंभ इन ल  
 गो में बालक का सिर पूर्व दिशा की करे प्रथम मंच कारोहरा करावे तो शुभ  
 है ॥१॥ ॥ अथ पालने का मुहूर्त ॥

### करा वेध

रोहिण्युत्तर मूल भैत्रमृगभे विष्णुत्रये के त्रये रेव  
त्यां च पुनर्वसु ह्यभगे करास्य वेधः शुभः ॥ मीने  
स्त्री धन मन्त्र ये सुच धटे वर्धे च युग्मे तिथौ सोम्ये  
चैव गौरी वीरव शयनं त्यक्त्वा च विष्णोर्बुधः ॥ ११ ॥

टी० ॥ रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृग श्रवणा धनिष्ठा शत  
भिषा हस्त चित्रा ये नक्षत्र और पुनर्वसु तिथि और शुभ रव्ये वार बुध  
चंद्र गुरु रवि विष्णु शयन को छोड़ के करा करा वेध शुभ है ॥ ११ ॥

॥ वालक को भूमि में प्रवेश कराने वैठाने का शुभ ॥

पंचमे च तथा मातिभूमौ तसु पवेशयेत् ॥ तत्र स्तवैः प्रहाः  
शक्ता भोमोप्यत्र विशेषतः ॥ उत्तरा चितयं सोम्यं पुष्यं च

शक्र देवनं ॥ प्राजापत्यं च हस्तं च प्रास्तमाश्विनं क्षिप्रं भम् ॥

टी० ॥ पंचवे सास में रवि भौम गुरु ये वार और शुभ तिथि और तीनों  
उत्तरा मृग शिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा इनमें  
वालक को पृथ्वी वराह की पूजा कर के वैठावना शुभ है ॥ ११ ॥

### अन्न प्राशन

पूर्वाद्राभरणी भुजंग वरुणां त्यक्त्वा कुजा की नया ॥ नंदा

पर्व च सप्तमी नपिनया रिक्ता मपि द्वादशीम् ॥ षष्ठे मा

स्य यवान् भक्षणा विधि स्त्रीणां मयुक्ते पंचमे गोकन्या

मय मन्त्र ये बुध वले पक्षे च योगे शुभे ॥ १२ ॥ १॥ १॥

टी० ॥ तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी श्लेषा और भौम शनि ये वार नंदा पर्व  
रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको छोड़ के आठवें महीने में लड़  
के को और पंचवें महीने कन्या को वष मिथुन मकर कन्या इनका व  
न पाके शुक्ल पक्ष में शुभ योग में वालको अन्न प्राशन करावे ॥ १२ ॥

### चौलकर्म

रेवत्यादिक रत्रयादिति मृग ज्येष्ठा सुविष्णुत्रये पुष्ये

चोत्तर गौरी वी गुरु कवी त्पक्षे पक्षे सिते ॥ गोस्त्री-

बुध ये वार पंचमी दशमी से तीन दिन दून तीन इनमें मोंजी वंधन शुभ है ॥

**वर्ष संख्या**

**गर्भाष्टमेष्ट मेवाष्टे पंचमे सप्तमे पिता ॥**

**द्विजत्वं आशुया द्विष्टो वर्षे त्वेकादशे नृपः**

टी०॥ गर्भ से अथवा जन्म से आठ में पांच में सात में वर्ष में ब्राह्मणों को और ग्यारह में वर्ष क्षत्रियों को यज्ञोपवीत उचित है ॥ मास दिन ॥

**विप्रं वसंति क्षितियं निदाघे वैष्वं धनाते व्रति**

**नं विदध्यात् ॥ आघादि सुक्ता लिफ पंचमा साः**

**साधारणो वास कला द्विजा नाम् ॥ १ ॥ ५**

टीका ॥ ब्राह्मणों को वसंत ऋतु में क्षत्रियों को ग्रीष्म ऋतु में वैश्यां को शिशिर ऋतु में यज्ञोपवीत करावे माघ से ज्येष्ठ पर्यंत ॥ आस में साधारण शुभ है ॥

**वर्गाधिपे वलोपेते उपवीत क्रियाहिता**

**सर्वे वांचुरो सूर्ये चंद्रे च वल शालिनी**

टी०॥ वरुणों के अधिपति के अनुसार वल देखि के और सर्वां को गुरु सूर्य चंद्रमा का वल देखि के मोंजी वंधन करना शुभ है ॥

**त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्या दिति यित्रयं**

**चतुर्थे का किनी प्रोक्ता अष्टावे च गलगुहा**

टी०॥ तेरस से आदि चार तिथि और सप्तमी अष्टमी नवमी चौथे आठ गलगुहा जानिये ॥ (शुद्धादिकों के संस्कार का सुहर्त)

**मूलाद्दी अवरादि देव बुध भे बुधे तथा चांदि भे देव**

**त्या मृग रोहिणी दिति करे मंत्रे तथा वारुणे ॥ चिदा**

**स्वानि मघोत्तरा भृगु सुते भौमे तथा चांद्रजे शुद्धाणां**

**तु बुधेः शुभं हि कथितं संस्कार कर्मोत्तमम् ॥ १ ॥**

टी०॥ मूल आर्द्रा अवरा विषाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अत्राधा श्रावणि चिदा स्वाति नो उत्तरा ये नक्षत्र - शुक्र भौम बुध शुद्धादिक अन्य जाति के संस्कार में शुभ जानिये ॥ १ ॥

**॥ अस्तौदिय ॥**

टीका ॥ आषाढ आदि लेके ४ मास और पौष चैत्र ये मास और गुरु  
शुक्र का अस्त और इन दोनों का बाल हृद्पन और सिंह मकर की दृह  
स्पति और अधिक मास क्षय मास यह विवाह में वर्जित हैं ॥१॥

(मूलादि जन्म नक्षत्र का होष)

मूला जात्रे गुणाहंति व्याज्जालकुलदोगजा  
विशारवजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठमाका

टीका ॥ मूल नक्षत्र में कन्या का जन्म होय तो गुरुओं का नाश करे ही  
या में जन्म होय तो धर्मि चारिणी विशारव में देवर की मृत्यु कारक  
जेश में जन्म होय तो पति से ज्येष्ठे को मृत्यु दायक होय ॥१॥

जन्मये जन्म दिवसे जन्म मासे शुभं न्यजेत्  
ज्येष्ठे मासाद्य गर्भस्य शुभं ब्रह्मं स्त्रिया यथा ॥१  
अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठ पुत्रो वरो यदि ॥  
व्यत्ययो वात योस्तत्र ज्येष्ठो मास शुभप्रदः ॥२

टीका ॥ जन्म के नक्षत्र जन्म के मास में बालकों का विवाहादि शुभ  
वर्जित है जैसे स्त्रियों को श्वेत वस्त्र धारण करना अशुभ है और  
कन्या कनिष्ठ होय वर ज्येष्ठ होय अथवा दूस से विपरीत होय तो  
ज्येष्ठ के महीने में विवाह शुभ है ॥ १ ॥ २ ॥

वर्षप्रभारा

जन्मती गर्भधाना द्वापंचमाब्दात्परं शुभं  
कुमारी वरसां दानं मेखला चंद्रं तथा ॥१

टीका ॥ जन्म होने से अथवा गर्भ धारण से पांच वर्ष उमरांत कन्या  
का वरसा अथवा दान इत बंध उत्तम जानिये - गुरुचंद्रवलः स्त्रीणां शु  
रुवलं श्रेष्ठम् ॥१॥

गुरुचंद्रवलम्

स्त्रीणां गुरुवलं श्रेष्ठं पुत्रवारां रवेवलम्  
तयोश्चंद्रवलं श्रेष्ठं मिति गर्भेताभाषितम्

टीका ॥ कन्या को गुरुवल और वर को सूर्य दोनों को चंद्रवल ये  
गर्ग मुनि ने कहा है सो अति श्रेष्ठ है ॥१॥

महिषीच ततो व्याघ्रो महिषो व्याघ्रकंक्रमात् ॥ सुगोष्  
 गस्तथाष्वाचक्रपिनेकुल एव च ॥ ५ ॥ नकुलो वानरदिसे  
 होतुरगो मृगराट् प्रस्युः ॥ अघोरैराक्रमे रौं व अश्विन्यादि  
 नयोनयः ॥ ६ ॥ गोव्याघ्रं गजसिंह मध्व महिषं श्वेरां च व  
 भ्रूरगं वैरं वानरमेष यो अमुमहत्त इहि डाली चुरु ॥ लो  
 कानां व्यवहार तोन्य दपित रत्नात् ॥ प्रयत्नादिदं दंपत्येर्न  
 पभृत्यघोरपि सदा रज्यं सुभ्रुवार्थिभिः ॥ ७ ॥ मेव सुश्रि  
 कयोर्भौजः शुको ह्यतुलाधिपः ॥ सत्यमिधुनयेः शो  
 म्यो सुसुखं धनधीनयोः ॥ ८ ॥ शनिर्निजकस्य दुःखस्य कर्कस्यैव  
 तु चंद्रमाः ॥ सिंहस्य अधिपतिः सूर्यः कथितो गणेशोऽयनात् ॥

(ग्रहोका प्रच मित्र समजा जना च हिये)

प्रच मंद सितो समश्च शशिनो मित्राणि शेषारवे स्त्री हंता  
 सुहृन्म रमिषुज अ सु हृदो प्रौषाः सखाः शीतगोः जीवेदस्य  
 करा कुजस्य सु हृदो क्षीरी सितानी सभो मित्रे सूर्य सितो वृध  
 स्य हि मृगुः प्रचुः सखा च्छापरे ॥ गुरोः शौभ्य सितो वरी रौं व  
 हुतो अश्वी परे त्वन्व या सो व्या की सु हृदो सभो कुज गुरुरा

गुण और दोनों की एक तारा-अथवा ये शुभ तारा होय ता तीन  
अगुण और जो दोनों की अशुभ तारा होय तो शून्य गुण जानिये ॥

तारा गुण

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनि के गुण

महावैरच वैरच स्वस्वभावे यथा क्रमात्  
मैत्रेचैवातिमैत्रेचवदुद्विचिचतुर्गुणाः १

टीका ॥ महावैरका गुण शून्य० दोनों की प्रात्रताका गुण १ स्वभा  
वके गुण २ दोनों की मित्रताका गुण ३ अति मित्रताके गुण एक ग  
तिके गुण ४ व्यवहार से जानिये ॥ (तारा गुण)

योनि	अ.	ग.	मै.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गो.	मै.	व्या.	मृ.	बान.	मौ.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	५	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेढा	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	०	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मज्जारि	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	३	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	०

वास्वीदूरत्व होय तो षडाष्टक द्विर्द्वादश नव पंचमादि दुष्ट कूटों के गुण ४ जानिये - यानि मैत्री वास्वी दूरत्व इनमें से एक हो तो दुष्ट कूट का गुण १ जानिये - और एक नक्षत्र वा एक चरण १ इस प्रकार गुणों का मिलाना १८ गुण अधिक हो तो शुभ गुण कम हो तो अशुभ गु. ॥

लग्नः	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	०	०	७	७	०	०
द्विष्विक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

**वर्णा आदिक का फल**

**यस्याद्वर्णाधिका कन्याभर्ता तस्य न जीवती  
यदि जीवति भर्ता तु ज्येष्ठ पुत्रो विनश्यति ॥ १**

टीका ॥ जिस कन्या का वर्ण वरसे श्रेष्ठ हो उसका पति वा ज्येष्ठ पुत्र मृत्यु पावे ॥ वैर योनिका फल ॥ जैसे अश्व और भैंस की वैर योनि है इसी प्रकार बधू और वैर की योनि वैर विचारी चाहिये और राज सेवा इत्यादिका भी विचारिये इसमें शुभ की इच्छा नहीं है ॥ १ ॥

**गुणों के फल ॥ स्वगणे चोत्तरा प्रीति मध्यमानरदे  
वयोः ॥ कल हो देव दैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् १**

टीका ॥ दोनों का एक गुण होय तो उत्तम प्रीति जानिये मनुष्य देवता में

पडाष्टकमें गोदान दो २ नौमें पाचमें चाँदी काँसे का पात्र एक नाडी  
में गोदान दूसर बारहें में अन्न सोना वस्त्र ब्राह्मणों को प्रसन्न कर  
ना इससे सब दोष दूर होता है ॥ १ ॥

**यस्य वर्णस्य योनि ज्ञानं नोक्तं तस्य जातस्य**

**जातकावलोकन प्रकारो वास्तु प्रकारो उक्तः**

टीका ॥ जिस वर्णकी योनि का जानना कहा नहीं है तिसके जातक  
देखने का प्रकार वास्तु प्रकारमें कहा है सो जानना ॥

(विवाहे नक्षत्रं)

**मूलं मैत्रकर स्वाती मघा षोषा ध्रुवं दुवैः**

**एतैः निर्दोषमैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः**

टीका ॥ मूल अनुषा हस्त स्वाती मघा रेवती तीनों उत्तरा  
श्रृंगसिर यह निर्दोष होय तो शुभ है ॥ १ ॥

(एक विंशति महा दोषाः)

**पंचागशुद्धिराहतो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तिताः ॥**

**उदयास्तशुद्धिराहतो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ तृ**

**तीयः पापषडुर्गोभृगुः षष्टकुजोष्टमः ॥ गंडांतकर्त्त**

**रीरिस्फुषडुष्टसंग्रहः ॥ दपत्योरष्टमं लग्नराशौ**

**विषघटी तथा ॥ दुर्मुहूर्त्तौ वारदोषस्वार्जुरी कंस**

**मांघ्रिभं ॥ ग्रहणोत्पातभं करविद्वर्क्षं करसंयुतं**

**कुनवांशो महापातौ वैद्युतिश्चैकविंशति ॥ १ ॥**

टीका ॥ प्रथम पंचाग शुद्ध रहित दोष १ उदयास्त शुद्धिराहतं २ संक्रा  
ति दिवस ३ पापग्रह का वर्ग ४ लग्नमें छटै शुक्र ५ लग्नमें आठवें मंग  
ल ६ लग्नमें ६। ८। १२ चंद्रमा ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९  
लग्नमें चंद्रमा ५ और पापग्रह १० वरवधूकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जित  
है ११ विषघटी १२ दुष्टमहूर्त्त १३ या मार्द्ध आदिक १४ लक्षा १५ ग्रह  
एनक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहों करि विद्व नक्षत्र १८ पा  
पग्रह युक्त नक्षत्र १९ पापांश २० संक्राति साम्य २१ ॥



गुरुवार से काल दोष बुधवार से कंटक शुक्रवार से निघंट ये सब यथाक्रम कुलिक के समान वर्जित हैं १ एक दिन का यामार्द्ध ८ कुलिकादि १६ वारानुसार जानिये परंतु उनमें से जिस वारको जो वर्जित है वे कोष्टक में नीचे लिखे हैं ॥

वार	यामार्द्ध	घाटका	पहतिनि	कुलिक	कालवे	कंटक	निघंट
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

### लत्तादोष

भौमाच्चाकृतिषट्जिनाष्टनखभंहृत्यग्रतोलत्तया ॥

खेटोर्कोर्कमितंशशीमुनिमितपूर्णांनसत्तच्छुभे ॥ १

टीका ॥ मंगल जिस नक्षत्र में होय तिससे तासरे नक्षत्र में लत्ता दोष और बुध जिस नक्षत्र का होय तिससे २२वें नक्षत्र में लत्ता दोष - गुरु जिस नक्षत्र में होय तिससे छठ नक्षत्र लत्ता दोष - शुक्र जिस नक्षत्र में तिससे २४वें नक्षत्र लत्ता दोष हो - शनिके नक्षत्र से आठवें नक्षत्र में लत्ता दोष - राहुके नक्षत्र से २०वें नक्षत्र में लत्ता दोष - सूर्यके नक्षत्र से १२वें नक्षत्र में लत्ता दोष चंद्रमा से ७वें नक्षत्र लत्ता दोष यह दोष मालव देश में अशुभ होता है ॥ १ ॥

यस्मिन्धिपाये महोत्यातो ग्रहणांवाभवेद्यदि तस्मिन्धिपाये शुभं कर्म षण्मासे वर्जयेद्दधः ॥

टीका ॥ जिस नक्षत्र में उत्पात अथवा ग्रहण हो यतिसे नक्षत्र में षट् मास तक शुभ कर्म वर्जित है ॥ १ ॥

पाप युक्त ग्रह और वेध नक्षत्र

एकार्गल दोष होता है ॥ चंद्र सूर्य वलसे दोष दूर होते हैं ॥

**चंडायुध**

शूलगंडात पापानां साध्य हर्षणयास्तथा  
श्रुत्यंयच्चंद्रमंतस्मिन्नतच्चंडायुधेनसत् ॥

टीका ॥ शूलगंडात व्यतीपात साध्य वधति हर्षण इन योगों के अंत में जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

**क्रांति साम्य**

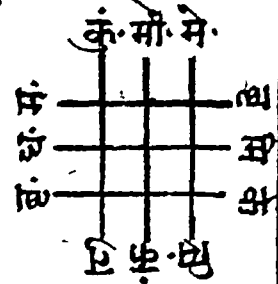
युग्मेधनुः कर्किरलौचयुक्ते कन्याचमीने वृषनक्रयुक्ते  
मेषेचसिंहेचघटे तुलायां क्रांतेचसाम्यं शशिसूर्ययोगे ॥

टीका ॥ धन मिथन इन लगनों में सूर्य चंद्रमा होय तो क्रांति साम्य जानिये - कक वृश्चिकमें कन्या मीनमें मेष सिंहमें मकर वृष में तुला कुभमें परस्पर क्रांति साम्य दोष होता है ॥ १ ॥

**चक्र का क्रम**

उध्वरखात्रयं चैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा  
क्रांति साम्यं वृधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनेतुयोजयेत्

टीका ॥ तीन रेखा ऊंची तीन रेखा तिरछी मध्य भाग की रेखाओं में तीन २ लग्न क्रम से लिखे वारह लगनों में दो दो का क्रांति साम्य होता है ॥ १ ॥



**जामित्र दोष**

लग्ने दोर्नास्तगः पापस्ततुल्या शेषदिस्थितः ॥ तदा  
जामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ क्रूरे वा यदि  
वासाम्यो लग्ना चंद्राच्चखेतरः ॥ एकोपि यदि जामित्रे स  
मांशे च तदा भवेत् ॥ जामित्रे न प्रशंसंति गर्गा काश्यपदेव  
लाः ॥ श्राय षष्ठ तृतीयेषु धनधान्य प्रदोरविः ॥ १ ॥

टीका ॥ लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान पाप शुभ न होय जो होय तो जामि मित्र दोष होता है और उसके तुल्यांश आवे तो जामित्र दोष होय ॥

नमो नभश्च ॥ तथेष उर्जश्च सहा सहस्यस्तपस्तपस्य  
श्रयथा क्रमेण ॥ १ ॥

टाका ॥ मधुकहिये चैत्रमाधवकहिये वैशाख शुक्रकहिये ज्ये  
ष्ठशुचिकहिये आषाढ नभकहिये श्रावण नभस्यकहिये भाद्र  
पद द्रुषकहिये आश्विन उर्जकहिये कार्तिक सहाकहिये मार्गशि  
रसहस्यकहिये पौषतपकहिये माघतपस्यकहिये फाल्गुन द्रु  
क्रम से महीनों क नाम जानना ॥ १ ॥

मास परत्व सूर्य के नाम

अरुणो माघमासेतु सूर्यो वै फाल्गुणेतथा ॥

चैत्रमासेतवेदांगो भानु वैशाख एवच ॥ १ ॥

ज्येष्ठमासेतपेदिन्द्रः आषाढेतपतरविः ॥

गभस्तिः श्रावणमासे यपो भाद्रपदतथा २

सुवर्णरेताश्च पुजि कार्तिके च दिवाकरः

मार्गशीर्षेतपे मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः

दूत्पेते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात्

टीका ॥ माघ में अरुण सूर्य का नाम है फाल्गुण में सूर्य नाम है चैत्र  
में वेदांग सूर्य का नाम है वैशाख में भानु नाम है ज्येष्ठ में इंद्र नाम है आषा  
ढ में रवि नाम सूर्य जानिये श्रावण में गभस्ति नाम सूर्य जानिये ॥ भाद्र  
में यम नाम सूर्य जानिये आश्विन में सुवर्णरेता सूर्य जानिये ॥ कार्तिक में  
दिवाकर नाम सूर्य जानिये मार्गशिर में मित्र नाम सूर्य जानिये पौष में  
विष्णु नाम सूर्य जानिये ॥ यह बारह महीनों में सूर्य के नाम जा  
निये ॥ १ ॥

मास परत्व विष्णु के नाम

केशवं मार्गशीर्षेतु पौषे नारायणं विदुः ॥

माधवं माघमासेतु गोविन्दमद्य फाल्गुने

चैत्र विष्णुं तथा विद्या वैशाखे मधुसूदनम्

त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः

लोकाः ३१८ कुगुणानलाश्व ३३१ षट् राम रामा ३३६ स्व  
 शशांक रामा ३१० सप्रांग पक्षा २६७ श्वगजाग्निदस्त्र २३८  
 मेषादि १२ राशिन का पल संख्या

मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३११	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्न की घटिकाओं की संख्या

माने मेषे अष्ट पंचक्रमान्नाडयः पलानि च ॥ वृषे कुंभे  
 विद्विषपृष्टिपंचदिडिपथुने मृगे ॥ धनुः कर्के शेषट्रिसिं  
 हाल्योः शरभूत्रयं ॥ वाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाडयः पलानि च ॥ २  
 मेषादि १२ लग्नों का क्रम

राशि	मे	वृ.	मि.	कं	सिं	कं	तु.	वृ.	ध	म	कुं	मी.
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

दिन प्रतिभुक्त पल जानने का क्रम

मानाजे सप्तषट् पंच पलानि विपलानि तु ॥ गोकुमष्टो  
 युगशरादि विंशतिर्नृयुममृगे ॥ कर्क चापे भवाः सूर्याः  
 सिंहाल्यो रुद्रदृडिभताः ॥ तुलागोदृक् च षट् त्रीणि लग्ने  
 ष्वकांशसम्मितिः ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्त लग्न कथनं

यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदयो भवेत् ॥  
 तस्मात्प्रथम राशिस्तु अस्त लग्नं तदुच्यते ॥ १  
 टीका ॥ जिस राशि के सूर्य होवही लग्न सूर्योदय में होती है और  
 उससे सातसी लग्न में सूर्य अस्त होता है उसे अस्त लग्न जानिये ॥ १

## लग्न से भुक्त लाना ॥

मकर लग्न वृष लग्न तिसको कोष्ठक में देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि र्द १३। २० कहिये मकर राशि की लग्न १३ अंश २० घटी होती है इस लग्न के अंश घटी में अयनांशाः २२। ५ मिलाने से सायन लग्न १०। ५। २५ हुई कुंभ राशि के अंक ५ घटी २५ सायन लग्न होती है लग्न के भुक्तांश ५। २५ कुंभ राशि का उदय २६७ इस गुणने से अंक हुआ १४४ र्द इनमें ३० का भाग दिया तो आया ४८। १२ यही अंक लग्न का भुक्त होता है ॥

## भोग्य भुक्त से दृष्ट लाने का क्रम ॥

भोग्य भुक्त योग १२१। २० सूर्य अथवा लग्न इस राशि के मध्यंतर का उदय २ धन ३९ र्द मकर ३१० इनका योग ६४ र्द भोग्य भुक्त योग १२१ इनमें मिलाया तो अंक हुआ ७६७ इस अंक में ६० का भाग दिया तो वह दृष्ट काल की घटा १२ पल ४७ हुआ इन पलों में वृत्तिके ५ पल जाड़ने में स्पष्ट दृष्ट काल १२। ५२ आजाता है ॥

## उदाहरण

## सायन सूर्य से भोग्य लाने का क्रम ॥

अंश	घटी	पल	इसमें सायन सूर्य के अंश घटाने से यह सूर्य दृष्टिक का है
३०	०	०	
२३	२२	१५	
६	२७	४५	

		३३१ गुणक
१६८६	२३१७	१६५५
२०८	६६३	१२२४
	१३२४७	भाग ६०) १४८६५ (घटिका का
	३४८	१२०
		३८६
		२४०
		४६५
		४८०
		१५ शेष पलें ॥
	भाग २६०) १२४६५ (अंश २०८	
	३२०	
	४६५	
	४८०	
	१५ शेष	

**दृष्टकाल**

धन ३३ई

का ३१० मिलावे

ई४ई

१२१ ये भुक्त भो मिलावे

भाग ई० १०६७ (१२ घटी

ई०

१६६७

१२७

४७

ई०

भाग ई० २४२० (४७ पल

२४०

४२०

४२०

**भुक्त भोग योग**

४८ १२ भुक्त

७३ ८ भोग

१२१ २० सूर्य लग्न

**उत्तर दृष्ट घटी का**

घटी पल

१२ ० ४७

**पूष्यवृत्तिका फल**

१२ ५२ उत्तर दृष्ट

**दृष्ट समय का तत्काल सूर्य साधन**

तत्काल भवस्तथाघाटदृष्ट्याः स्वरसे लब्ध कालो न संयुत स्यात्  
टी० ॥ दृष्ट घटी में सूर्य लगना होय तो उसको और उससे सूर्य की घटियों को  
गुणाकरना ई० का भाग देना जो लब्ध होय उसमें जो सूर्य गत होतो ही न  
करे और जो भोग म्य होय तो उसमें युक्त करे तव तत्काल सूर्य प्राजाता है

**उदाहरण ॥** शकः १७ ई० ई० कार्तिक शुद्धि ई० भौम वार के दिन प्रा  
तः काल का सूर्य ७।१।१७।१५ है तो कहो कि सायन सूर्य कतना होगा ॥

**दृष्ट घटी की गति का गुणाकार**

१२ पूर दृष्ट घटी

भा-ई० ७२० ३१२०

४७ ५६४ २४४४

७२० ३६८४ २४४४

**घटी पलों का भागाकार**

७२० ३६८४ ई० २४४४

ई२ ४० २४

७८२ ३७२४ (ई२ ४४

३६०

२१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्य काल निकल आवे उसके हि  
साब का क्रम ॥ ३० में सायन सूर्य के अंश घटाये २३।३५।१७  
तब यह रहे ई।२४।४३ भोग्यांश उदय ३३१ हुआ ॥

अंक  
१६८६  
१३६  
३०) २१२२ (७०  
३१०  
२२  
६० गुणांक  
३०) ३६० (४४  
१२०  
१२०

काला  
१२२४  
६६३  
७६४४  
२३७  
६०) ८१८१ (१३६  
१६०  
२९८  
१८०  
३८१  
२१

विकाला  
४३  
१३६  
भा. ३०) १४२३३ (२३७ काल  
१२०  
२२३  
१८०  
४३३  
४३०  
१३

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ॥  
इष्ट घटी १२।५२ इसके पल ७७२ इस अंक में भोग्य काल घटा  
या तो शेष अंक ७०।१।१६ धन राशि का उदय ३३६ वा मकर  
राशि का उदय ३१० इन दोनों का योग ३६४ शेष अंक में हीन कि  
या तो रहे ५५।३६ इन अंकों में कुंभ राशि का उदय २६७ घट नही  
सका इस लिये अशुद्ध उदय जानिये ॥

इष्ट घटी १२  
गुणांक ६०  
५२  
२२८  
७७२

भोग्य काल ७० ४४  
३३६ धन राशि का उदय ७०१ १६  
३१० मकर राशि का उदय ६४६ ५५ १६ इन अंकों में कुंभ

सो दृष्ट काल जाने और राचिमें लग्न अथवा दृष्ट काल निकाल  
ना हो तो सूर्य की राशमें ई मिलावे शेष क्रिया पूर्ववत् जानना ॥

(लग्नके शुभाशुभग्रहों का विचार)

लग्ने चंद्र खलारियो शशिसितौ सर्वेखे बुधोक्तोत्ये  
गुः करवमोष्टमाः कुज शुभाः शुक्रस्तृतीयो शुचे ॥ ला  
भे सर्वेखगाः शुभा अखिलगा ख्यारिगास्युः खलाश्च  
द्रव्यां बुधने श्रियेशुभहकेट्स्थान्मृत्युवेष्टारिगः ॥ १

टीका ॥ लग्नमें चंद्रमा और मंगलग्रह अथवा लग्न से षष्ठस्थानी शुक्र  
और चंद्रमा और सप्तमस्थानमें कीर्ति ग्रह होय दशमस्थानमें बुध हा  
दशमचंद्रमा चौथे राहु आठवें मंगल वा शुभग्रह और तीसरे शुक्र ऐसे  
ग्रह लग्नमें होय तो अनिष्ट शोचकारक अशुभग्रह जानिये ॥

लग्न से ११वें स्थानमें दृष्टग्राह ग्राह होय और निष्ठस्थानको छोड  
के और शेषस्थानमें शुभग्रह होय और तीसरे छोटे स्थानमें सूर्य और  
दूसरे तीसरे चौथे चंद्रमा होय तो शुभहै लक्ष्मी की प्राप्ति करे और ल  
ग्न का स्वामी अथवा अंश का स्वामी अथवा देष्काण का स्वामी ये  
ई या षवें स्थानमें होय तो मृत्यु दायक जानिये ॥ १ ॥

पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरनिष्टमादिश्यम् ॥

स्थानादि फलसमृद्धिश्चतुभिरपिकथ्यते वनेः १

टीका ॥ लग्नोंके पांचग्रह शुभस्थानी हों तो पुष्टि कारक होते हैं और  
अशुभस्थानी हों तो अरिष्ट कारक होते हैं और यदनादिक के मत से  
चारग्रह भी दृष्ट कारक शुभ जानिये ॥ १ ॥

षट् वगेशुद्धिजानने का क्रम ॥ ग्रहं होरा च देष्काणो नवांशो

द्वारं प्रांशकः ॥ त्रिंशां प्रांशेति षड्गोस्त्वसास्यग्रहजाशुभाः

टीका ॥ प्रथम जाननेमें १ होरा १ देष्काण २ नवांश ३ द्वादशांश ४ त्रिंशां  
श ५ और ग्रह ६ इन छः वर्गोंमें शुभग्रह के वर्ग शुभ होते हैं और अशुभ  
ग्रहके वर्ग अशुभ होते हैं ॥ त्रिंशां प्रांशदिकथनं ॥

त्रिंशद्भागत्सकं लग्नं होरात् स्याद्द्वमुच्यते ॥



लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
१०	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	वृ.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
२०	सू.	वृ.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	वृ.	चं.
३०	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	वृ.	शु.	मं.

सप्तमंशकथनं ॥ श्लो ॥ श्रीजगद्गुरुः स्वराशाद्यासमे सप्तमंशकः  
 टीका ॥ विषम राशि में अपनी राशि से सप्तमंशक जानिये ॥  
 और सम राशि में सातवी राशि से लेके जानिये ॥ सप्तमंश

लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
१५	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
१७	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
१८	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
१९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९

नवांशक कथनं

मेष सिंह धनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ॥  
 वृषकन्या मृगश्रवणे मकरान् नवमांशकाः १  
 कर्कालिनीन लग्नेषु नवांशाः कर्कत स्मृताः  
 नृपुंसतौलिकुम्भेषु तौलिनः स्युर्नवांशकाः

टीका ॥ मेष सिंह धनु इन लग्नोंको नवांश मेष से गिनिये और  
 वृषकन्या मकर इनका नवांश मकर से जानिये मिथुन तुला कुम्भ  
 इनका तुला से जानिये कर्क वृश्चिक लीन इनका कर्क से जा-  
 निये सूर्य मंगल शनि इनका नवांश मृगश्रुम जानना चाहिये ॥ १॥ २

लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
१०	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	वृ.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.
२०	सू.	वृ.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	वृ.	चं.
३०	वृ.	श.	श.	वृ.	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	वृ.	शु.	मं.

सप्तमशकधनं ॥ श्लो ॥ श्रीजगन्मोक्षदायकसप्तमशकितः  
 टीका ॥ विषम राशि में अपनी राशि से सप्तमशक जानये ॥  
 और सम राशि में सातवी राशि से लेके जानिये ॥ सप्तमश

लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
२८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०

विषमत्रिंशांशकथनं ॥ श्लो ॥ कुजार्कगुरुविक्रुकात्रिं  
 शांशापतयः क्रमान् ॥ पंचपंचाशदशैलेषुभागानां विषमग्रहं  
 टी ॥ विषमलग्नमें पहले मंगल के पांच अंश तिसके पीछे शनि के पांच  
 अंश तिसके पीछे बृहस्पति के ८ इसके पीछे बुधके ७ अंश इसके आगे  
 शुक्रके ५ अंश इस क्रमसे विषमराशिमें त्रिंशांश जानना ॥ १॥

विषम	मं.	श्रा.	बृ.	बु.	शु.	त्रिंशांश
भाग	५	५	८	७	५	भाग

समत्रिंशांश ॥ श्लो ॥ शुक्रलग्नाकी भू पुत्रास्त्रिंशांश  
 पतयः समे ॥ पंचांगाध्वेषु पंचानां भागानां कथितो बुधः  
 टी ॥ समराशि के त्रिंशांशमें प्रथम ५ अंश पर्यंत शुक्र है इससे आगे  
 बुध ७ पर्यंत इससे आगे बृहस्पति ८ पर्यंत इससे आगे शनि ५ पर्यंत  
 इससे आगे मंगल ५ पर्यंत इस क्रमसे समराशिमें त्रिंशांश जानिये २

समराशि	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	मंगल	समराशि
भाग	५	७	८	५	५	भाग

उक्तांशाः ॥ श्लो ॥ शैबे षट् षटी बृधे विहगिनाहं द्वाद्वि  
 गोकी ग्रयः कीटे र्क गंगवाद्रयो की भवने गाश्रवास्त्रियां  
 अर्क षट् ॥ जर्के कीटि र्क गंगवाद्रयो की भवने गाश्रवास्त्रियां  
 गोद्वयो नके शास्त्र्यरुगा घटे र्क षट् षटी मीने द्विगो वट् शुभः  
 इसका अर्थ इसचक्रसे जानना सुगम है ॥

उक्तांशाः	ने.	रु.	मि.	र्क.	सिं.	कं.	तु.	ह.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	२	७	४	६	३	१२	६	३	३	१२	७
कला	७	३	६	६	७	१२	७	७	६	१२	२	६
विकला	०	१२	१२	६	०	६	६	६	६	०	०	६

षट् वर्ग पंच वर्ग वा चतुर्वर्ग मथपिदा ॥  
 कैश्चिद्वि वर्ग सत्प्रोक्तं व्येक वर्गं तदुत्पत्तं १  
 टीका ॥ कोई ६ वर्ग कोई ५ वर्ग कोई ४ वर्ग लग्नके होय तो वली षट्

अष्टमस्थानी और गुरु शानि ये वार और क्रांति साय्य दिन इत्यादि दुष्ट योग छोड़िके शुभ है और किसीके मनमें विप्रादिकके अति संकटमें वर कन्या होय तो गोरज शुभ है ॥१॥

**वधू प्रवेशमाह**

**विवाहमारभ्य वधू प्रवेशो युग्मे यवाशौ  
उशवासरांतात् ॥ तदूर्ध्वमध्ये युजिपंचमां  
दत्तः परस्त्रान्धियमोनचास्ति ॥ १ ॥**

टी०॥ विवाहसे सम १६ दिवस पर्यंत वधू प्रवेश कहा है अग्रे ५ वर्ष पर्यंत विषममासादिक रहे हैं इससे सेच्छा जानना ॥१॥  
उक्तमासादि ॥ माघ फाल्गुन वेशाख शुक्ल पक्ष शुभे दिने ॥ गुरु वीरदित्य विभुद्वौ स्यात् नित्यं पत्नी द्विरागमः ॥ टीका ॥ माघ फाल्गुन वेशाख और शुक्ल पक्ष शुभदिन गुरु आदि अस्तवर्जित में द्विरागम कहा है ॥१॥

**नीहारां शुयुगुत्तरादिति गुरु ब्राह्मणानुराधाश्विनी  
शुक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणात्याङ्घ्रिप्रशस्तेतिथौ  
कुंभाजालिगतेरवौ शुभकरे प्राप्नोदये भार्गवे जीव  
ज्ञास्फुजितां दिने नव वधूवेशमः प्रवेशः शुभः १**

टी०॥ मृगशिरा तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अश्लेषा श्रवणी ज्येष्ठा हस्त स्वानि श्रवणा पौर्णमिषा चित्रा ये नक्षत्र और कुंभमेघ ह्रिक इतराशोंके सूर्य होंय और शुक्रादिक का उदय होय और गुरु बुध चंद्र ये वार ऐसे शुभ दिवस में वधू प्रवेश करावे ॥१॥

**नूतन पल्लवधारण का सुहृत्:**

**हस्तादिपंचमृगपूयमदस्वभेषु विष्णुद्वये बुधदिने  
गुरुशुक्रवारे ॥ स्त्रीणां शुभं प्रथमपल्लवधार  
णं स्यात्प्राणिगहोक्तसमये खलु पीतवस्त्रे ॥ १ ॥**

टी०॥ हस्तसे पांच मृगशिरा पुनर्वसु अश्विनी श्रवणा धनिष्ठा धनिष्ठा और गुरु बुध शुक्र ये वार और वे ग्रह हों पत्नी विचारकाल में

अथवास्तु प्रकरणां ग्रामादि अनुकूलं

ग्रामादिरनुकूलत्वं दिशो भूतग्रहस्य च ॥ भा

सधियायादि शुद्धिं च वीक्ष्याय व्ययभांशकान् १

टी० ॥ ग्राम दिशा और शुभ ग्रह इनके अनुकूल दिरविके मासवानह  
च शुद्धि और आय व्यय वा लग्न अंश शुद्धि शुभ देखि लीजे ॥ १ ॥

ग्रह बलं

गुरुशुक्रार्कचंद्रेषु स्वोच्चादिबलशालिषु ॥

गुर्वकेदुबलं लब्धाग्रहारंभः प्रशास्पते ॥ १

टीका ॥ गुरुशुक्रसूर्यचंद्र इनका बल पाकर ग्रहका आरंभ करना  
शुभ है ॥ १ ॥

वर्ज्यानि

विवाहोक्ता न्महादोषान्मृतेजामित्रशुद्धितः

रिक्ताकुजार्कवारीचचरलग्नचरांशकम् १

टीका ॥ जामित्र शुद्धि वचा के विवाह के जो दोष कहे हैं वे सब वर्जित  
करिके और रिक्ता तिथि भौमवार रविवार लग्न और चर लग्नों के  
अंश ये वर्जित हैं ॥ १ ॥

त्यक्त्वा कुजार्कयोः प्रांशं पूषे चाग्ने स्थितं विधुः

बुधे ज्ये राशिगं चार्कं कुर्याद्देहं शुभाप्तये ॥ १

टीका ॥ सूर्यमंगलका अंश और पीछे स्थित जो चंद्रमा सो वर्जि  
त है मिथुन कन्या धन मीन इन राशिनका सूर्यग्रहारंभ करनेमें शु  
भ है ॥

(द्वारशुद्धिः)

द्वारशुद्धिं निरीक्ष्यादौ भेषुद्धिं च चक्रतः

निस्यं च के स्थिरे लग्ने चंगे चालयमारभेत् १

टीका ॥ प्रथम द्वार शुद्धि और चक्र से नक्षत्र शुद्धि देखकर पंचक्रहि  
त स्थिरवाहि स्वभाव लग्नमें द्वारका आरंभ कीजे ॥ ग्रामानुकूलं ॥

स्वनामः शोभाः ॥ शिर्दिशरां केशदिडिभः

संग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततो न्यथा

टीका ॥ अपनी राशि से राशिका १९११० जिस ग्रामकी राशि होय वह

सं.	मास नाम	मास नाम	मास सूर्य	मास विष्णु	मास शैवीकेन
१	चैत्र	मघ	केवांग	विष्णु	रमा
२	वैशाख	माघ	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इंद्र	त्रिविक्रम	पद्माक्षी
४	श्राषाढ	शुचि	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण	नभ	गमस्ति	श्रीधर	कान्तिमती
६	भाद्रपद	नमस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विन	ईष	सुवर्णरेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशिर	सह	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौष	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघ	तप	अरुण	माधव	रुक्मिणी
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	गोविन्द	धान्नी

टीका ॥ जिस महीने में पांच रविवार होय तो राम जानिये - और जिस महीने में पांच मंगलवार होय तो बडा भय होय - जिस महीने में पांच शनीचर होय तो दुर्भिक्ष पडे - और बुध गुरु शुक्र ये वार होय तो शुभ को देते हैं ॥ १ ॥

### पक्ष

पूर्वापरे मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सित  
नील संज्ञौ ॥ पूर्वस्तु देवस्तु परश्च पैत्र्यः  
केचित्तु कृष्णे सितपंचमीतः ॥ १ ॥ आदौ  
शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णोपि मासके २

टीका ॥ शुक्ल पक्ष की पड़वा से लेके पूनों तक शुक्ल पक्ष कृष्ण पक्ष की पड़वा से लेके मावस तक कृष्ण पक्ष शुक्ल पक्ष में देव कार्य करे कृष्ण पक्ष में पैत्र्य कार्य करे दो पक्ष मिलके एक महीना होता है शुक्ल पक्ष की पंचमी से लेके कृष्ण पक्ष की पंचमी तक शुभ है कृष्ण पक्ष की पंचमी से लेके शुक्ल पक्ष की पंचमी तक मध्यम है ॥ २ ॥

करे और अपने नाम का वर्ग मित्वा वि८ का भाग दे इन दोनों से से जो शेष बचे सो अर्थ दाता जानिये अर्थात् कमती वाले से रखा जानिये ॥

**चंद्रमा के मुख जानने का क्रम**

**वह्निमेवात्र मक्षस्थे चंद्रे पाम्योत्तराननम्  
पिच्याद्वा सवतस्तद्वाग्यरास्याद्गृहं शुभम्**

टी०॥ कृत्तिका से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का मुख दक्षिण की ओर अनुराधा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का उत्तर की मुख और रमघा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का पूर्व मुख और धनिष्ठा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का मुख पश्चिम को शुभ है ॥

**आयादि साधन**

**गृहे शकरमानेन गृहस्यायादि साधयेत्  
करे श्वेत्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा**

टी०॥ गृह के स्वामी के हाथ प्रमारा से अथवा अंगुलमान करके ३ अथवा आयादि साधन करे ॥

**क्षेत्र फल**

**विस्तारगुणितं देर्ध्यं गृह क्षेत्रफलं भवेत्  
तत्क्षेत्रं सुभिर्भक्तं शेषमापो ध्वजादिकः**

टी०॥ ध्वजा से आदि आय के साधन का प्रकार चौड़ाई लंबाई अथवा लंबाई चौड़ाई को आय से गुणाने से क्षेत्रफल जानना और उस में ८ का भाग देने से शेष बचे सो ध्वज आदि आय जानिये ॥१॥

**आयों के नाम**

**ध्वजो धूमोप सिंह श्वासेरभयः खरोगजः  
धांसश्चैव क्रमेणोत्तरायाष्टकमुदीरितम्**

टी०॥ ध्वज १ धूम २ सिंह ३ खान ४ वैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ याक मकरिके आयाष्टक जानिये - वर्गों के अनुसार आय जानिये ॥१॥

**ब्राह्मरास्यध्वजो ज्यो सिंहो वैशत्रियस्य च  
वृषभश्चैव वैश्यास्य सर्वेषां तु मजसृतः १**

टी०॥ ब्राह्मणों को ध्वज आय क्षत्रियों को सिंह आय वैश्यों की वृषभ आय

ऊपसे जानना ॥१॥

(ग्रहों के नाम)

गृहस्य पूर्वतो दिक्क कनात्क श्याब्धिदंतेनः॥

संस्थाप्यात्तिदं जानं कांस्तन्मित्या षोडशगृहाः

टी०॥ ग्रहों के पूर्व दिशा ऊपसे अंक स्थापित करे वैसे अंक पूर्वकी रहसिया की २ पश्चिम की ३ उत्तर की ४ ऐसे चारों दिशा को स्थापित करे और जिस ओर को गृह का मुख होय तिस दिशा के अंक मिलावे ता ला की संख्या अधिक रफ करके मिलावे जो अंक होय सोई घरकान मजानिये ॥१॥

गृहों के नाम

ध्रुवं धान्यं जयं नंदं रवरं कांते यनो रसं ॥ सुसुरवं दुर्मुखं

शूरं रिपुदं धनदं स्वयं ॥ श्याकंदं विपुलं ज्ञेयं विजयं

चेति षोडशः ॥ गृहं ध्रुवादि कं ज्ञेयं नाम तुल्य फल प्रदं १

टी०॥ इन ग्रहों के ध्रुव धान्य जय इत्यादि १६ नाम हैं इनका शुभ शुभ नाम के अनुसार जानिये ॥१॥

(अंशालाने का प्रकार)

व्ययेन संयुते क्षेत्रे गृहनामाक्षरान्वितो ॥

विभिर्भक्तांशका सेषां द्वितीयो शोभशोभनः

टी०॥ पीछे व्यय होय उसे क्षेत्र फल में मिलावे और गृहों के नाम के अक्षर मिलाके ३ का भाग दे शेष दो वचें तो अशुभ और एक वा पूर्णा वें तो शुभ फल जानिये ॥१॥

गृहों के भाग

नवभागं गृहं कुर्यात्पंचभागं तु दक्षिणे ॥

द्विभागं वापि तः कुर्यात्क्षेत्रं द्वारं प्रकल्पयेत्

टी०॥ गृह क्षेत्र के नव भाग करिके पूर्व तिसमें से पांच भाग दक्षिणाके २ भाग उत्तरको और १ भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करे गृहोंकी १

गृहों के द्वार

द्वारस्थो परिषद् द्वारं द्वारस्थान्यत्र सन्मुखम्

लक्ष्यं हंतुं यशस्तच्च न कर्तव्यं शुभे शुभिः ॥१॥

टी०॥ द्वार के ऊपर द्वार और आसने सामने के द्वार व्यय रायक ही ते हैं शुभाभिलाषी पुरुषों को ऐसे घर न बनावने चाहिये ॥१॥



तिच लक्ष्मी कुर्मुश्चैत्राद्या गृहारंभकाले ॥१॥

टी०॥ चैत्रमें शोक वैशाखमें धन ज्येष्ठमें मृत्यु आषाढमें पशुहानि  
 आवणामें दुख प्राप्ति भाद्रपदमें दरिद्र आश्विनमें कलह कार्तिकमें  
 मृत्यु नाश मार्ग शिरमें धन प्राप्ति पौषमें लक्ष्मी माघमें अग्नि भय फा-  
 ल्गनमें लक्ष्मी इस प्रकार मासोंमें शुभाशुभ फल जानिये ॥१॥

(दिशाके अनुसार गृहोंका मुख करना)

कर्क मकर हरिकुंभगतके पूर्व पश्चिम मुखानि गृहारीणि  
 तौलिमेष वृष वृश्चिक पाते दक्षिणोत्तर मुखानि बंदति १  
 टी०॥ कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंके सूर्यमें पूर्व अथवा पश्चि-  
 मको घरका द्वार करे मेष तुल वृष वृश्चिक इन राशियोंके सूर्यहोंय तो द-  
 क्षिणा वा उत्तरमें घरका द्वार करे इस प्रकार रत्न मालग्रंथमें लिखाहै १

गृहारंभके नक्षत्र

अुत्तरां मृग रोहिण्यपुष्यमेत्र करत्रये ॥ धनिष्ठा  
 द्वितीये पौष्मे गृहारंभः प्रशस्यते ॥ १ ॥ अहित्यभौम  
 वर्ज्यं तु सर्वे वाराः शुभावहाः । चंद्रादित्य वल लब्धा  
 लग्ने शुभ निरीक्षिते स्तभोच्छ्रायस्तु कर्तव्यं स्वान्पत्तु  
 परिवर्जयेत् प्रासादेव च मेव स्यात्कूपवापीषु चैव हि २  
 टी०॥ तीनों उत्तरा मृग शिर रोहिणी पुष्य अनु अनु राधा हस्त चित्रा स्वाति  
 धनिष्ठा प्रात भिवारे व तीये नक्षत्र शुभ हैं और रवि भौम ये वार वर्जित  
 शेष वार शुभ हैं और स्थिर लग्नमें करे स्तभारोपण देवालय कूप तडा  
 गवापी इन कृत्योंमें शुभ हैं ॥२॥ (वृषचक्रं)

त्रिवेदाधि त्रिवेदाधि द्विविभेदकेतः शशी ।

कुर्यात्लक्ष्मी समुदासंस्थे र्यं लक्ष्मी दरिद्रताम्

धनं हानिं क्रमान्मृत्यु मारं भेद्य चक्रकम् ॥ १ ॥

टी०॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रताई गिने प्रथम भागमें तीन लक्ष्मी  
 दायक दूसरे भागमें ४ उहासन का तीसरे भागमें ४ स्थिरता कार  
 क चौथे भागमें ३ लक्ष्मी पांच में ४ दरिद्र छठे धन दायक

तव नेत्ररूप को राभं रान करवे इस प्रकार नीव धरे ॥१॥

दुष्ट योग ॥ वज्र व्याघात मूलश्रु व्यती पातश्रुगं -

दुक ॥ विष्कुंभ परिघो वज्रवीं वरिभंगलभास्त्रो

री ॥ वज्र व्याघात मूल व्यती पात गंड विष्कुंभ परिघ और मंगल रवि ये वर्जित हैं ॥१॥ (कर्मचक्रं)

तिथिस्तु पंचगुणित्वा कृतिकाथ श्री संयुता ॥ तयाद्वाद

शुभि प्राच नव भागेन भाजिता ॥ फल ॥ जले वेदायुनि

श्रुदुस्थले पंच द्वयं वक्तः ॥ त्रिषु नवजा काशे विविधं

कूर्मलक्षणां ॥ जले लाभस्तथा प्रोक्ताः स्थले हानिस्त

थैव च ॥ आकाशे भरां प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकर्म ॥१॥

टीका गृहारंभ की तिथियों को पांच से गुणा करे और कृतिका जल स्वत

क संख्या को मिलावे फिर १२ खिलावे और ८ का भाग दे जो शेष रहे ४

अपूती जल स्थान में कूर्म जानिये ताको फल लाभ कारक है और ५ वा ८

ये दवे तो स्थल में जानिये ताको फल हानि कारक है और ३ दी ८ ये

दवे तो आकाश में कूर्म जानिये ताको फल मरणा है इस प्रकार विदि

ध कूर्म के लक्षणा जानिये ॥१॥ (स्तंभचक्रं)

सूरी धिष्ठित भद्रयं प्रथमतो मध्ये तथार्चि प्राति

स्तंभायै रस संख्यया मुनि वरै रक्तं मुहूर्त शुभम्

स्तंभायै मरणां भवेत् गृह पतेर्मूले धनार्थं क्षयो म

ध्ये चैव तु सर्वे सौख्यम तुलं प्राप्नोति कतो सदा ॥१॥

टीका सूर्य के नक्षत्र से दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम तिसमें

प्रथम दो नक्षत्र स्तंभ के मूल के तिसका फल धन क्षय और दूसरे

२० नक्षत्र स्तंभ के मध्य के तिसका फल लक्ष्मी और कीर्तिकी प्राप्ति

तीसरे नक्षत्र स्तंभ के अग्र भाग के तिसका फल मरणा कारण इसरीति से स्तंभारोपण करना ॥१॥ (देहली रचने का मुहूर्त)

मूले भोने विष्कृ सं गृह पति मरणां पंच गर्भे सुरवं स्यात् मध्ये देया षडक्ष धन सुरव सुरवदं पुच्छं देशे य हानिः

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने पहले ३ सूर्य के अशुभ दूसरे ३ बुध-शुभ तीसरे तीन ३ भुगु शुभ चौथे ३ शनि अशुभ पांचमें तीन ३ चंद्रमा शुभ छठे ३ मंगल अशुभ सातमें ३ गुरु शुभ आठवें ३ राहु अशुभ नवमें ३ केतु अशुभ है ॥१॥

॥ गृह प्रवेश का मुहूर्त ॥

अथ प्रवेशे नवमंदिरस्य यात्रा निवृत्तावयभूपतीनाम् ॥

सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्तवचनं भूतवलिचकारयेत्

टी०॥ यात्रा और राज दर्शन के मुहूर्त में उत्तरायन सूर्य होने में प्रथम वास्तु पूजा और भूतवलि करके नवीन गृह में प्रवेश करना योग्य है १

चित्रानुराधामृगश्रैष्णवस्वातीश्रविष्ठाश्रवणीचमूलम्

वारेश्वसूर्याक्षितिजेथ रिक्तातिथौ प्रशस्ती भवन प्रवेशः १

टी०॥ चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती पुष्य स्वाति धनिष्ठा श्रवणा मूल ये नक्षत्र रवि भौम ये चार और रिक्ता तिथि इनको छोड़ के गृह प्रवेश करना

कलशचक्रम्

प्रवेशे कलशे चक्रं चक्रं पादेषु क्रमात् ॥

अशुभं च शुभं ज्ञेयं मशुभं च शुभं तथा ॥१॥

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक जो नक्षत्र होय उनमें प्रथम धनक्षत्र अशुभ जानिये और आठ नक्षत्र शुभ आगे आठ फिर अशुभ शेष ६ शुभ इस प्रकार कलशचक्र में जानना ॥१॥

वामार्क लक्षणां

रंध्रात्पुत्राद्गनादायात्पंचसकं स्थिते क्रमात्

पूर्वाप्रादि मुरवंगेहं विप्रोद्दामो भवेदतः ॥१॥

टी०॥ घर में प्रवेश करने के समय सूर्य बायां होय तिसके जानने का क्रम प्रवेश लग्न में ८वें स्थान से ५वें स्थान तक पूर्व द्वार वारे को शुभ और दक्षिन के द्वार वारे को ५वें स्थान से ५ स्थान तक शुभ पश्चिम द्वार वारे को दूसरे स्थान से पांच स्थान तक शुभ उत्तर द्वार वारे को एकादश स्थान से ५ स्थान पर्यंत वामार्क होता है सो प्रवेश काल में शुभ है ॥१॥

स्वर्क्षगेहिभगोलाभेसुरेज्येकेन्द्रसंस्थिते ॥

धनधान्ययुतागृहेसुतागोग्यचिरंभवेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ कर्ककाचंद्रमा ११वें स्थानवें होय वा गुरु केन्द्रमें होय ऐसी लगनमें गृहारांभ होय तो धनधान्ययुक्त सुतागोग्य सहित चिरकाल रहै ॥ १ ॥

स्वोच्चवर्तिनिभृगौ विलग्नगेदेवमंत्रिणिरसातले धवा  
स्वोच्चगेरविसुतेथवायगे स्यास्थितिश्चसुचिरंसहत्रिया

टीका ॥ शुक्रलग्नमें बृहस्पति ४ स्थान शनि स्वगृही हो ऐसी लगनमें लक्ष्मीयुक्त चिरकाल रहै ॥ १ ॥ (पृथ्वी शोधनेका प्रकारः)

कुंडार्थपृथ्वीपरिशोधनतवेप्रष्टमृवाद्यः प्रथमंस्फुटाभ  
वेत् ॥ वर्गोदिवर्णाः किलतद्दिशिस्मृतं शाल्यं मुनीद्वैहृप  
यैस्तुमध्यतः ॥ १ ॥ स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टवचनस्याद्यमक्ष  
रं ॥ गृहीत्यातुततः शाल्याशाल्यंसम्यग्बिचार्यते ॥

टीका ॥ कुंड के निमित्त अर्थात् नवीन घर के बनाने को प्रथम धरती शोधन करे पृच्छक दृष्ट देवता का स्मरण करके प्रष्टम करे ब्राह्मण सेता के मुख का आदिका अक्षर जिस वर्ग का निकले तिसका उत्तर अक्षर चटत पय श वर्गो पूर्वादि अष्ट दिशाओं में जाने मध्यमें हृपय वर्गों के आदि अक्षर जहां होय विस स्थानमें शाल्य है तिसका प्रकार नीचे लिखा है तिसमें से दो दो स्थानों को जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशाल्यं तदा भवेत् ॥ सार्धहस्त  
प्रमाणेन तच्च मानुष्यमृत्युक्तं १ आग्नेयां दिशिकः प्रष्टो  
स्वरशाल्यं कर हृये ॥ राजद्वो भवेत्त्रभयं चैव निवतते ॥ २ ॥  
यास्याथां दिशि चः प्रष्टे तदा स्यात्कति संस्थितं । नरशाल्यं  
गृहे तस्य मरणं चिरोगतः ३ नैऋत्यां यदि टः प्रष्टे सार्धह  
स्तद्व्यस्थले । श्रुनो स्थिजायते तत्र बालानां जायते मृतिः ।  
तः प्रष्टे पश्चिमायां तु शिशोः शाल्यं प्रजायते ॥ सार्धहस्ते गृ  
हस्वासीनतिष्ठति सदा गृहे ४ वायव्यां दिशि पः प्रष्टे तेषां गा  
रुश्चतुष्करे ॥ कुर्येति सित्रजाश चतुःस्वप्नदृष्टानं सदा ॥ ६ ॥

यात्रा में सन्मुख शुक्र होय तो कुछ दोष नहीं है ॥ १ ॥

यौषाण्यवग्नि पादांत या वृत्ति एति चन्द्रमाः ॥

तावच्छुक्रो भवेदंधः सन्मुखं गमनं शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती अश्विनी कृत्तिका इन नक्षत्रों के प्रथम चरण में शुक्र ग्रहा होता है उसके सन्मुख गमन में दोष नहीं है ॥ १ ॥

दक्षिणोदुःखदः शुक्रः सन्मुखे हंतिलोचनः ॥ वा

मेपृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेदस्तमः शुभः ॥ १ ॥

टीका ॥ जाने में शुक्र दाहना होय तो दुःख दायक सन्मुख नेत्र पीडा का रक बायें और पीछे शुभ जानना - और जो पश्चिम में अस्त होय तो पूर्व को उत्तम जानिये और जो पूर्व में अस्त होय तो पश्चिम में उत्तम जानना ॥ १ ॥

घात प्रकरणां ॥ प्रयाण काले युद्धे च कृषौ वाणि

ज्य संग्रहे । वदि चैव गृह्णामे वर्जयेत् घात चंद्रमाः

टीका ॥ यात्रा में युद्ध में व्यापार में खेती करने में धान्य संग्रह करने में वाद विवाद समय में गृह्णामे के समय में घात चंद्र वर्जित है ॥ १ ॥

घात तिथिं घात वारं घात नक्षत्रमेव च ॥

यात्रायां वर्जयेत् प्राज्ञैरन्य कर्म सुशोभनम्

टीका ॥ यात्रा समय में घात वार नक्षत्र तिथि वर्जित है और में शुभ जानिये ॥

मेषे रविर्मघा प्रोक्ता षष्ठी प्रथम चंद्रमाः ॥ नृषभे पंच

मोहस्त चतुर्थी शनिरेव च ॥ १ ॥ मिथुने नवमः स्वाती

अष्टमे चंद्रमासरः ॥ कर्के द्विनुराधा च बुध षष्ठी प्र

कीर्तिता ॥ २ ॥ सिंहे षष्ठे चंद्रमाश्च दशमी शनि मूलके

कन्यायां दशमश्चंद्रः श्रवणः शनि र छमी ॥ ३ ॥ तुले गुरु

रुर्द्वादशी च शत तृतीय चंद्रमः ॥ वृश्चिके रेवती सप्तदशमी

भार्गवस्तथा ॥ ४ ॥ धने चतुर्थो भरणी द्वितीया भार्गवस्तथा ॥

मकरे छमो रोहिणी द्वादशी भौम वासरः ॥ ५ ॥

कुम्भे एकादशश्चाङ्गी चतुर्थी गुरु वासरः ॥ मीने च

द्वादशीः सापि द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ६ ॥ ५ ॥

सत्वंतु चंद्रगुरुवोकुजभृगुराजसोगुणोघातः

रविशनिचंद्रसुतानां राशीनांतामसोनेष्टाः १

टीका ॥ दृहस्यतिवारसोमवारकोसतोगुणघातमंगलवाशुक्रको  
रजोगुणघातरविवारशनिवारबुधवारकोतमोगुणघातजानना ॥ १

धनुर्मीनकुलीराणाघातः सत्योविनिर्दिशेत्

तुलालिवृषमेषानांघातोरजसिनिश्चितम् ॥

कन्यामिथुनसिंहचकुम्भस्यमकरस्थच ॥ ॥

घातस्तमसिवेलायांविपरीतेशुभप्रदः ॥ २ ॥

॥ टीका ॥

	रजो.	सतो.	तमा.	सतो.	रजो.	तमा.	गुण
रा.	१	४	३	च	भोम	सूर्य	वारः
श.	२	६	५	द्र	भृगु	शनि	
या.	७	९	९	दृह		बुध	

होराकथनंशकुन ॥ वारात्षष्टस्यसष्टस्यहोरासाद्द्विनाडि  
का। अर्कशुक्रोबुधश्चंद्रोमंदोजीवधरासुतो १ गुरुविवाहेगम  
नेचशुक्रोबोधेसौम्यः सर्वकार्येषुचंद्रः। कुजेचयुद्धेगविराज  
सेवामंदेचविज्ञेइतिहोरायोगः। यस्यगृहस्यवारेपिकर्मकिंनि  
त्प्रकीर्तितम् ॥ तस्यगृहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ३ ॥

टीका ॥ जिसवारकाहोराहोयउसीमेंप्रथम२घटिकाहोरातिसकेछ  
टेवारकीदूसरीहोरादूसीक्रमसेदिवसके१२होराजानियेरविकीहोरा  
राजसेवाकोशुभदूसरीशुक्रकीगमनकाशुभतीसरीबुधकीज्ञानप्राप्ति  
कोशुभचौथीचंद्रमाकीसर्वकार्यकोशुभपांचवीशनिकीद्रव्यसंग्रहकोशु  
भछठीगुरुकीविवाहकोशुभसातवीमंगलकीहोरायुद्धकोशुभदसप्रमाण  
होराकाक्रमजानियेऔरजिस२ग्रहकाजोजोवारजिसमेंकहाजोकर्मसो  
उसकीहोरामेंकरवै ॥ १ ॥ (सूर्यकाहोरा)

सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच ॥

काकत्रयद्वौनकुलौतथैवचाषस्तथैकोवृषभस्तुगौश्व १

पिशाचगृध्रीविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः १  
टीका ॥ शनिकीहोरमेंनग्नमुसलमानखस्वलास्त्रीप्रेतपिशाचगीध  
पक्षीविधवास्त्रीअग्निनपुंसकप्रचंडतरुणपुरुषये प्राकुन मिलें ॥ १ ॥

(मनु का वाक्य)

गमनं प्रति राजंस्तु सन्मुखादपानेन च ॥ प्र  
तस्तां श्रैव संभाषत्सर्वान्नेताश्च कीर्तयेत् १

टीका ॥ मनु का वाक्य राजा प्रति कहते हैं - गमन काल में पूर्वोक्त  
प्राकुनों का कीर्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन  
न होय तो मन में स्मरण करके गमन करे तो शुभ है ॥ १ ॥

(वागनुसारवस्त्रधारण)

रवौ नीलबुधे पीतकृष्णवर्णांशुनिश्चरे ॥ श्वे  
तंगुरौभृगौभौमे रक्तं सोमे तु चित्रकम् ॥ १ ॥

टीका ॥ रववार को नीला वस्त्र-बुधको पीत-शनिको काला गुरु  
शुक्रको श्वेत पीत-मंगलको रक्त सोम को चित्रविचित्र इस प्रकार व  
स्त्रधारण करके गमन करे ॥ १ ॥ (यात्राप्रकरण)

हस्तं दुमैत्रश्रवणाश्चिष्यपौत्मश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥ प्रो  
क्ता निधिष्यानि नवप्रयाणेत्यक्त्वा त्रिपंचादिमसप्तताराः

टीका ॥ हस्त मृगशिर अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य खती धनिष्ठा  
पुनर्वसु ये नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ हैं परंतु ३, ५, ७ ये तारा नेष्ट हैं ॥ १ ॥

रोहिणी उत्तरा चित्रा मूलमार्द्रा तथैव च ॥ षा  
ढौत्राभाद्रविश्वे प्रयाणो मध्यमास्मृताः ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी उत्तरा चित्रा मूलमार्द्रा पूर्वाषाढ उत्तराभाद्रपद उत्तरा  
षाढ ये नक्षत्र यात्रा में मध्यम जानना ॥ १ ॥

त्रीणि पूर्वामघाज्येष्टाभरणी कृत्तिका तथा स  
र्पः स्वातिविशाखा च नित्यं गमनवर्जिताः ॥

टीका ॥ तीनों पूवा मघा ज्येष्टा भरणी कृत्तिका श्लेषा स्वाति विशा  
खा ये नक्षत्र यात्रा में वर्जित हैं ॥ १ ॥ (प्रावण्यके वर्ज्यानि)

भौमार्कभृगुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमं दिशाम्  
टीका ॥ पश्चिम दिशा को रोहिणी पुष्य षष्ठी ई चतुर्दशी १४ मंगल  
रवि शुक्र इनमें न जाय ॥ १ ॥

करे चोत्तरफाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा । बुधो  
रवौ भौमवारेन गच्छेदुत्तरं दिशाम् ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ हस्त उत्तरा फाल्गुनी दूज २ दशमी १० बुध रवि भौम इन में  
उत्तर दिशा को गमन न करे ॥ १ ॥ (विदिकशूल)

दृशान्यां ज्ञे शनौ शूलैः प्राग्नेय्यां गुरु सामयोः वाय  
व्यां भूमि पुत्रेषु नैऋत्यां शुक्र सूर्ययोः ॥ १ ॥

टीका ॥ बुध शनि में दृशान को वर्जित है गुरु और सोम वार में प्राग्नेय  
कोण में गमन कीजिये मंगल को वायव्य में शुक्र और रवि को नैऋत  
दिशा को गमन कीजिये ॥ १ ॥ (शूलदोषनिवारणभक्ष्य)

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमेयस्तथा ॥ गुडमंगारवारे तु बु  
धवारे तिलानपि ॥ गुरुवारे दधि ज्ञेयं भृगुवारे यवानपि ॥ मा  
षान्मुक्त्वा शने वारैः शूलदोषोपशान्तये ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ सूर्यको घी सोमको दूध मंगलको गुण बुधको तिल दृहस्पतिको  
दधि शुक्रको जव शनिको माष ये भक्षण करके गमन करे तो शूल दोष  
दूर होय ॥ २ ॥ (कुंभमीनके चंद्रमा में वर्जित कर्म)

शय्या वितानं प्रेताग्नि क्रिया काष्ठ तृणा जिनम्  
याम्यदिग्रामनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभमीनगे ॥ १ ॥

टीका ॥ पलंग वुनाना और प्रेत क्रिया और तृण काष्ठसंग्रह दक्षिण  
को गमन ये काम कुंभमीनके चंद्रमा में न करे वर्जित है ॥ १ ॥

(सन्मुख चंद्र का विचार)

करणा भगणा दोष वार संक्रांति दोष कुतिथि कुलिक  
दोष यामया मार्द्ध दोषम् ॥ कुज शनिरवि दोषं राहु केत्वा  
दि दोषं हरति सकल दोषं चंद्रमा सन्मुखस्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ करणा नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मंगल शनि



टीका ॥ पडवा सिद्ध की देने वाली कही - द्वितीया कार्य की साधन करने वाली कही - तृतीया आरोग्य की करने वाली कही - चौथ कलह की करने वाली - पंचमी ज्ञान की देने वाली - षष्ठी अशुभ करने वाली - सप्तमी शुभ की देने वाली - अष्टमी व्याधि की दूर करने वाली - नवमी मृत्यु करने वाली - दशमी धन देने वाली - एकादशी शुभ करने वाली - द्वादशी प्राण की संदेह करने वाली - त्रयोदशी शुभ की देने वाली - चतुर्दशी उग्र कर्म की करने वाली - पूर्णिमा पुष्ट की देने वाली - अमावास्या अशुभ की करने वाली जानिये ॥ ४ ॥

### तिथियों के स्वामी

बृहद्विरंच्यो गिराजा गणेशः फणिर्विशाखो  
दिनकृतमहेशः ॥ दुर्गातको विष्णु हरिस्मरश्चम  
र्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥ १ ॥ अमायाः पितरः  
प्रोक्ता स्तिथीनां मधिपा क्रमात् ॥ २ ॥

टीका ॥ पडवा का स्वामी अग्नि - द्वितीया का स्वामी ब्रह्मा - तृतीया का स्वामी गौरी - चौथ का स्वामी गणेश - पंचमी का स्वामी सर्प - षष्ठी का स्वामी स्वामिकार्तिक - सप्तमी का स्वामी सूर्य - अष्टमी का स्वामी शिव - नवमी का स्वामी दुर्गा - दशमी का स्वामी यम - एकादशी का स्वामी विश्वेदेवा - द्वादशी का स्वामी हरि - त्रयोदशी का स्वामी कामदेव - चतुर्दशी का स्वामी शिव - पूर्णों का स्वामी चंद्रमा - अमावस का स्वामी पितर - यह तिथियों के स्वामी कहे ॥ १ ॥ २ ॥

### तिथि संज्ञा

नंदाच भद्राच जयाच रिक्ताः पूर्णैति सर्वास्ति  
थयः क्रमात्स्युः ॥ कनिष्ठ मध्येष्ट फलाश्च शु  
क्लकृष्णो भवत्पुत्रम मध्यहीनाः ॥ १ ५ ५ ॥

टीका ॥ पडवा १ छठ ६ एकादशी ११ यह नंदा तिथि जानिये - दूज सप्तमी ७ द्वादशी १२ यह भद्रा तिथि जानिये - तीज ३ अष्टमी ८ नेरस १३ यह जया तिथि जानिये - चौथ ४ नौमी ९ चौदशी १४ ये रिक्ता

## (वारानुसारकालवासा)

अर्कोत्तरे वायु दिशा च सोम भौमे प्रतीच्यां बुध नैऋते च  
 याम्ये गुरौ वह्नि दिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदति कालम्  
 टीका ॥ राववार को उत्तर में काल सोमवार को वायव्य में मंगल को प  
 श्चिम में बुध को नैऋत में गुरु को दक्षिण में शुक्र को आग्नेय में श्निको पू  
 र्व में इस प्रमाण से कालादिक शूल वार अनुसार जानिये ॥ (फलं)

रवि दिन गुरु पूर्वे सोम शुक्रे च याम्ये वरुण दिशि तु भौमे  
 चोत्तरे सौरि संस्थे ॥ प्रति दिन मति मत्वा काल राहु दिंशा  
 नां सकल गमन कार्ये वाम पृष्ठे च सिद्धिः ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ रवि गुरु को पूर्व को गमन करे तो काल राहु वाम पृष्ठ भाग जानि  
 ये जिसमें गमन करे तो सिद्धि होय सोम शुक्र में दक्षिण को गमन करे। भौ  
 म को पश्चिम को श्निको उत्तर को गमन करे तो कार्य सिद्ध होय ॥ १

क्षुधित राहु ॥ इंद्रे वायौ यमे रुद्रे तोये ग्नौ शशिरक्षसोः

यामाद्वे क्षुधितो राहु भ्रमत्येव दिगष्टके । न तिथिर्न च नक्षत्रं  
 न योगो न च चंद्रमाः सिद्धंति सर्व कार्याणि पात्रायां दक्षिणैश्चौ

टीका ॥ पहले पहर में क्षुधित राहु पूर्व में जानिये दूसरे में वायव्य में तीस  
 रे में दक्षिण में चौथे में ईशान में पांच में पश्चिम को षष्ठ में अग्नि को ण को  
 सप्तम में उत्तर में को अष्टम में नैऋत्य को इस प्रमाण से प्राठ दिशाओं में  
 भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भाग में स्थित रवि विचार के गमन करे  
 तो तिथि नक्षत्र दिशा का दोष जाता रहै और समस्त कार्य सिद्धि होय ॥ १ ॥

## काल कोष्ठ

कालं पलं घातक लोह पात वडवानलः खड्क चो लिकांति  
 काः नखाश्चतुर्विंशति पत्तयादिक रुद्रा धृतिर्वद गुणाः क्रमेण

तिथ्यापुतं वैव सुभाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदंति ॥ फल

॥ कालं च पृष्ठे फल सन्मुखेन घातं च लोहं तूडवांश्च पृष्ठे खड्गे च  
 चाग्रे कवचं च वामे कांतिश्च योज्यादिशि दक्षिण स्यात् ॥ ॥

टीका ॥ काल कहां है तिसका जानना - कालों के नाम १ काल २ पल ३ पत्तक

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और चंद्रमा होने हो तो हानि भंग संहार जा ॥

धर्म मार्गी गते सूर्ये कामांशु चंद्रमा यदि विग्र  
हेदारुणा चैव चौरा कुल समुद्रवम् ॥ ३ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य होय और काम मार्गी नक्षत्रों में  
चंद्रमा होय तो विग्रह दारुणा और चार भय होय ॥ ३ ॥

धर्म मार्गी गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष गते यदि ॥ गृ  
हाल्लाभो भवेत्तस्य विज्ञेयो नात्र संशयः

टीका ॥ धर्म मार्गी सूर्य मोक्ष मार्गी चंद्रमा होय तो गृहा लाभ मार्ग में सुख  
होय ॥ अर्थ मार्गी गते सूर्यो चंद्रे धर्म स्थिते यदि गज

लाभो भवेत्तस्य तत्र श्री सर्वतो मुखी ॥ ४ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य हो और धर्म मार्गी चंद्रमा हो तो लाभ सुख करे सदा ॥

अर्थ मार्गी गते सूर्यो चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥ प्रथमं  
जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ ६ ॥ ५ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और चंद्र मार्गी होने होय तो पहले पह  
ल कार्य करे और पीछे कार्य भंग करे ॥ ६ ॥

अर्थ मार्गी गते सूर्ये चंद्रे कामोपा संस्थिते  
सर्व सिद्धि भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशयः

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और काम मार्गी चंद्र होय तो सर्व काम सिद्ध होय

७ ॥ अर्थ मार्गी गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष स्थिते यदि  
भूमि लाभो भवेत्तस्य हर्ष युक्तः सुखी भवेत्

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य होय और चंद्रमा मोक्ष मार्गी होय तो हर्ष  
युक्त भूमि लाभ होय मार्ग में सुखी रहै ॥ ८ ॥

काम मार्गी गते सूर्ये चंद्रे धर्मे च संस्थिते  
गजाश्वाश्च विलभ्यते राजसन्मानसंभवात्

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोड़ा पृ  
थ्वी इनकी लाभ करावे और राज्य सन्मान पावे ॥ ८ ॥

काम मार्गी गते सूर्ये चंद्रे तत्रैव संस्थिते

गमन शुभ है बृहस्पति के मत से शुकुन अंगिरा के मत से उत्साह मन का और जनार्दन के मत से गमन में विप्र वाक्य शुभ जानिये ॥ १ ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्रादीननक्षत्रमे वच । एकीकृत्वाहरेद्भागं नदशेषे चवाहनं । रासभोश्चो गजो मेषो जंबुकः सिंहसंज्ञकः काकश्चैवं मयूरश्च हंस इत्ये ववाहनं । फलं । रासभो अर्थलाभश्च धनलाभश्चवाहनं । लक्ष्मी प्राप्तिर्गजाख्येयं मेषे च मराणां ध्रुवं ॥ जंबुके स्वल्पला भश्च सर्व सिद्धिश्च सिंहगे । काके च निष्फलं कार्यं मयूरे च सु खावहम् ॥ हंसेतु सर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानां फलं स्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अपने नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने और नवका भाग दे शेष वचे सो वाहन जानिये एक वचे तो गद्धम तिसका फल और लाभ दो वचें तो घोड़ा धन लाभ तीन वचें तो हाथी अभीष्ट लाभ चार वचें तो मेढा मरण तुल्य- ५ वचें तो जंबुक स्वल्पलाभ- ६ वचें तो सिंह कार्यसिद्धि- ७ वचें तो काक निष्फल कहा है- ८ वचें तो मोर सुख प्राप्ति- ९ वचें तो हंस सर्वसिद्धि ये फल जानिये ॥

(अंकमहूर्त)

तिथयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्चताः  
वारास्युर्वह्निगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः ॥  
चतुर्गुणा निभान्यंगभाजितानियथाक्रमम् ।

टीका ॥ जिस तिथि में गमन करना चाहिये उसे दूनी करे सातका भाग दे और वारको तिगुणा करे आठका भाग देय और नक्षत्रको चौगुणा करे सातका भाग देय जो शेष ३ अंक वचें तो शुभ जानिये और शून्य वचें तो अशुभ जानिये ॥ १ ॥

(फलं)

पीडा स्यात्प्रथमे शून्ये मध्ये शून्ये महद्भयम् ॥  
अंत्यशून्ये तु मरणं त्र्यंके च विजयी भवेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रथम तिथिके भागका शून्य वचे तो पीडा करे दूसरे वारके भागमें शून्य वचे तो बड़ा भय करे तीसरे नक्षत्रके भागमें शून्य वचे तो मरण करे तीनों जगह अंक वचें तो शुभ जानिये ॥ (भ्रमणाडलमहूर्त)

करे गुरुको ७ पद हो तो गमन करे और रवि शनि सोम शुक्र इन चारों में देश पद छाया हो तो गमन करे ये सुहृत् गुण युक्त सर्व कार्य कता ज्ञानिये ११

काक शब्द शुकुन ॥ काकस्य वचन श्रुत्वा पाद छायां तु कारयेत् ॥ त्रयोदशयुतां कृत्वा षड्विंशति भागमाहरेत् ॥ फलं ॥ लाभः खेदः स्तथा सौख्यं भोजनं च धनं गमः ॥ अशुभं च क्रमेणैव गर्गस्य वचनं यथा ॥ २ ॥

टी० ॥ काक का शब्द सुनि के अपने पादों छाया में १३ मिलाने और द्वाका भाग दे शेष रहे तिसका फल एक शेष रहे तो लाभ खर्च तो सिद्ध खर्च तो सुख ४ खर्च तो भोजन की प्राप्ति ५ खर्च तो धन लाभ और शून्य होय तो शुभ ज्ञानिये ५११ ॥ पैयलाशः शुकुनं ॥

उल्लासः किल्विले चैव चिल्या भोजनं तथा भजनं रिवदिरिवदिस्यात्कुकुरं शब्देर्महद्भयम् ॥ १ ॥

टी० ॥ जो किल्विल शब्द होय उल्लास होय और चिल्लिल शब्द होय तो भोजन प्राप्ति सिद्ध शब्द हो तो बंधन करे कुकुर शब्द हो तो बहुत भय करे ॥ १ ॥ पैयलाशः पद छाया शुकुन

बुधैः छिक्कारव श्रुत्वा पाद छायां च कारयेत् ॥ च त्रयोदशयुतां कृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १ ॥ फलं ॥ लाभः सिद्धिर्हानि शोक भयं श्रीर्दुःखनिष्फलं ॥ क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेण च यथोदितम् ॥ २ ॥ २

टी० ॥ कौक का शब्द सुनि के अपनी छाया नापे तिसमे १३ मिलाने द्वाका भाग दे शेष रहे तिसका फल १ शेष रहे तो लाभ २ रहे तो लाभ ३ रहे तो कार्य सिद्धि ४ रहे तो हानि ५ रहे तो शोक ६ रहे लक्ष्मी ७ रहे तो दुःख शून्य रहे तो निष्फल सैसा गर्गदि सुनि कहते हैं ॥ २ ॥

(छाया शुकुन)

छिक्का प्रश्नं प्रचक्ष्यामि प्रश्नं प्रचक्ष्यामि प्रश्नं प्रचक्ष्यामि ॥ अग्नेय्यां शोक दुःखं स्यादरिषं दक्षिणे तथा ॥ १ ॥ नैऋत्यां च शुभं प्रश्नं पश्चिभिर्मिषभक्षणं ॥ वायव्ये धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ॥

अध्वाच दक्षिरो पादेवामेवंधुविनाशनं॥स्त्रीनाशस्यात्  
 पादमध्ये पादांतेमरणां भवेत्। पत्न्याः प्रयतने श्रेयं सरद  
 स्याधिरोहरां। यत्रोद्युक्तमनुष्यस्य शुभा शुभाहिसूचकम्॥  
 तिलभाषादिदं पंक्त्यात्वादेयं द्विजन्मने। पिना किले नयस्कृ  
 त्यजपेन्मंत्रं षडक्षरं॥१०॥ प्रातस्वहस्रं मथवा सर्वदोषानिव  
 ह्हराम्॥ शिवालये प्रदद्याद् द्वे दीपं दोषोपशान्तये॥११॥  
 टी०॥ मनुष्योंके गमन समयमें अंग पर पत्नी अर्थात् छिपकली गिरे अ  
 यवा गिरगट चढ़े तो शुभा शुभ फलस्थान अंग के अनुसार जानना कह  
 ते हैं कि छिपकली गिरे वा गिरगट चढ़े तो वस्त्र सहित स्नान कर तिल  
 उडद ब्राह्मरा कोरे शिवालय में जाय के शिव को नमस्कार करि षड  
 क्षर ११०० शिवमंत्र का जप करावे तो दोष दूर होय ॥११॥

१ शिर	राज्य प्राप्ति	११ वामबाहू	राज्यभय	२१ उत्तर	घोडावा.
२ कपाल	बंधुदर्शन	१२ कंठ	शत्रुनाश	२२ दहिनापद	धनक्षय
३ भ्रुकुटी	राजसन्मान	१३ स्तनों पर	इर्भाग्य	२३ बा. मणिवं.	कीर्ति
४ उत्तरोष्ठ	धनक्षय	१४ उदरपे	शुभ	२४ नख	धनलाभ
५ अधरोष्ठ	रैश्वर्य	१५ पृष्ठपर	वृद्धिनाश	२५ मुरवपर	मिष्टभोजन
६ नासिका	ध्याधि	१६ जानुपर	शुभ	२६ टकनों पर	बंधन
७ दा. कान	आयुष्य	सिरपर ७	शुभ	२७ कौरीं पर	मरणा
८ बा. कान	वहुलाभ	१८ हाथों पर	वस्त्रलाभ	२८ दहिनापद	मार्गचलै
९ नेत्र	बहुलाभ	१९ कंधों पर	विजय	२९ बायापद	बंधुनाश
१० षड्	राजाप्रमारा	२० नाभि पर	बहुधन	३० या. मध्य	स्त्रीनाश

अंगस्फुररामनुः

बृहि मे त्वं निमित्तानि अशुभानि शुभानि च  
 सर्वधर्मभूतां श्रेष्ठत्वं हि सर्वविविध्यसे १

टी०॥ मनुमत्य प्रति प्रत्य करे है धर्मधारियों में श्रेष्ठ शुभाशुभ फल  
 धरान की जिये॥ अंगस्य दक्षिरो भागे प्रशस्तं स्फुरतां भवेत्  
 अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च २

२० नाभिमें	स्थानभ्रंश	२३ जंघके एकदे	देश का स्वामी
२१ आंतोंमें	धन प्राप्ति	२४ पाओंमें	उत्तम स्थानसे
२२ जानुसंधि	बली शत्रुसेसंधि	२५ तल्लुओंमें	पाप का गमन

**स्त्रियों का अंग स्फुरण**

लांछनं पीठकंचैव श्रेयं स्फुरणं वक्षसा ॥ विपर्ययेन विहितः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः ॥ ११ ॥  
 क्षिप्रो विप्रशस्तंगप्रशस्तस्याद्विशोधतः ॥ १२ ॥

टी०॥ स्त्रियों का अंग स्फुरण भूमध्यमें पुरुषों ही के समान है परंतु और सब स्थानोंमें पुरुषसे विपरीत है अर्थात् वामभाग शुभ जानिये ॥ ११ ॥

अन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्य शस्तस्य च निर्दिष्टस्य ।  
 अनिष्टनिद्रोपगमे द्विजानां कार्यसुचरो न तु तर्फां स्यात् १  
 टी०॥ हे राजा अनिष्ट फलों के निवारण हेतु ब्राह्मणों से तर्पण करावे सुवर्णदान करे तो अंग स्फुरण का दोष जाय ॥ ११ ॥

नेत्रास्योर्द्धं हरति सकलं मानसंदुःखजालं नेत्रोपांतेदि  
 प्रातिच धनं नासिकांते च मृत्युः ॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसकं  
 त्संगरे भद्र हेतुर्वा मे चैतत्फलमविफलं दक्षिणो विपरीत्यम्  
 टी०॥ स्त्रीणां विपर्ययो नेत्रों के ऊर्द्ध प्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण हो  
 यतिसका फल कहते हैं नेत्रों के ऊपर पलकमें स्फुरण होय तो मन का दुः  
 ख जाय धन की प्राप्ति होय और नासिका के निकट स्फुरण होय तो मृत्यु क  
 ष अथर के नीचे के पलक में स्फुरण होती शुद्ध में पराजय होय ये फल वा  
 ये नेत्र के जानिये जो पुरुष का दाहना और स्त्री का बायां अंग शुभ जानी ॥  
 विशूलयंत्र ॥ रोगिणो च कृजाद्यर्षदिनाद्यर्षचयु  
 ङ्गतः ॥ कृत्तिकागमने दद्यादन्यत्र रविदीयते ॥ ११ ॥

टी०॥ रोगी का प्रश्न विशूल मध्याग्रमें जिस ब्रह्मका मंगल होयतिस  
 को देखे और चंद्रमा जिस स्थान विषे यंत्र में होय तो फल देखे इस प्रकार  
 से आगे फल जानिये - शुद्ध में जन्म होय तो दिवस नक्षत्र से सूर्य

री० धनमेव तुला दूनमें गमन करे तो कार्य विलंब से होय और मकर कुम्भ  
 श्रिक दूनमें गमन करे तो मृत्यु तुल्य कष्ट सिंह कर्क चव दूनमें कार्य सिद्ध  
 होय भियुन कन्य मीन दूनमें गमन करे तो अन्न धन शुभ दायक जानिये  
 द्वादश स्थानों के अनुसार यात्रा लग्नमें ग्रह प्रथम स्थान  
 जन्मस्थं चाष्टमं त्याज्यं लग्ने द्वादशमेव च ।

ग्रहारां च चलं वीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः

टी०॥ लग्न और अष्टम द्वादश दूनमें पाप ग्रह वर्जित ग्रह चल देसि  
 गमन करे तो विजय कार्य सिद्धि होय ॥

स्थाने यदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिध्यंतिकार्यशिचपं  
 चमेही राज्यास्यदं वा सुखदेशलाभं मासस्य मध्ये ग्रहभावयुक्त

टी०॥ लग्नमें गुरु वा बुध शुक्र ये होय तो पंच दिवस में तथा  
 एक मास में राज्य सुख देश लाभ ये होंय ॥१॥

दूसरे स्थान के फल ॥ जीवो बुधो वा भृगु नंदनो

वा स्थाने द्वितीये गमनस्य काले सुवस्त्रलाभं

चतुरंगलाभं मासस्य मध्ये च चतुर्दशे हि ॥१॥

टी०॥ दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होय तो वस्त्र चतुरंगलाभ  
 एक मास मध्यमें वा चौदह दिनमें सिद्ध होय ॥१॥

कुरा धनस्थार विराड् भौमाः सौरिश्च केतुस्त्रिभिरेव

मासैः वित्तस्य नाशं च ददाति मृत्युसत्यं हि वाक्यं मुनयो वदन्ति

टी०॥ दूनमें से कोई भी होय तो तीन मासमें मृत्यु और वित्तनाश  
 होय यह मुनीश्वरों ने कहा है ॥१॥

स्थाने तृतीये गुरुभागे वैचसोमस्य सूनुश्च निशापतिश्च

करोति कार्यं सफलं च सर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥२॥

टी०॥ तीसरे स्थान में गुरु शुक्र वा चंद्रमा बुध होय तो दो पक्षमें  
 अथवा तीन दिन में कार्य सिद्धि होय ॥२॥

कुराश्चतुर्थे गमने यदा तु नस्यश्च शेषाः शुभदाहिकार्थे  
 तत्रापदे च न भवेच्च सिद्धिर्मासत्रयेणापि दशाहमध्ये ॥३॥



लग्नेचरे वा यदि वा स्थिरे वा मासत्रयेणापि चत्तैक मासः ॥  
टी० ॥ दशमस्थान में शनि आदिले पापग्रहों को छोड़ि के सौम्यग्रह  
चर अथवा स्थिर लग्न में हो तो ३ मास वा एक मास में कार्य सिद्धि होइ

लाभ स्थितौ गुरु बुधौ मृगु नंदनो वा चूराश्रम  
वैशाखिने वयुक्ताः ॥ सद्यः फलापि अ भवेद्दि  
यात्रा पक्षे क मध्ये दिवस एव ॥ १॥ ५ ॥ ६

टी० ॥ एकादश स्थान में रवि को आदिले पापग्रह चंद्रमा सहित अथ  
वा गुरु आदिले शुभग्रह होय तो १ पक्ष में वा ३ दिन में कार्य सिद्ध होइ

सर्वे शुभा द्वादश संस्थिता अयात्रा भवेत्तत्र विचित्र लाभः ॥

पापाश्च सर्वे व्ययदा भवन्ति यात्रा फलं गर्ग मुनि प्रणीतम्  
टी० ॥ द्वादश स्थान में सर्वे शुभग्रह होय तो लाभ होय पापग्रह होतो  
व्यय सर्वे कारक जानिये यह यात्रा फल गर्ग मुनि कहें हैं ॥ १॥

प्रस्थान रश्मिना ॥ सुमुहूर्ते स्वयं गमना संभवे प्रस्था  
कार्यम् ॥ यत्रोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलं  
विप्रादिक्रमतः सर्वस्वर्ण धान्यां चरादिकम् ॥ १॥

टी० ॥ मुहूर्त के समय किसी आवश्यक कार्य में आपन जासके तो  
प्रस्थान करना योग्य है उसकी विधि ब्राह्मणादिक को ब्राह्मणयज्ञे  
पवीत क्षत्रिय को शस्त्र वैश्य को मधु और शूद्र को फल इस क्रम  
से जानिये स्वर्ण वस्त्र धान्य ये सब को युक्त है ॥ १॥

प्रस्थान कितने दिवस तक उपयोगी है ॥

राजादप्राहं पंचाह मन्यो न्यप्रस्थितो भवेत् ॥

अंग प्रस्थान संपूर्ण वस्तु प्रस्थान के अर्ध के २

टी० ॥ राजाओं को प्रस्थान करने पर दश दिन का औरों को ५ दिन  
नक्षत्र मुहूर्त उपयोगी रहता है परंतु वस्तु प्रकार स्थान में आधा  
फल जानिये और अंग के प्रस्थान में पूर्ण फल जानिये ॥ १॥

प्रस्थान के स्थान का विचार ॥ गेहाद्देहां तरंगर्गः सीमाः

सीमांतरं मृगुः ॥ वाराक्षेयं भरद्वाजो वसिष्ठे नगराद्दि ॥ १

कंया युक्त पुरुष पापी पुरुष दीन अथवा नपुंसक ये भी अशुभ जानिये ॥

आयः पंकस्तथा चर्म केषा वंधन मेव च ॥

तथैवोद्धत साराणि पिराया कादितथैव च

टी० ॥ लोहा की च चर्म केषा वंधता हुआ मनुष्य जिसके सार निकाल

लिये हैं ऐसे पदार्थ और पिरायाक ये भी अशुभ जानिये ॥ ११ ॥

चांडालस्य श्वं चैव राजवंधनपालकाः ॥

वधकाः पापकमाणो गर्भिणी स्त्री तथैव च १

टी० ॥ चांडाल प्रेत वंधुओं के रक्षक वध कर्ता पापी पुरुष गर्भिणी

स्त्री यह भी अशुभ जानिये ॥ ११ ॥

तुषं भस्म कपालास्थिभिन्नभांडानियानि चारक्तानि चैव भां

डानिमृतसारंग एव च ॥ एवमादो निचान्यानि च प्रसक्तानि दर्शने

टी० ॥ भूसी भस्म कपाल अस्थिरीते वा फूटे चर्तन मारा हुआ सारंग

पक्षी यह यात्रा काल में हानि कारक जानिये ॥ २१ ॥

क्या सितिष्ठ आगच्छ किंते तत्र गता स्यतु ॥

अन्य शब्दाश्च ये नि चारुते विपाने च ३ अपि

टी० ॥ कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जाने से तुम को क्या होगा ये

और भी अनिष्ट शब्द विपत्ति कारक होते हैं ॥ ११ ॥

ध्वजादौ वायसास्थानकव्यादानविगर्हितं

स्वलनं वाहनानां च वस्त्रसंगस्तथैव च १

टी० ॥ ध्वजा वा पताका के ऊपर काक बैठे अथवा अग्निदान और

वाहनों को गिरना वस्त्र लपेटना हुआ पुरुष ये भी अशुभ जानिये ॥

दुष्टं निमित्ते प्रथमं अमंगल्यं विनाशानम् ॥

केशव पूजयेद्दिहान् स्तवेनर्म सेवनम् ३

टी० ॥ यात्रा के समय प्रथम में जो अमंगल दृष्टि आवे तो नाश कारक हो

य इसके निवारण को विसु पूजा मधुसरन स्तोत्र का पाठ करावे ३

द्वितीये च ततो दृष्टे तृतीये प्रवृत्तौ ॥ ११ ॥

अथेष्टानि प्रवक्ष्यामि मंगलानि तथानघ १

स्वास्तिवृद्धि निनादश्चनद्यावर्तः सकौस्तभः

वादित्राणां शुभः शब्दो गंभीरस्तमनोहरः १

टी०॥ आशीर्वाद शब्द कौस्तभमारीवाद्य उत्तम शब्द ये विप्रनाशक हैं

गांधार षडज ऋषभायेगीताः सुश्रुतः स्वराः ॥

वायुः सशर्करोत्प्लाः सर्वे विप्र विनाशकाः १

टी०॥ गांधार खड्ग ऋषभ ये राग अच्छे गाये गये हों सुर सुंदर मीठा

पवन अथवा उष्म ये सब विप्रनाशक जानिये ॥ १॥

अतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयो भयकरादिजः ॥

अनुकूलो मृदुः स्निग्धसुरस्यस्पर्शः सुखावहः

टीका॥ वर्ण शंकर मनुष्य नीच सुसलमानादि कृषे भयकरने वाले

हैं ब्राह्मण को अपने अनुकूल पदार्थ और सुरस्यस्पर्श मनुष्य

आदि सुरस्यकारी होने हैं ॥ १॥

प्रस्तान्येतानि धर्मश्रयवस्यान्नसः प्रियः

मनसस्तपिरे वाच परमं जय लक्षणात् १

टी०॥ हे धर्मज्ञ पहले कहें हुए प्राकृत शुभ जानिये और अपने म

नको प्यारी वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम पुष्टि कारक जय

दायक जानिये ॥ १॥

मनोत्सुरवत्संजनसः प्रहर्षः शुभस्य लाभो

विजय प्रवादः ॥ मांगल्यलब्धिः श्रवणां च

राज्ञान्नेयानि नित्यं विजयावहानि ॥ १ ॥ ५

टी०॥ यात्रा के समय मन में हर्ष शुभ तथा लाभ कारक विजय

वाद और मंगल प्राप्ति का श्रवण शुभ जानिये ॥ १॥

ह्ये मंकरानील कंठाः श्लोत्कृत्वरजंपुकाः

प्रस्थाने वामतः श्रेयाः प्रवेशो दक्षिराणाः शुभाः

टी०॥ मोर कुत्ता उल्लू पक्षी गधा स्यार प्रस्थान समय वाम भागी

होंय तो गमन में शुभ और प्रदेश में रहने शुभ जानिये ॥ १॥

(अथ आनंदादि शुभाशुभयोग कहते हैं)

टीका ॥ नंदा तिथिमें आनंदादि उत्सव देवी उत्साह राह संबंधी कर्म गीत नृत्य वाजे ये करना १ भद्रा में विवाह गाड़ी रख बनाना यात्रा पुष्टिक कर्म करना २ जया में युद्ध कर्म सेना संबंधी कर्म तलवारध्वजावनानी ये कर्म सिद्धि होते हैं ३ रिक्ता में धातु कर्म विषकर्म प्रास्त्र प्रयोग उग्र कर्म करना पूर्णा में विवाहादि शुभ कर्म शांतिक पौष्टिक कर्म करना मावस में पितृकार्य करना ॥

सं.	तिथि	फल	स्वामी	नाम	शुक्ला	काष्ठा	नकरेशो
१	पड़वा	सिद्धिदा	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	पेडा
२	द्वितीया	कार्यसा	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेढ
३	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	मोन
४	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	आमखद्ये
६	षष्ठी	अशुभ	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आबला
८	अष्टमी	व्याधिना	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफ.
१०	दशमी	धनदा.	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	एकादशी	शुभ	विश्वेदेवा	नंदा	शुभ	अशुभ	दरिया
१२	द्वादशी	अशुभ	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	त्रयोदशी	सर्वसिद्धी	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बेंगल
१४	चौदशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	सहतही.
१५	पूर्णा	पुष्टिदा	चंद्रमा	पूर्णा	शुभ	अशुभ	जूथा
१६	मावस	अशुभ	पितर	०	०	०	स्त्रीसंग

आष्ट दिशाओं के स्वामी  
रदि: शुक्रो महीसूनु: स्वर्भानुर्भीनुजो विध:

योगों के नाम	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१ आनंद	श्रुति	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु	उषा	शत	सिद्धि
२ कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	पूर्वा	मृत्यु
३ धूम्र	कृति	पुन	पूर्वा	स्वाति	मूल	श्रव	उभा	असुरत्व
४ प्रजापति	रोहि	पुष्य	उफा	विशा	पूर्वा	धनि	रेवती	सौभाग्य
५ सौम्यः	मृग	श्लेषा	हस्त	ऽनु	उषा	शत	श्रुति	अतिसौरव्य
६ ध्वाक्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	पूर्वा	भरणी	धनक्षय
७ ध्वजः	पुन	पूर्वा	स्वाति	मूल	श्रव	उभा	कृति	सौभाग्य
८ श्रीवत्स	पुष्य	उफा	विशा	पूर्वा	धनि	रेवती	रोहि	सौरव्य
९ वज्र	श्लेषा	हस्त	ऽनु	उषा	शत	श्रुति	मृग	क्षयकृत
१० मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीनाश
११ छत्र	पूर्वा	स्वाति	मूल	श्रव	उभा	कृति	पुन	राज्यसन्मान
१२ मेघ	उफा	विशा	पूर्वा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	पुष्टिकरता
१३ मानस	हस्त	ऽनु	उषा	शत	श्रुति	मृग	श्लेषा	सौभाग्य
१४ पद्मारथ्यं	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनकीश्रुति
१५ लंबक	स्वाति	मूल	ऽनु	उभा	कृति	पुन	पूर्वा	धनकीहानि
१६ उत्पात	विशा	पूर्वा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उफा	प्राणनाश
१७ मृत्यु	ऽनुरा	उषा	शत	श्रुति	मृग	श्लेषा	हस्त	मृत्यु
१८ कारणा	ज्येष्ठा	ऽभि	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्षीण
१९ सिद्धि	मूल	श्रव	उभा	कृति	पुन	पूर्वा	स्वाति	कामसिद्धि
२० शुभः	पूर्वा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उफा	विशा	जयहोय
२१ अमृत	उषा	शत	श्रुति	मृग	श्लेषा	हस्त	ऽनु	राज्यसन्मान
२२ असल	ऽभि	पूर्वा	भरणी	आ	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनकानाश
२३ गदारव्य	श्रवण	उभा	कृति	पुन	पूर्वा	स्वाति	मूल	असंबुद्धि
२४ मातंग	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उफा	विशा	पूर्वा	कुलकाक्षी
२५ राक्षस	शत	श्रुति	मृग	श्लेषा	हस्त	ऽनु	उषा	अग्नि काष्ठ
२६ चर	पूर्वा	भरणी	आ	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऽभि	कामसिद्धि

अमृतसिद्धियोगः॥ आदित्यहस्तगुरुपुष्ययोगे  
 बुधानुराधापूनिरोहिणीच॥ सोमं च विष्णुभू  
 गुरेवतीचभौमाश्विनीचामृतसिद्धियोगः॥ ११॥

दीपाचरयोगादिक और सातवारको एक भे लिखते हैं तिनमें  
 जिसवार कौन ज्ञान वा तिथि होय सोयोग उसदिन जानना ॥

योगों के नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रु.
१ करयोग	शू.भा.	आद्रा	विशा.	रोहि.	पुष्य	मघा	मूल	न.
२ जलज	१२	१२	१०	१	३	७	१०	नि.
३ हस्त	१२	११	५	३	६	८	१०	नि.
४ मृत्यु	१२	१०	१०	१	३	७	१०	नि.
५ सिद्धि	०	०	०	०	०	०	०	नि.
६ उत्पान	विशा.	शू.भा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.भा.	न.
७ मृत्यु	श्व	उ.भा.	शनि	अश्वि.	मृग.	मू.	हस्त	न.
८ काल	ज्येष्ठा	श्व.	शू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	विशा.	न.
९ सिद्धि	मूल	म्र.	उ.भा.	कृति.	पुनर्व.	शू.भा.	स्वाति	न.
१० अम हस्ता	मघा धनि.	मूल विशा.	कृति. रोहि.	शू.भा. पुनर्व.	उ.भा. अश्वि.	रोहि. अनु	अवगा प्रतिकि.	न.
११ यवर्ष.	मघा	विशा.	उ.भा.	मूल	कृति.	रोहि.	हस्त	न.
१२ सुसलव	भरणी	चिन्ता	अश्वि	धनि	उ.भा	ज्येष्ठा	रेवती	न.
१३ अमृत सिद्धि	हस्त	अवगा	आर्द्रा	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि.	न.

दासचक्रम्

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थं मृत्युसंगहे॥ पूरी  
 र्घं दिशार्थं लाभस्यात्सुखे त्रीणि विनाशान्॥ हस्तपंच  
 धनंधान्यं पादेषु द्वे दरिद्रतायुषे द्वे आरासंदेहो

तक गिने उनमें से ३ तीन मस्तक पर लाभदायक सुखमें २ हानि  
 पेरों पर ई अर्थ लाभ हृदयमें ५ सुख स्नानमें ई महा लाभ भग पर  
 उजा बुद्धि गुहा पर ४ भय जानिये सहिवा लेनी होय तो भी इसी कस  
 से सुभ सुभ फल जानिये परंतु सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक  
 गिने और वेल लेना होय तो भी इसी अज्ञानिये परंतु पेरों पर २ ई  
 नक्षत्र धरे और प्रीत स्थानों में होरी नक्षत्र धरे गाय के सजाव  
 सुभा सुभ जानिये ॥२॥

(अश्वत्थ लेने का मुहूर्त)

अश्वेतु सूर्य भां चैव साभि जिह्वाति विन्यसेतु ॥  
 पुच्छे ज्ञेयं तत प्राज्ञे क्व तुष्यादित्युदये ॥ उदरे ।  
 पंचमे धियाया सुरेद द्वेच प्रकीर्तिते ॥ फलं ॥ शौ  
 भाग्यमर्थ लाभश्च स्त्रीनाशोररा भंगता ॥ जा  
 शश्च अर्थ लाभश्च फलं प्रीक्तं मनीषिभिः ५

रीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक अभिजित सहित  
 नक्षत्र स्थापित करे इस क्रम से स्थानों का फल ज्ञेय पर ५ शौभाग्य  
 पीठ पर १० अर्थ लाभ पूछ पर २ स्त्रीनाश पेरों पर ४ रा भंग उद  
 र पर ५ नाश सुखमें २ अर्थ लाभ ऐसे फल जानिये ॥४॥

(हाथी लेने का मुहूर्त)

गजाकारं लिखेच्चकं जन्मभातं च सूर्यभाक् ॥ क  
 री श्रीर्वे गिने पुच्छे एमं सर्वत्रयं ज्ञेयं ॥ मुंडायांतु  
 ह्युयोऽत्रां वेदा पृथोदरे सुखे ॥ बुद्धे चतुर्वेदे सुसा  
 मि ह्येव सं क्रमात् ॥ फलं ॥ करी चैव महात्लाभा  
 मस्त के लाभ सुख ॥ इते चैव भवेत्लाभी पुच्छे हाकि  
 अज्ञासते ॥ मुंडायांतु सुभ ज्ञेयं पृथेतु सारव सं परः  
 उदरे गेग संसूति सुखे तु मध्यं संस्मृतम् ॥ चारुयो  
 म्भवेत्लाभा गजे चैव विनिर्दिशोत् ॥ ५ ॥ ४

टी० ॥ प्रथम सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक स्थापित करे तिरुक्क क्रम

कविंध्यास्तु मध्ये सप्तविनिर्दिशेत् ॥ फलं ॥ मूले ।  
तु सुरवसौ भाग्यं गात्रे प्रोक्तं भयं महत् ॥ मध्ये सप्तपु  
त्रलाभाय ध्यायुर्द्वि करं परम् ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

टी० ॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत मंचान में नक्षत्र अंक  
स्थापन करे पहले सुरव में १६ सुरव प्राप्ति मध्य गात्र पर ४ भय  
प्राप्ति आगे विधा पर १ भय मध्य में ७ प्रबलाभ और आयु हृदि  
होय ॥

(पारसहित धनुषचक्रम्)

सूर्यभाज्जन्मभातं च धनुषी वचयोजयेत् ।  
चापाग्रे वाण संख्याकं पूराग्रे पंचयोजयेत् ।  
पारमूले तथा पंच पंचसन्धौ प्रकीर्तयेत् ।  
दंडे चैव तु ह्यर्था द्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ फलं  
अग्नेहानिः पारे लाभो पारमूले जयस्तथा ॥  
चापसंधौ तत्रोर्थे स्य दंड भंगः प्रजायते । १ ॥

टी० ॥ सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यंत धनुष पर अंक स्थापन करने  
का क्रम प्रथम अग्र पर ५ हानि पारके अग्र पर ५ लाभ पारकी मूल  
पर पूजय फिर संधि पर ५ सुरता बीच के दंड पर ५ राज्य भंग इन में  
से शुभ फल देख कर धनुष धारण करे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

(रथचक्रं)

रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभन्त्यसेन ॥ रथो  
ग्रेत्रीणि चरुक्षाणि षट् चक्रेषु तु तान्यसेन ॥ चरुक्षत्रयम्  
दंडे रथाग्रे भजयंतथा ॥ युगे च मयं चैव षडक्षौ रायं  
तमध्वनि ॥ शेषं मृक्षत्रयं योज्यं चरुत्रैः सर्वतो मुखे  
फलं ॥ अंगे नृत्युर्जयश्चके सिद्धिर्ज्ञेया च दंड के ॥  
रथाग्रे दंड अध्वान मध्ये चैव मुखं शुभम् ॥ १ ॥ २ ॥  
बुधैरेव फलं ज्ञेयं जन्मभातं क्रमेण च ॥ गर्गे रथोक्ता  
निचक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

टी० ॥ रथ के आकार चक्र खींच कर उसके स्थानों पर सूर्य नक्षत्र



गोकन्याम प्रमन्यायाश्च शुभदाकार सुभाकीर्ण  
वही ॥ द्वादशपरिक्रम पंचरुतथा कर्ण्ये द्वितीया इत्यम् १

दी० ॥ स्वानि रोहिणी उत्तरा पुनर्वसु शुभ अनुसया ज्येष्ठा मूल पू  
र्वाषाढ मघा उत्तरा फाल्गुनी अश्रवा मघा मघा औरिदकन्या म  
कमिपुन वे लगे शुभहै मगल प्राणि औरिदकी द्वादशीतया रिहा है  
नों इर्वनी अर्थान् मादस पूनी ३० १५ औरिदनों द्वितीया इतकी  
होडिकें कृषिकर्मा का आरंभ और बीज बीजा ये करावे ॥१॥

(हस्तचक्रं)

दिकं त्रिकं चिकं पंच त्रिकं पंच त्रिकं चिकं  
सूर्ये भद्रराये चंद्रां अशुभं च शुभं कमान् ॥ १

दी० ॥ सूर्ये नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत गिने तिनके ८ भाग रखने  
का क्रम प्रथम ३ अशुभ दूराग ३ शुभ तीसरातीन ३ अशुभ चौथा  
३ शुभ पांचवां ३ अशुभ छठा ३ शुभ सातवां ३ अशुभ अठवां ३ शुभ  
जिस नक्षत्र के भाग में दिवस नक्षत्र शुभ अविषहदिन धारणा करे

(लौकाचक्रं)

पौष्णादिहृत्ति लरवा चारुण मिच चित्र शीतो लरशिल  
वस्तुजीव कमान्य मनि ॥ वारेच जीव भुगुं नक्षत्र के प्र  
शक्ते नौकादि संघटन चोहन मेव कुर्वान् ॥ १ ॥ ५

रीका ॥ रेवती पुनर्वसु अश्लिषी श्रौवा प्रातः कारका अनुराधा चित्रा  
मृगशिरहस्त धनिय्या पुष्य ये नक्षत्र औरिद शुभकये वार इतमें  
नाव बनामा जल में उतारना शुभहै ॥१॥

(लौकाचक्रं)

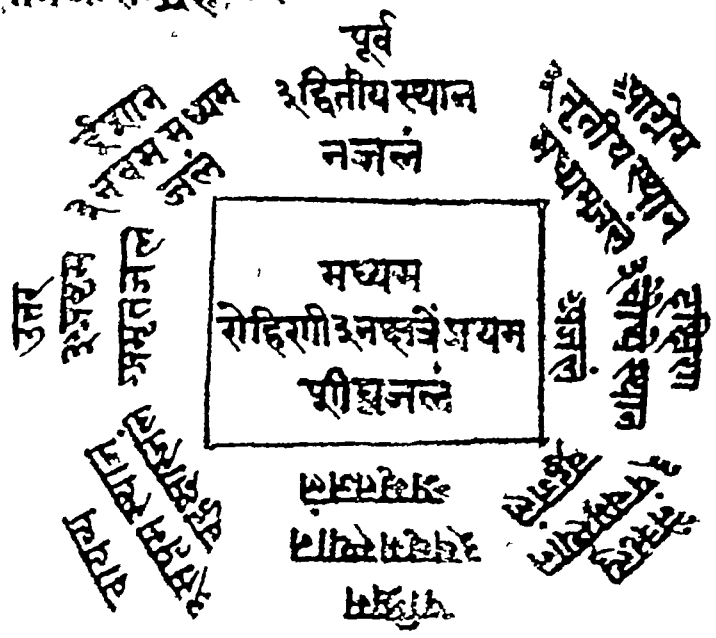
रविभुक्तर्क्ष नारभ्य कृषी जीरायु रयेच षट् ॥  
नाल्या जीरा हार्दि जीरा एले भूः पार्थीमं वधव १  
शुक्रारो जीरा षट् मध्ये नौकाचक्रं संस्थितिः  
उपरस्थे च मध्ये स्थे षट् श्रेष्ठे च परं न सत् ॥ २ ॥

दी० ॥ सूर्ये नक्षत्र से तीनतीन नक्षत्र लिखने का क्रम ऊपरके भागमें

पर ५ लाभ कंठ पर ८ धन प्राप्ति मध्यमें ८ स्वामी मृत्यु दंड पर ५  
राज्य प्राप्ति दूसरी रीति से नक्षत्र क्रम जानिये ॥१॥

(कूपचक्रं)

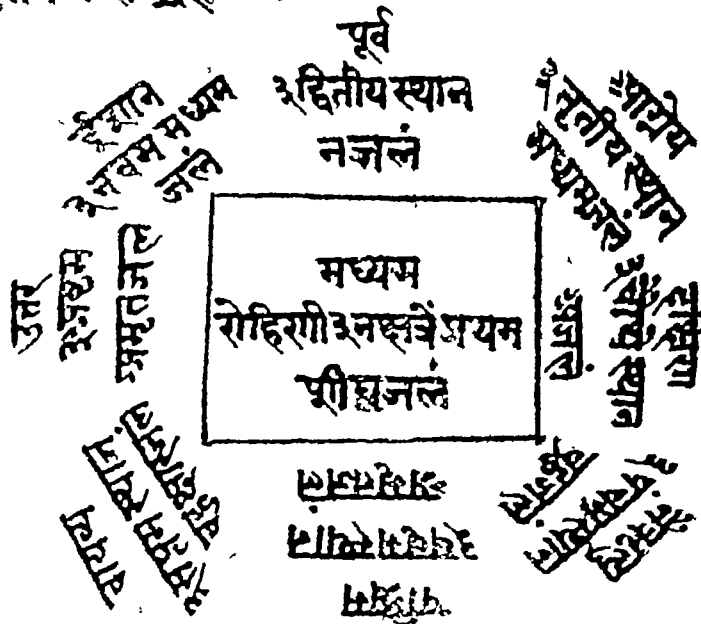
कूपे चाथ्योस्तु चक्रं वै विज्ञेयं विद्युधौ शुभं ॥ रोहिणी  
गर्भमेतस्य वित्रिकृशाणि चंद्रं मध्ये पूर्वतया प्रयोया  
स्ये चैव तु नैर्ऋते ॥ पश्चिमे चैव वायव्या सौम्यशूद्रिषिक  
मात् ॥ फलं ॥ प्रीष्टं जलं न जलं मध्यमजलं मजलं बहु  
जलं च ॥ अमृतजलं बहु क्षारं सजलं मध्यजलं कमात्  
श्रेयम् ॥ मत्स्ये कुलीरे मकरे बहुजलं तथैव चांद्रं वृषकुं  
भयोश्च ॥ अलौचतौ लौचजलात्ता मया श्रेवाश्च सर्वे  
जलदाः प्रकीर्तिताः ॥ नवीन कूपं शुरुवापीरवोदना ॥  
टी ॥ रोहिणी से बर्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यंत का क्रम मीनकर्क  
मकर इन तीन राशियों का चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले और  
वृष कुंभ इनका होय तो उसे आधा जल रहे वृश्चिक तुला इनका चं  
द्रमा होय तो अल्प जल रहे शेष राशियों का चंद्रमा होय तो नहीं निक  
ले यह बात प्रसिद्धि है ॥१॥



पर ५ लाभ कंठ पर ८ धन प्राप्ति मध्यमे ८ स्वामी मृत्यु दंड पर ५  
राज्य प्राप्ति दूसरी रीति से नक्षत्र क्रम जानिये ॥१॥

(कूपचक्रं)

कूपे चाथोस्तु चक्रं वै विज्ञेयं विबुधैः शुभं ॥ रोहिणी  
गर्भमेतस्य वित्रिकृशाणि चंद्रं मध्ये पूर्वतया ग्रेयोया  
स्ये चैव तु नैर्ऋते ॥ पश्चिमे चैव वाथ व्यासौ म्यशुद्धिः शक्र  
मात् ॥ फलं ॥ प्रीघ्नं जलं न जलं मध्यमजलं मजलं बहु  
जलं च ॥ अमृतजलं बहु क्षारं सजलं मध्यजलं कर्मात्  
श्रेयम् ॥ मत्स्ये कुलीरे मकरे बहुजलं तथैव चार्द्धं वृषकुं  
भयोश्च ॥ अलौचतो लौचजलात्ताता मना शेषाश्च सर्वे  
जलदाः प्रकीर्तिताः ॥ नवीन कूपं अरुबापी रवोदना ॥  
टी ॥ रोहिणी से वर्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यंत का क्रम भी नक्षत्र  
मकर इन तीन राशियों का चंद्रमा होय तो बहुत जल निकले और  
वृष कुंभ इन का होय तो उसे आधा जल रहे चश्रिक तुला इन का चं  
द्रमा होय तो अल्प जल रहे शेष राशियों का चंद्रमा होय तो नहीं निक  
ले यह बात प्रसिद्धि है ॥१॥



वसुभिश्चहरेद्भागंशेषं चैव शुभाशुभं ॥ फलं ॥  
 लाभश्रेयकेचिकेसिद्धिर्द्विः पंचमसप्तके ॥ ६ ॥  
 योहीनिश्चतुःश्लोकं घटाये मरणं ध्रुवम् २ ॥

टी० ॥ अपनी छायाको तिगुनी करे उसमें १३ मिलावे फिर ८ का भाग  
 दे शेष बचे तिसका फल जानिये शेष १ लाभ द्वि. २ शेष हानि तीन  
 ३ शेष सिद्धि चार ४ शेष श्लोक पांच ५ शेष दृष्टि छः ६ शेष मरणा  
 सात ७ शेष दृष्टि आठ ८ शेष मरणा जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

(पंचा प्रश्न)

निधि प्रहरसंयुक्तात्तारकाचारमिश्रिता ॥ सप्तभि  
 स्तहरेद्भागंशेषं फलमादिशेत् १ वर्तमानचनक्ष  
 त्रंगणयेत्कृतिकादितः ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागंशेषं  
 प्रश्नस्यलक्षणां २ प्रश्नाक्षरं रुद्रं युक्तं सप्तभिभाजि  
 तंतथा ॥ फलमेवं कृमात्त्रेयं सर्वैवां हि शुभाशुभं १

टी० ॥ तिथिचार नक्षत्र प्रहर चुन सब को जोडके ७ का भाग दे शेष ब  
 चे तो फल जानिये दूसरा कृतिके से वर्तमान नक्षत्र तक गिने ७ का  
 भाग दे शेष बचे सो फल जानिये तीसरा प्र-प्रश्नके अक्षरोंमें १२ मि  
 लाके ७ सातका भाग देनेसे शेष रहे सो फल जानिये ॥ २ ॥

(तत्फलं)

एक शेषे तथा स्थाने द्वितीये पथि वर्तते ॥  
 तृतीये पथि द्वि मार्गितु चतुर्थे ग्राममादिशेत् १  
 पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत् ॥  
 शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम् २

टी० ॥ एक १ शेष रहे तो स्थान ही में जानिये २ दो शेष रहे तो मार्ग में ती  
 न ३ बचे तो अर्द्ध मार्ग में चार ४ बचे तो ग्राम में आया जानिये पांच  
 ५ शेष रहे तो मार्ग से उलट गया चाहिये छः ६ शेष रहे तो रोग प्रस  
 जानिये सात ७ बचे तो शून्य अर्था मरणा जानिये १ ॥ २ ॥

दूसरा प्रकार

बंधनाश सात ७ में कार्य सिद्धि आठ ८ में मरणा नो ६ में रा  
ज्य प्राप्ति यह गर्ग मुनिका वचन है ॥२॥

नवग्रहात्मकं यंत्रं कृत्वा प्रश्न निरीक्षयेत्  
फलं पूर्वोक्तमेवात्र दृष्टव्यं प्रश्न को विदेः १

टी० ॥ नवग्रहात्मक यंत्र बनावे उस में अवलोकन कीजो जे जे अंकपे  
डुंगली रक्खे उस का फल पूर्व कहा उस प्रकारसे जानना चाहिये ।

(दूसरा मत)

सप्तत्रयांके कथयंति चार्त्तानवैकपंचत्वरितं च दंति  
अष्टौ द्वितीये नहि कार्य सिद्धिरसाश्रवेदाघटिकात्रयं  
टी० ॥ पूर्व जो अंक कहे हैं तिनके प्रसाशासे फल जानिये परंतु फ  
ल भिन्न हैं शेष सात ७ वातीन ३ रहें तो वार्त्ता करना जानना और ८  
नव एक १ पांच ५ वें तो शीघ्र कार्य सिद्धि होय दो २ आठ ८ वें तो का  
र्य नहीं होय छः ६ चार ४ वें तो तीन दिन वातीन घरी में कार्य होय ॥

(वारनक्षत्रयुक्त पथा प्रश्न)

बुधे चंद्रे तथा मार्गे समीपे गुरु शुक्रयोः ।

रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च पथे पीड्यते १ ।

निर्जीविः सप्तत्रयं द्वापारं जावो ह्युदशे भवेत्

व्याधितो नव नक्षत्राणि सूर्यधिष्णातुं चाद्रुभे २

टी० ॥ बुध सोम को पूछे तो मार्ग में जानिये- और गुरु शुक्र वार को पू  
छे तो समीप आया जानिये- रवि भौम वार को पूछे तो दूर जानिये और  
१ शनि वार को पूछे तो योग्य युक्त जानिये- और सूर्य नक्षत्र से चंद्रमा  
के नक्षत्र तक लिरवने का क्रम प्रथम सात नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो  
निर्जीवि दूसरे १२ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो जीता जानिये- तीसरे  
नव ९ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो रोग की उत्पत्ति जानिये- इसमों  
ति पथा प्रश्न जानिये ॥ १॥ २॥

( नष्ट वस्तु प्रश्न )

तिथि चारं च नक्षत्रं लग्नं च हि विमिश्रितं ॥

मेघेच हि पदां चिंता वृषे चिंता चतुष्यदः॥ मिथुने गर्भचिं  
ता च व्यवसायस्य कर्कटे ॥ सिंहच जीवचिंता स्यात्कन्या  
यां च स्थिरस्तथा ॥ तुल्ये च धनचिंता च व्याधिचिंता च वृ  
श्चिके ॥ चापे च धनचिंता स्यान्मकरे शत्रुचिंतनम् ॥  
कुंभे स्थानस्य चिंता स्यात्मीने चिंता च देवकी ॥ ४ ॥

टी० ॥ मेघ लग्न में प्रश्न करे तो मनुष्यों की चिंता कहिये चष में गाय में म  
की चिंता मिथुन में गर्भ चिंता कर्क में व्यापार की चिंता सिंह में जायकी  
चिंता कन्या में स्त्री की चिंता तुला में धन की वृश्चिक में रोग की धन में  
धन की चिंता मकर में शत्रु की कुंभ में स्थान की मीन में भूत शिचि  
या गिनी वाहरी बाधा की ॥ ४ ॥

धातु मूलज ६० ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

मेघादयः क्रमेण ज्ञातव्याः प्रश्नको विदेः १।

टीका ॥ मेघ धातु वृष में मूल मिथुन में जीव इसी क्रम से चर स्थिर  
द्विस्वभाव इस प्रकार चारह १२ लग्नों की संज्ञा जानिये ॥ १ ॥

(श्रेक प्रश्न)

अष्टोत्तर सते चैव प्रश्नको न्यूनमाचरेत् ॥ शेषं द्वा  
दशाभिर्भुक्तं शेषं चैव स्य भाषुभं ॥ फलं ॥ एकदुर्गा  
सप्तके वै विलंब आगे तुर्ये दिक्षु भूतेषु नाशः ॥ दे  
सिद्धि युगले वृद्धिरक्ता शीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषु द्वारदशेषु २

टी० ॥ पृच्छक के कहे हये एक से आठ अंको में से एक अंक को नाम  
लिखावे और उसमें १२ का भाग दे शेष वचे तो उससे फल कहिये  
१। ३। ६ वचे तो शेर में काम होय और चार ४। ५। ८। १० वचे तो माश  
होय ११ वचे तो सिद्धि २ वट्टि हो ६ वचे तो शीघ्र कार्य होय ॥ २ ॥

(रोगी प्रश्न)

निधिवारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहर एव च ॥ अथ

भिस्तु हरेत्संगं शेषं तु फलमादिशेत् ॥ फलं ॥

हयाम्भौ देवता बाधा पैत्री वै वै च दंतिषु ॥ ५ ॥

टीका ॥ शंख कमल मोती रूपा स्त्रीभोग भोजन गंडे के रस की  
कृत्य वृक्ष जलादि भोग झलंकार यज्ञादि गोरस गाना पुष्प वस्त्रये  
सोमवार में कृत्य करना चाहिये ॥ २ ॥

### भैमवार

भेद नृतस्तेय विपाणि शस्त्र वध्याभिघाता  
हवशाह्यदंभात् ॥ सेनानिवेशाकरधातुहेमप्र  
वालरत्नानिघाते विदध्यात् ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ मंगल को भेद करना चोरी अनृत विष अग्नि शस्त्र वध  
संग्राम सेनानिवेश खान धातु सोना मूंग लाल वस्त्र रुधिरश्रा  
व यह कृत्य मंगलवार को करना ॥ ३ ॥

### बुधवार

नैपुण्यपायाध्ययनकलाश्च शिल्पादिसेवा  
लिपिलेखनानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तसंधि  
व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

टीका ॥ बुधवार में चतुर्गर्ह पुण्य पढना चौसठ कला सीखनी चि  
त्रकारी सेवा लिखना धातु क्रिया सोने की सीप के मित्र को कवा  
द दिवाद करना चाहिये ॥ ४ ॥

### गुरुवार

धर्मक्रिया पौषिकयज्ञविद्यामागल्यहेमां  
वरक्षेत्रयात्रा ॥ रथाश्वभेषज्युविभूषणादि  
कार्ये विदध्यात्कर्म विवार ॥ ५ ॥

टीका ॥ धर्म काम करना यज्ञ करना नवग्रह पूजा करना विद्या  
भ्यास करना सौभाग्य वस्त्र गृह का कर्म यात्रा रथ अश्व औषधि  
यह कृत्य गुरुवार में करना चाहिये ॥ ५ ॥

### शुक्रवार

स्त्रीगीति शय्याभण्डिरत्नगंधवस्त्रोत्सवा  
लंकरणादिकर्म ॥ भूपाण्यगोकोशहृषिक्रियाश्च

(जल लग्नं)

कुंभः कर्क वृषौ मीन मकारौ वृश्चिकस्तुला ज  
ल लग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभः ॥ लभत्ये  
वसदा वृष्टिर्जातव्यागणकोत्तमैः ॥ १ ॥ ३५ ॥

टीका ॥ कुंभ कर्क वृष मीन मकार वृश्चिक तुला ये जल लग्ने ह  
सर्भे जो सूर्य नक्षत्र जा मिले तो वर्षा जानिये ॥ पर्जन्य नक्षत्र ॥ अ  
श्विनी मृग पुष्येषु पूष विष्णु मघा सुच ॥ स्वात्या प्रविशते भा  
नुर्वर्धते नात्र सशयः ॥ १ ॥ टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य देवती श्रव  
ण मघा स्वाति इन नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक होय ॥ १ ॥

(स्त्री नपुंसक नक्षत्र जानना)

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विप्राखात्रिनपुंसकं मू  
लाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ १ ॥ वा  
युर्नपुंसकेभ्यश्च स्त्रीणां भेदाद्भूतानम् ॥ स्त्री  
णां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ २ ॥

टीका ॥ आर्द्रा से स्वाति पर्यंत १० स्त्री संज्ञक विप्राखा हे ज्येष्ठा  
पर्यंत इन पुंसक मूल से मृगशिर पर्यंत १४ पुरुष संज्ञक नपुंसक न  
क्षत्रों में स्त्री नक्षत्र आवे तो वायु चले और दोनों स्त्री २ आवें तो मेघ वर्षा  
न शीतल छाया हो और जो स्त्री पुरुष नक्षत्रों का योग होय तो वर्षा  
बहुत होय ॥ (सूर्य चंद्र नक्षत्र की संज्ञा)

अश्विन्यादित्रयं चैव आर्द्रादेः पंचकं तथा ॥ पूर्वाषाढा  
दिचत्वारिचोत्तरा रेवती द्वयं ॥ उक्ताणि शशिमभ्यत्र प्रो  
च्यते सूर्यभान्यथ ॥ रोहिणी च मृगश्चैव पूर्वाफाल्गु  
निका तथा ॥ सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चंद्रे चंद्रे न वर्धति ॥ चा  
द्रसूर्ये भवेद्योगस्तदा वर्षति श्वराट् ॥ १ ॥ ३६ ॥

टीका ॥ अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मघा पू  
र्वाषाढ उत्तराषाढ श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्र नक्षत्र और श  
ष सूर्य के नक्षत्र जानिये जल दिन नक्षत्र और राह नक्षत्र ये दोनों जो



जानिये और जो ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्ग में पशु जानिये- तिसने आगे ७ सात नक्षत्र आवें तो घर में आया जानिये- तिस पीछे दो २ नक्षत्रांत आवे तो आवन हार नहीं तिसके आगे ३ तीन नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा फल जानिये ॥ १ ॥

### (राज्यभंगहियोग)

यदि भवति कदाचि च्चाश्विनी नष्ट चंद्रा शनि रविकुज  
वारे स्वाति रायुष्पयोगे ॥ गगनचरपशूनां जंगमस्था  
वशाणां नृपतिजन विनाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥ १ ॥

टीका ॥ कदाचित् शनि रवि भौस इनमें किसी वार कर युक्त प्रमा  
वस्या को अश्विनी किवा स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग होय  
जो एसा योग परे तो पक्षी पशु जाति स्थावर राजा वा जन इनका नाश  
करे और राज्य भंग जानिये ॥ १ ॥

### (सूर्य चंद्रके परिवेषमंडलका फल)

रवि शशि परिवेषे पूर्वयामे च पीडा रवि शशि परिवेषे  
मध्ययामे च वृष्टिः ॥ रवि शशि परिवेषे धान्यनाशस्तु  
नीये रवि शशि परिवेषे राज्यभंगश्चतुर्थे ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ रवि का अथवा चंद्रमाका मंडल जो प्रथम पहरमें होय तो  
पीडा जानिये- दूसरे पहरमें होय तो मघ वर्षे- तिसरे पहरमें होय तो  
धान्यका नाश- चौथे पहरमें राज्यभंग होय ॥ १ ॥

### (उत्पातों का फल)

रात्रौ धनुर्दिने उल्का तारा चैव दिने तथा ॥ रा  
त्रौ धूमकेतुश्च भूकंपश्च तथैव हि ॥ १ ॥ ए  
तानि दुष्ट चिन्हानि देशक्षयकारणि च ॥ १ ॥

टीका ॥ रात्रि में धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्र पात और रात्रि में  
धूमकेतु का उदय तथा भूकंप ऐसे दुष्ट चिन्ह लक्षित होय तो  
देश क्षय कारक जानिये ॥ १ ॥

अथ ग्रह चक्र प्रकरणम्

जितने नक्षत्र आवें वितने फल जानिये इस चक्र से

स्थान	पिर	मुख	दा-हा	पाय	वा-हा	गुदा	नेत्रों	हृदय	भोम
नक्षत्र	ई	३	३	ई	३	१	२	३	०
फल	विजय	रोग	लक्ष्मी	मार्गव	भय	मृत्यु	मृत्यु	सुख	चक्रं

जन्म नक्षत्र से बुध जिस नक्षत्र में पड़े विस पर्यंत गिने उसका फल जानिये ॥

स्थान	मस्तक	मुख	नेत्र	नाभि	पाय	वा-हा	दा-हा	गुदा	बुध
नक्षत्र	३	१	३	५	ई	४	४	२	०
फल	राज्य	धन	प्राप्ति	लक्ष्मी	मवांस	धनला	धनला	बंधन	चक्रं

गुरु जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने जिस स्थान में पड़ा हो उसका फल

स्थान	मस्तक	दा-हा	कंठ	मुख	पाय	वा-हा	नेत्रों	०	गुरु
नक्षत्र	४	४	१	५	ई	४	३	०	०
फल	राज्य	लक्ष्मी	धन	पीड़ा	मृत्यु	सुख	सुख	०	चक्रं

शुक्र जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने जिस स्थान में पड़ा होय उसका फल जानना ॥ शुक्र में

स्थान	मुख	मस्तक	दा-हा	वा-पाय	हृदय	हाथों	गुदा	०	शुक्र
नक्षत्र	३	५	३	३	२	६	३	०	०
फल	लाभ	शुभ	हानि	लेश	धनसु	मित्रसु	स्त्रीला	०	चक्रं

शनि जिस नक्षत्र में होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने से जिस स्थान में पड़ा हो उसका फल जानना

स्थान	मस्तक	मुख	दा-हा	पायों	वा-हा	हृदय	नेत्र	मस्तक	गुदा
नक्षत्र	१	१	४	ई	४	५	४	१	१
फल	रोग	रोग	लाभ	मार्गव	बंधन	लाभ	प्रीति	पूजा	मृत्यु

जन्म नक्षत्र से राहु जिस स्थान नक्षत्र पर होय तिस पर्यंत गिने जिस स्थान में होय उसका फल जानिये ॥

शुश्रांकयुताः ॥ परिभाजितशून्यरसैर्घटि  
का कर्कादिनिशा मकरादि दिनम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अयनकहिये कर्क संक्राति से मकर संक्राति तक ई महीने  
तेसेही मकर से कर्क तक ई महीने होते हैं जिस दिन का दिन मान  
काढ़ना हो तिस पर्यंत कर्क संक्राति से दिन गिने उसको तीन ३ से  
गुणा करे जो अंक आवे १५ ३० ये अंक उनमें मिलावे और ६० का  
भाग दे जो बचे वह रात्रि मान जानिये और मकर से गुणा करे तो  
दिनमान आवे यह रीति जानिये ॥ १ ॥

(दिन कितना चढ़ा यह जानने की रीति)

पाद्प्रभान्मयुता रहिता चमेषात् षट्खिंदुना त्रियु  
गवाणाश्राब्धिगमैः ॥ स्याद्वाजको दिनदलस्य न  
गाहतस्य पूर्वगतास्पुरपरे दिनशेषनाडयः ॥ १ ॥

टीका ॥ अपनी छाया को पेरों से नापे जितने पांव आवे उनमें ७ सात  
और मिलावे और मेष संक्राति से कन्या की संक्राति पर्यंत इंद्रु कहिये  
एक घटावे तिसके आगे तुला से मीन पर्यंत जो संक्राति उसका क्षेपक  
उनमें घटावे ऐसे तुल ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३  
इस प्रमाण से अंक घटावे और जुदे २ लिखे तिस पीछे दिन दल  
कहिये १५ इसको सात से गुणा किया तो १०५ हुए इनमें पीछे  
लिखे हुए अंकों का भाग दे जो भागंक आवे तो घटी जानिये परंतु  
पूर्वाद्ध में दिवस की घटी आवे और उत्तरार्द्ध में दिन शेष आवे तो  
यह जानिये और रात्रि कितनी गई यह जानने की रीति नीचे  
लिखते हैं ॥ १ ॥

(रात्रि कितनी गई यह जानने की रीति)

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रसप्तसंख्यादिशोधितसर्वि  
श्रुतिघ्नं नवहतं गतारात्रिस्फुटा भवेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ रात्रि से जो नक्षत्र होय तिस पर्यंत सूर्य नक्षत्र से गिने उ  
समें सात ७ घटावे शेष रहे उसको २० बीन गुणा करे और

टीका ॥ फाल्गुण शुद्ध पूर्णिमा में जो होली की लो पूर्व को जाय तो प्रजा को और राजा को सुख जानिये और दक्षिण को जाती होय तो प्रजा भाग जाय और अकाल पड़े निश्चय करके जानना और जो पश्चिम को लो जाती होय तो लण बड़े संपत्ति होय जो उत्तर को जाती होय तो अन्न बड़े और जो आकाश को जाय तो राजा गढ़ में जाय बैठे और विग्रह होय ॥ इति हुतासनी धूल वर्षा फलम् ॥

(वर्षा फलं)

क्षयकृत्यां शुद्धिश्च निहारश्च भयंकरः ॥ वि  
द्युत्पातो ग्निदाहश्च परिवेशश्च रेनकात् ॥ १ ॥ दि  
ग्दाहोऽग्निभयं कुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः कृत्वा  
वायुश्चन्द्रशब्दश्चौरभीतिप्रदायकौ ॥ २ ॥ ग्रह यु  
द्धे राजयुद्धे केतौ दृष्टे तथैव च ॥ ग्रहाणां ते महा  
दृष्टि सर्वदोषविनाशिनी ॥ ३ ॥ ५ ॥ ५ ॥

टीका ॥ जो धूल की वर्षा होय तो क्षय करे और जो कुहर पड़े तो भयंकर लोक में जानिये - जो विजली पात होय तो अग्नि चारों ओर लगे और जो वज्र पात होय तो राज की भय जानिये - और जो मल्ल रत्न शब्द करती अचंड पवन चले तो चोरन की भय जानिये और जो ग्रहों में युद्ध होय तो राजान में युद्ध जानिये - और जो केतु उदय दीखे तो युद्ध का भय जानना चाहिये - और जो ग्रह के अंत में वर्षा होय तो सब दोषों को दूर करे ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

इति धूल वर्षा

इति श्रीशुकदेव विरचिते ज्योतिषसारसंघट्टसारादि  
प्रकरणे समाप्तमशुभम्

दिन रात्रि वली शेषग्रह उदय भये पर अष्ट प्रहर वली है ॥ १ ॥

### वार दोष

नवार दोषाः प्रभवन्ति रात्रौ दैवेज्य दैत्येज्य  
दिवा करणाम ॥ दिवा प्राणाकार्कजभूसु  
तानां सर्वत्र निद्यो बुधवार दोषः ॥ २२ ॥ ॥

टीका ॥ बृहस्पति शुक्र सूर्य इनको दिनमें दोष नहीं है रात्रि में दोष है  
सोम मंगल इनको दिनमें दोष है रात्रि में नहीं है और बुधवार को दि  
न रात्रि में दोष है और शनि को दिनमें दोष है रात्रि में नहीं ॥ १ ॥

### अथ वार कृत्यम्

सोम सौम्यगुरु शुक्र वासराः सर्व कर्म सुभ  
वंति सिद्धिदाः ॥ भानुभोन शनि वासरेषु  
च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्धति ॥ १ ॥

टीका ॥ चंद्रमा बुध बृहस्पति शुक्र ये सब कामों में सिद्धि के देने वाले  
हैं ॥ और शनि सूर्य मंगल ये कहे जो कर्म तिनमें सिद्धि देने वाले हैं ॥ १ ॥

॥ अथ वार परत्वतेल लगाने का शुभाशुभ फल ॥

रवि स्तापंकांतिं श्रितरति प्राणी भूमितनयो  
मृत्तिलक्ष्मी सौन्यः सुरपति गुरु वित्तहरणम्  
विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिल भोगानुगमने नृ  
णां तैलाभ्यं गात्सपतिकुरुते सूर्यतनयः ॥ ५ ॥

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे तो सांप होय - सोमवार को शाभाव है  
मंगल को तेल लगावे तो मृत्यु तुल्य कष्ट होय - बुधवार को तेल लगावे तो  
धन प्राप्त होय - बृहस्पति को लगावे तो हानि होय - शुक्र को लगावे तो  
दुःख होय - शनि को लगावे तो सुख पावे ॥ ५ ॥

रदौ दूर्वागुरौ पुष्पं भौम वारे च मूत्तिका  
भृगौ तु गोमयं दद्यात् तैल दोषान विद्यते १

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे तो दूर्वा डाल ले - मंगल को ते  
ल लगावे तो मृत्तिका डाल ले - बृहस्पति को तेल लगावे तो पुष्प डाल ले

टीका ॥ अश्विनी शुभ की देनेहारी - भरणी और कृत्तिका का  
 र्थ नाश करनेहारी - रोहिणी और मृगशिर यह शुभ को देती  
 है - आर्द्रा मध्यम है - पुनर्वसु पुष्य ये शुभ को देते हैं - श्लेषा औ  
 र मघा पूर्वाफाल्गुनी यह तीनों शोकहानि मृत्यु की करने वा  
 ली हैं - उत्तरा हस्त चित्रा यह विद्या लक्ष्मी की करने वाली हैं -  
 ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ ये क्रम से क्षय नाश अर्थ की हानि करने  
 वाली हैं - उत्तराषाढ और अभिजित श्रवण ये बुद्धि वृद्धि क  
 रने हारे हैं - धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद ये क्रम से शुभक  
 ल्याण मृत्यु के देने हारे हैं - उत्तराभाद्रपद और रेवती ये श्री  
 के और कामना के देने हारे हैं ॥ ५ ॥

### नक्षत्रों के स्वामी

भेषा दास्य यमाग्नि केन्द्र गिरिशाः प्रोक्ता अदि  
 त्यं गिराः सर्पाः कव्यभुजा भगो र्यम रवित्वष्टाह  
 यामारुतः ॥ इन्द्राग्नि त्वथ मित्र इन्द्र निःकृतिर्गो  
 र्च विश्वे विधिवैकुण्ठो वसुपाप्यजेक चरणा  
 हिर्वुध्य पूषा मिथाः ॥ २ ॥ ३ ३ ३ ३ ॥

टीका ॥ हस्त कहिये अश्विनी यम कहिये भरणी अग्नि कहि  
 ये कृत्तिका कर्क कहिये रोहिणी इंद्र कहिये मृगशिर गिरिशा  
 कहिये आर्द्रा आदित्य कहिये पुनर्वसु अंगिरा काहये पुष्य स  
 र्प कहिये श्लेषा कव्यभुज कहिये मघा भग कहिये पूर्वा फा  
 ल्गुनी अर्यम कहिये उत्तराफाल्गुनी रवि कहिये हस्त त्वष्टा क  
 हिये चित्रा मारुत कहिये स्वाति इन्द्राग्नि कहिये विषाखा मि  
 त्र कहिये अनुराधा इंद्र कहिये ज्येष्ठा निःकृत कहिये मूलनीद  
 कहिये पूर्वाषाढ विश्व कहिये उत्तराषाढ विधि कहिये अभिजित  
 वैकुण्ठ कहिये श्रवण वसु कहिये धनिष्ठा पाषि कहिये शतभि  
 षा अजक चरणा कहिये पूर्वा  
 भाद्र पद कहिये अहिर्वुध्य कहिये

षाढ उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में देवालय बनाना ध्वजा ब  
नाना मंडप बनाना घर कोट भीति तोरण द्वार बाग राज्या  
धिषेक ये करना शुभ है ॥ ६ ॥

### ध्रुव स्थिर नक्षत्र

रोहिणी सहित मुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति सु  
नयो ध्रुवद्वयम् ॥ बीज हर्म्ये नगर भिषे  
चना राम शान्तिपु हितं स्थिरेषु च ॥ ८ ॥

टीका ॥ रोहिणी तीनों उत्तरा ये ध्रुव स्थिर कहे इन में बीज  
बोचना घर नगर इन में प्रवेश करना बाग बनाना शान्ति  
कर्म करना यह शुभ है ॥ ८ ॥

### मृदु नक्षत्र

त्वाष्ट्र मित्र प्राणि पूष देवतान्यामन्ति  
मुनयो मृदुन्यथा ॥ मित्र कार्य रति भूषणां  
वरो ह्यत मंगल विधानमेषु तु ॥ १० ॥

टीका ॥ ऋगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इन नक्षत्रों में मित्र  
कार्य स्त्री संग आभूषणा वस्त्र धारण गाना नाना प्रकार के  
मंगल कार्य करना ॥ १० ॥

### लघु संज्ञक

अश्विनी गुरु भयर्क देवतं सामि जित लु  
घु चतुष्टयं मतम् ॥ पाय भूषणा कलारतो  
पथज्ञान शिल्प गमनेषु सिद्धिदम् ॥ १

टीका ॥ आश्विनी पुष्य हस्त अभिजित इन नक्षत्रों में आभूषण  
पहना दुकान करनी कला सीखनी जीडा करनी शोषधि कर  
नी गान विद्या सीखनी प्रस्थान करना ये शुभ हैं ॥ १ ॥

### तीक्ष्णा नक्षत्र

मूल शक्र शिव सार्य देवतान्युल्लपंत्यथ  
वतीक्ष्णा संज्ञया ॥ मृतयज्ञनिधि मंत्र साधनं

लेद्रव्यं द्वयं चेद्गंडुसंस्थितं ॥ तृतीये जल मध्य  
स्थं अंतरिक्ष चतुर्थके ॥ तुषस्थं पंचमेतु स्यात्  
षष्ठे गोमय मध्यगं ॥ सप्तमे भस्म मध्यस्थमित्ये  
तत्प्रणालक्षणम् ॥ १ ॥

टीका ॥ तिथिवार नक्षत्र ग्रह इन्को जोड़े दशा गुणा करे और  
सात का भाग दे शेष बचे तो एक बचे तो पृथ्वी में द्रव्य है दो बचे  
तो वासन में धरी है तीन बचे तो जल में वस्तु है चार बचे तो अंत  
रिक्ष में पांच बचे तो भुश के मध्य में छः बचे तो गोबर के बीच  
में ७ बचे तो राख के बीच में चीज जानना ॥ १ ॥

नक्षत्र परत्व प्रश्न

मघादि आर्य मातं च समीपे वस्तु दृश्यते  
हस्तादि वसु पर्यंत मन्प हस्ते च दृश्यते  
शतताराद्यमांतं तु स्वर्गहे वस्तु दृश्यते।  
अग्न्यादि सर्प पर्यंत मृष्ट दूर गंतथा २ ॥

टीका ॥ मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी पर्यंत इन नक्षत्रों में  
वस्तु जाय तो समीप दीखे हस्त नक्षत्र से धनिष्ठा पर्यंत नक्षत्रों  
में जो वस्तु जाय तो दिखार्दे भी न दे शतभिषा से लेके भरणी प  
र्यंत जो चीज जाय तो कहना कि घर में ही है कृत्तिका से लेके  
श्लेषा पर्यंत जो चीज जाय तो दूर गई जानना ॥ २ ॥

अंधादि नक्षत्र संज्ञा

अंधकंतदनुमंदलोचनं मध्यलोचनम्  
तः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृतिभंचतु  
ष्टयं साभि जिच्च गणायित् पुनः पुनः ॥ १

टीका ॥ रोहिणी पुष्य उत्तराफाल्गुनी विशाखा पूर्वाषाढ ध  
निष्ठा रेवती इन सात नक्षत्रों को अंधे जानिये । मृगशिर  
श्लेषा हस्त अनुराधा उत्तराषाढ शतभिषा यह मंद लो  
चन जानिये - आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित् पूर्वा



अनुराधा के ४ ज्येष्ठा के ३ मूल के ११ पूर्वाषाढ के ४ उत्तराषाढ के  
३ अभिजित् १ श्रवण के ३ धनिष्ठा के ४ शतभिषा के १०० तारे  
पूर्वाभाद्रपद के २ उवराभाद्रपद के २ रेवती के ३२ हैं ॥

### अथ नक्षत्र की आकृति स्वरूप

तुरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षरामं प्राकटसममथै  
नस्योत्तमंगेन तुल्यम् ॥ मणिग्रहशरच्चक्रं  
भाति शालोपमंभं शयनसदृशमन्यञ्चित्रप-  
र्यंकरूपम् ॥ १ ॥ हस्ताकारमृतश्चमोत्ति-  
कसमंचान्यत्यबालीपमं धिषायं तोरणवस्थि-  
तं वलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुध्यत्केस-  
रिविक्रमेण सदृशं शय्यासमानम्परंचान्यद्वंति-  
विलासवस्थितमतः शृंगानिभं व्यक्तिवत् ॥ २ ॥  
त्रिविक्रमभंचमृदंगरूपं दत्तन्ततो न्यद्यमलं  
दुःखाभम् ॥ पर्यंकरूपं सुरजानुकारिद्र-  
त्यवसम्भ्रादिवचक्ररूपम् ॥ ३ ॥ ५ ५ ५ ५ ॥

टीका ॥ आश्वनी घोडा के आकार जानिये - भरणी योनि का आ-  
कार जानिये - द्युतिका बुरा के आकार - रोहिणी छकडा के आ-  
कार जानिये - मृगशिर हिरन के आकार - आर्द्रा मणिका आ-  
कार जानिये - पुनर्वसु घर की समान - पुष्य बाण की समान  
जानिये - श्लेषा चक्र की समान - मघा घर की समान - पूर्वा  
फाल्गुनी मन्वान की समान - उत्तरा फाल्गुनी शय्या की समा-  
न - हस्त हाथ की तुल्य - चित्रा मोती की तुल्य - स्वाति मूं-  
गे की समान - विशाखा तोरण की समान - अनुराधा वलि-  
न की समान - ज्येष्ठा कुंडल की समान - मूल सिंह की  
समान - पूर्वाषाढ हाथी के दात की समान - उत्तराषाढ  
संचान की समान - अभिजित् त्रिकोणाकार - श्रवण त्रिको-  
णाकार - धनिष्ठा मृदंगाकार - शतभिषा वर्तुलाकार - पूर्वाभाद्र

२३	श्रवण	शुभ	विष्णु	ऊ.सु.	चर	चल	सुर्ण	त्रिकोण	३
२४	धनिष्ठा	शुभ	वसु	ऊ.सु.	चर	चल	अंध	मृदंगा	४
२५	शत	कल्या	वरुण	ऊ.सु.	चर	चल	मन्द	वृत्ताका	९
२६	पू.भा.	मृत्यु	अजेक	अ.सु.	उग्र	क्रूर	मध्यलो	मंदाका	२
२७	उ.भा.	लक्ष्मी	अहिर्बु	ऊ.सु.	ध्रुव	स्थिर	सुलोच	यमला	२
२८	रवती	कामदा	सूर्यः	ति.सु.	मृदु	मैत्र	अं. लो	मृदंगा	३२

अथ नवीन वस्त्र धाराणां  
रोहिणी पुंकर पंचके श्विभे शुक्ले पिच  
पनुर्वसु ह्ये ॥ रवती पुवसु देवते चभेन  
व्यवस्त्र परिधान मिष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा अश्वि  
नीतीनां उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इन में नवीन वस्त्र  
पहरना शुभ है ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

जीर्ण रवौ सतत मनुभिराय मंदौ भौमे  
शुचे बुधदिने च भवेद्दनाय ॥ ज्ञानाय मं  
त्रिणिभृगौ प्रियसंगमाय मन्दे मलाय  
च नवांवर धाराणां स्यात् ॥ २ ॥

टीका ॥ रविवार को नया वस्त्र पहरे तो जीर्ण होजाय - सोम  
वार को पानी से भीज जाय - मंगलवार को शोक होय - बुध  
वार को धन मिले - बृहस्पति को ज्ञान होय - शुक्रको नवीन वस्त्र प  
हरे तो प्रियाका संग होय - शनिको पहिरे तो मैला वस्त्र होय ॥ २ ॥

॥ मोती सोना मणि रत्न वस्त्र धाराणां ॥

नासत्पपौष्णा वशुभकर पंचके च मार्तेड  
भौमगुरु मंत्रि शशांक वारे ॥ मुक्ता सुव  
र्ण विद्रम दंत शंख रक्ताम्बर गणि विधृता  
निभवन्ति सिध्यै ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धानष्ठा पुनर्व  
सुअनुराधा मृगशिर येनक्षत्र काणक्षेत्र में शुभहै ॥ १ ॥

अन्नप्राशन

रेवती श्रुतपुनर्वसु हस्त द्वाव्यतः पृथगापि  
द्वितयेच ॥ अ्युत्तरपु गदितं द्वि नवाक्षप्राश  
नेतु ऋषिभिः पृथुकानाम् ॥ २ ॥

टीका ॥ रेवती श्रवण पुनर्वसु गेहिणी मृगशिर आद्रा तोनों व  
हस्त इन नक्षत्रों में अन्न प्राशन शुभहै ॥ १ ॥

पश्चाष्टमे मास्यथच मृग दृशां पञ्चमादौ जमाये ॥ ३ ॥

(टीका)

धानकको छेहवाजाडेवं महीने में अन्न प्राशन कराना कन्या को पं  
चवे महीने से विषम मान में इस शुक्रम सुंडन कर्म करावे ॥

पुष्ये पौषो चाश्विनी प्वन्द्वे च शाक्ने हस्ताद्ये  
विके भष्वदित्यः ॥ क्षीरकाये वैष्णवाद्ये त्रये च  
मुक्ताभासादित्य पातं निवागान् ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रान्वा  
मी पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा - मंगल आदित्य शनि  
इन वारों को आठ के शुभ है ॥ १ ॥

भानुमौ संक्षयं यति तथा सप्त मातेडसुनुर्भौ ।  
मश्राष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान् ॥  
यज्ञे चन्दुदंशमुरगुरः शुक्रं च कादप्रोति प्राहुरो  
गं प्रभृति पुनयः क्षीरकाये पुनूनम् ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ रविवार को हजामत बनवावे तो एक महीना आयु में घ  
टहे - शनिवार को हजामत बनवावे तो सात महीना आयु में घटे  
है - मंगल को हजामत करावे तो आठ महीना घटे - बुध को पा  
च महीना बहे - सामवार को हजामत करावे तो ७ महीना बहे -  
रहस्यति को १० महीना बहे - शुक्र को ११ महीना बहे है ॥ १ ॥

येषु येषु प्रसंशंति क्षौरकर्ममहर्षयः

तेषु तेष्वेव प्रसंशंति नखदंतादिलेखनं १

टीका ॥ जो वार नक्षत्र क्षौरकर्म में कहे हैं ऋषियों ने सोई वार नक्षत्र दंत बांधने में और नख काटने में शुभ हैं ॥ १ ॥

### मौंजी बंधन

सौम्यपौष्णो वैष्णवे वा सवारव्ये हस्तस्वा

तीत्वाष्टपुष्याश्विभेषु ॥ ऋक्षेदित्यां मरु

लावर्धमाक्षौ संस्मर्यते नूनमाचार्यवर्यैः ॥ १

टीका ॥ मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रों में मौंजी बंधन शुभ है ॥ १ ॥

### विवाह नक्षत्र

मूलमैत्रमृग रोहिणी करैः पौष्णामारुत

मघात्तरान्वितैः ॥ निर्विधाभिरुडुभिमृगी

दृशापाणिपीडन विधिर्विधीयते ॥ १ ॥

टीका ॥ मूल अनुराधा मृगशिर राहिणी हस्त रेवती स्वाति मघा ये नक्षत्र वेध विना विवाह में शुभ है ॥ १ ॥

### अग्नि होत्र ग्रहणा करना

प्राजापत्यपूषभे सद्द्विद्वेषुष्ये ज्येष्ठास्वै

दवे कृतिकासु ॥ अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रये

पिश्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तमैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी रेवती विशारवा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृतिका तीनों उत्तरा इनमें अग्नि होत्र कर्म आचार्यों ने शुभ कहा है १

विद्यारंभः ॥ मृगादिपंचस्वपिभेषु मूले हस्ता

दिकचत्रितये श्विनीषु ॥ पूर्वोत्रये च श्रवणे च

तद्द्विद्या समारंभमुपशति सिद्धौः ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मूल हस्त अश्विनी तीनों पूर्वा चित्रा स्वाति श्रवण इन नक्षत्रों में विद्यारंभ शुभ कहा है १

उत्पन्न होय तो मृत्यु जानिये जो शंकर रक्षा करे तो भी न जीये ॥३॥

व्याधुत्पत्तिर्यस्य पौषो समैत्रे प्राणत्राणजाय  
तेतस्य कच्छात् ॥ वैश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मा  
सा द्विशत्यः स्याद्दशराणां मघास्तु ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ जो रोग रेवती अनुराधा से उत्पन्न होय तो प्राणांतक क  
छ होय उज्जराषाढ मृगशिर इनमें रोग होय तो एक महीना में अ  
च्छा होय और मघा में रोग होय तो बीस दिन में अराम होय दस  
में सशय नहीं ॥ १ ॥

पक्षाद्दस्तेवासवेसद्विद्वैवेमूलाश्विन्योरग्नि  
धिषायेनवाहात् ॥ याम्येत्वाष्ट्रे वैष्णावेवारु  
णेचनैरुज्यंस्यान्नूनमेकादशाहात् ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त में रोग होय तो १५ दिन में अच्छा होय - घनिष्ठा वि  
शाखा मूल अश्विनी कृतिका इनमें पीडा होय तो २ दिन में अ  
च्छा होय - मृगशी चित्रा श्रवण शतभिषा इनमें रोग होय  
तो ग्यारह ११ दिन में अच्छा होय ॥ १ ॥

अद्विर्वुध्येतिष्यसंज्ञेसभागेप्राजापत्यादित्य  
योऽसप्त रात्रात् ॥ रोगान्मुक्तिर्जायतेमानवानां  
निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्येः ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ उज्जराभाद्रपद पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इ  
नमें जो रोग होय तो सात दिन में निःसन्देह अच्छा होय ॥ ऐसा  
गर्गादिक मुनि कहते हैं ॥ १ ॥

### रोगमुक्तिस्नान

इंदीर्वारेभार्गवेचक्रवेषुसार्पादित्यस्वाति  
युक्तेषुभेषु ॥ पित्र्यैचांत्ये चैव कुर्यात्कदा  
चिन्नैवस्नानंरोगमुक्तस्यजंतो ॥ १ ॥

टीका ॥ सोमवार शुक्रवार और ध्रुव नक्षत्र रोहिणी तीनों उज्जरा  
श्लेषा पुनर्वसु स्वाति मघा रेवती इन में रोग मुक्त मनुष्य

## दृणकाष्ठादिसंग्रह

वासवोत्तरदलादिपंचकेयाम्यदिग्गमन  
गेहगोपनम् ॥ प्रेतदाहदृणकाष्ठसंग्रहः  
शुष्यकावितराणां च वर्जयेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ धनिष्ठा आधी पिच्छली से लेके पांच नक्षत्र पंचकके  
हैं ध. श. पू. उ. रे. इनमें घर न छावावे छप्पर न बनावे प्रेत  
दाह न करे ईंधन काष्ठ ग्रहण न करे खाट न बनावे दक्षिण  
दिशा को न जावे ये वर्जित हैं ॥ १ ॥

## हाथी लेना देना

हस्तेषु चित्रासु तथा श्विनीषु स्वातोचपुष्ये  
च पुनर्वसौ च ॥ प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुंज  
राणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त चित्रा अश्विनी स्वाति पुष्य पुनर्वसु इन नक्षत्रों  
में हाथी का सिंगार करना अलंकार पहराना ये गर्ग मुखिया  
चरैषि कहते हैं ॥ १ ॥

## अश्व लेना देना

पुष्य अविष्ठा श्विनी सौम्यभेषु पौष्यानि  
लादित्यकरावृद्धेषु ॥ सवारुणाक्षेषु बुधैः  
स्मृतानि सर्वाणि कार्याणितुरंगमानाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाति पुनर्वसु ह  
स्त शतभिषा इन नक्षत्रों में घोड़े का सिंगार करना शुभ है ॥ १ ॥

## गवादिपशुओं का लेना देना

चित्रोत्तरावैशाखरोहिणीषु चतुर्दशीदर्श  
दिवाष्टमाषु ॥ ग्रामप्रवेशं गमनप्रदध्या  
ह्नीमान्यशूनां कदाचिदेव ॥ १ ॥

टीका ॥ चित्रा तीनों उत्तराश्रवण रोहिणी - चौदश अमावस  
सं-दिन अष्टमी इनमें पशुको गाँव भोजनावागमन प्रवेश करना

जघन्य कहिये या में जो चंद्रोदय होय तो मास में महंगा कहिये  
तीनों उत्तर राशिणी विशाखा पुनर्वसु ये चहत्संज्ञक होय हैं  
इनमें चंद्रोदय होय तो समर्ध होय शेष नक्षत्रों में रहै तिनमें जो  
चन्द्रमा उदय होय तो सम संज्ञक कहिये तिनमें सम कहना  
चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

### राशि परत्व चंद्रोदय

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततन्दक्षिणोन्नतः

शेषोन्नताश्चोत्तरायां समतावृषकंभयोः ॥ १

विडवर्गसमे चन्द्रे दुर्भिक्षन्दक्षिणोन्नते ।

सुभिक्षं क्षममारोग्यं मुत्तराश्चित्पचन्द्रमाः २

टीका ॥ मेष मीन का चंद्रमा शुक्ल पक्ष की दूज को उदय होय  
तो दक्षिण को ऊँचा जानिये जिसमें महंगा दुर्भिक्ष की तुल्य क  
हना मियुन से लेके मकर पर्यंत जो चंद्रमा दूज को उदय होय  
तो उत्तर को ऊँचा कहिये तो सुभिक्ष सुकाल कहना आरोग्य  
कहिना और वृष कुंभ में जो चंद्रमा दूज को उदय होय तो स  
मता जानिये वैश्वान को श्रेष्ठ राजान को कलह कारक कहि  
ये शुदी दूज को चंद्रोदय फल जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

### द्रव्य स्थापित करना

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिषायैर्य

द्वन्द्वविणंप्रयुक्तम् ॥ हस्तेन विन्यस्त

वसुप्रनष्टं नलभ्यते तन्नियतं कदाचित् १

टीका ॥ साधारण संज्ञक उग्र ध्रुव दारुण इन नक्षत्रों में जो  
द्रव्य अपने हाथ से गाढ के रखी सो कभी न मिले ॥ १ ॥

### ऋण वर्जित

ऋणं भौमेन गृह्णीथानुदयबुधवासरे ॥ ऋ

णच्छेदकजे कुर्यात्संचयसोमनंदने ॥ संक्रांति

वारे काले भरायां सूर्यस्य वारेन ऋणं शुभाय १

## पुष्यनक्षत्रकेगुणदोष

परकाष्टं निखिलं निहंति पुष्यो नखलु निहंति  
परंतु पुष्यदोषम् ॥ ध्रुवममृतकरोष्टमेपि पु  
ष्ये विहितमुपैति सदैव कर्म सिद्धम् ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र दूसरे के दोष को और अष्टम स्थान स्थित  
जो चंद्रमा तिसके दोष को दूर करता है परंतु उसी नक्षत्र का  
दोष होय तो दूर नहीं होता है और पुष्य नक्षत्र में किया कार्य  
सिद्ध होता है ॥ १ ॥

सिंहो यथा सर्व चतुष्पदानां तथैव पुष्यो  
वलवानुडनाम् ॥ चंद्रे विरुद्धेष्यथ गोच  
रेपि सिद्धांतिकार्याणि कृतानि पुष्ये १ ॥

टीका ॥ जैसे सब चौपायों में सिंह वलवान है तैसे सब नक्षत्रों में  
पुष्य वलवान है और पुष्य में किया कार्य और गोचर कृत दोष  
और चौथा अष्टम वार है चंद्रमा होय तो भी यह अष्ट फल  
के देने वाला है ॥ १ ॥

ग्रहेण विद्वोष्य शुभान्वितोपि विरुद्धतारो  
पि विलोमगोपि ॥ करोत्यवश्यं सकलार्थ  
सिद्धिं विहाय पाणिग्रहणन्तु पुष्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ ग्रह करिके विद्या भी होय और ग्रह करके युक्त भी होय  
तो भी शुभ है अथवा वार दूसरे से प्रतिकूल होय तो भी पुष्य नक्षत्र  
कार्य को सिद्ध करे है परंतु विवाह में शुभ नहीं है पुष्य न  
क्षत्र या में वर्जित है ॥ १ ॥

## योग प्रकरणं

अथ प्रति दिन योग जानने की रीति  
वाक्पते र्के नक्षत्रं श्रवणा च्छांद्र मेव च गणा  
येतद्भुतिं कुर्याद्दोगस्याह सशेषतः ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र से ले सूर्य के नक्षत्र ताई गिनें और श्रवणा



एकोनाः सप्तदशैषाः करणां स्याद्दृवादि कम  
टीका ॥ गड् भर्द् तिथि को शुक्ल पक्ष की परिवार से लेके दूनी करे  
एक घटा देना सात का भाग देना शेष रहे सो करण जानिये ॥

### नाम करणों का

ववाक्हयं वालव कौलवारव्यंततोभवेतैतल  
नामधेयम् ॥ गगामधानं वणिजं च विष्टिरित्या  
हरयाः करणानिसत्त ॥ अंते कृष्ण चतुर्दश्यां  
शुकुनिर्दृशभागयोः ॥ गेयं चतुष्पदं नागं किं  
स्तुम्नं प्रति पहले ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ वव १ वालव २ कौलव ३ तैतल ४ गरल ५ वणिज ६  
विष्टी ७ ये सात करण चर संज्ञक जानिये और कृष्ण पक्ष की चौ  
दश के पिछले दल में शुकुनि करण जानिये और मावस को चतुष्प  
द नाम ये दोनों दल में जानिये और पड़वा के पहले दल में किस्तुम्न  
करण जानिये ये चार करण स्थिर संज्ञक जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

### करणों के स्वामी

इंद्रो ब्रह्मामिव नामर्यं मामूः श्रीः कीनाशश्चे  
ति तिथ्यर्द्धनाथाः ॥ कल्पुष्मारव्यो सर्व वायु  
स्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ वव का इंद्र स्वामी - वालव का ब्रह्मा - कौलव का मित्र  
तैतल का सूर्य - गग का भूमी - वणिज की लक्ष्मी स्वा. विष्टी का  
यमराज - शुकुनि का काल स्वा. - चतुष्पद का वैल स्वा. - नाग का  
सूर्य स्वामी - किस्तुम्न का वायु स्वामी ये चार स्थिर स्वामी जानिये १

### करणों की कृत्य

पौष्टिक स्थिर शुभानिवारव्ये वालवे द्विजहि  
तान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवे प्रमद मित्र विधानं ते  
तिले शुभगताश्रयकर्म ॥ गरे च बीजाश्रय क  
र्षणा निवाणिज्य के स्थैर्ये वाणिक् क्रियाश्च ॥

दिवा सर्प मुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ॥

सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् १

टी०॥ दिनमें सर्प मुखी भद्रा जानिये - रात्रिमें विच्छू संज्ञक भद्रा जानिये - दिनमें भद्रा मुख त्याज्य है - रात्रिमें पूछ त्याज्य है ॥ १॥

रात्रि भद्रा यदा हि स्यादिवा भद्रा यदा निशी ॥

नतत्र भद्रा दोषः स्यात्सर्वकार्येषां साधयेत् २

टीका ॥ दिनकी भद्रा रात्रिमें होय और रात्रि की भद्रा दिन में होय तो भद्रा का दोष नहीं ॥ २॥

भद्रा का शरीर विभाग

नाड्यस्तु पंच वदनेथ गले तथैका वक्षोद्

शैक सहितं नियतं च तस्रः ॥ नाभ्यां कदोष

उथ पुच्छं ललाच तिस्रो विष्टेर्बुधैरभिहितौ

इ विभागश्च ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥

टीका ॥ मुख की पांच घरी गले की एक घरी वक्षस्थल की ग्यारह घरी नाभ की ४ घरी कमर की ६ घरी पूछ की तीन घरी यह घरी भद्रा के अंग की कहीं ॥ १॥

भद्रा के अंग का फल

मुखे कार्य धस्ति भवति मरणां चाथ गलके

धनाहानिर्वसस्यथ कटिनटे बुद्धि विलयः ॥

कलिर्नाभौ देशे विजय मथ पुच्छे च जगद्

शरीरे भद्रा याः पृथगिति फलं पूर्व मुनयः २

टी०॥ मुख की घरी में कार्य नाश करे - गले की घडी मरणा का फल दे - वक्षस्थल की घडी धन का नाश करे - कमर की घरी बुद्धि का नाश करे - नाभिकी घडी कलह करे - पूछ की घडी विजय करे - भद्रा के शरीर का यह फल पूर्व मुनि कहते हैं ॥ २॥

चंद्रजन्य भद्रा वास फलं

मीने मेषालि कर्के शशि निवसति स्वर्ग संस्था

ऐसी विष्टी नाम जिसकी सात भुजा हिरन की सी गर्दन पर ला सका सा उदर जिसका प्रेतके ऊपर चटी भई दैत्यों को बध करने वाली देवता श्रीने प्रसन्न होकर अपने कानों से लगाया इससे भद्रा नाम करारा भया ॥२॥

भद्रा का ग्रंग				फल		चंद्रमा		वासा	
विजय	३	पूछ	११	वृक्षा स्थल	धन नाश	मेष मकर	वृष कर्क	स्वर्ग	कार्य शुभ
बोहू नाश	६	कमर की	९	गला	भररा	कन्या तुला	मिथुन धन	नागे	धन लाभ
कलह	४	नाभि	५	मुख	कार्य ध्वंस	कुंभ वृश्चिक	मीन सिंह	मृत्यु	कार्य नाश

भद्रा का फल

भद्रा नाम वार पर		शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष		शास्त्रार्थ	
बेद शु	कल्याणी	२५	पूर्वाह्न	२६	उत्तरा	दिन की भद्रा रात्रि में शुभ है	
शनि	वृश्चिकी	२७	उत्तरा	२८	पूर्वाह्न	रात्रि की भद्रा दिन में शुभ है	
सं. मं. बु	भद्रा	०	०	०	०	तहां भद्रा का दोष नहीं है	

करणों के नाम तिथि स्वामी

शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष		नाम		स्वामी		कृत्य	
पूर्वदल	उत्तरदल	पूर्वदल	उत्तरदल	किंस्तुष्ट	वायु	० ० ० ०			
१ स्थि	० ०	० ०	० ०	किंस्तुष्ट	वायु	समस्त शुभ कार्य			
५ ८	२ २५	४ ११	७ ०	वष	इंद्र	उत्तरत्साह देव कर्म			
९ १६	५ १०	९ ८	४ ११	वालव	ब्रह्मा	ब्राह्म कर्म			
१२ २३	८ ५	१२ ९	८ १२	कोलव	मित्र	उत्साह मित्र का			
१५ २४	१३ २	१५ ५	१२ १२	मैतल	सूर्य	विवाहादि			
१८ ३	१६ ६	१८ २	१५ १२	गरल	भूमि	बीज बोना			
२१ ७	१९ ३	२० ६	१८ १३	बशिज	लक्ष्मी	देव कर्म			

६११  
३१०

की सुख देय - राक्षसी चांडालों को सुख देती है ॥ १ ॥

**कालफल**

पूर्वान्ह काले नृपतिः । ह्यजेन्द्रान्मध्यंदिने च ।  
 यविशोपरान्हे ॥ शूद्रान् रवावस्तमिते प्रदो-  
 षे पिशाचकान् रात्रिचरान्निशीये ॥ २ ॥  
 नदादिकांश्चापररात्रकाले प्रत्यूषकाले प-  
 शुपालकांश्च ॥ संक्रांति रक्तस्य सभस्तलि-  
 गाप्रभातसंध्यासमये निहंति ॥ १।२ ॥

टीका ॥ पूर्वान्ह काल में ब्राह्मण और राजाओं को सवाई - मध्या-  
 न्ह में वैश्यों की - अपरान्ह में शूद्रों की - अदोष में पिशाचों  
 की - अर्द्धरात्रि में राक्षसों की - अपररात्रि में नदों की - प्रत्यू-  
 ष काल में पशुपालकों की ॥ १ ॥ २ ॥

**दिशाकोसुख**

अर्केशुक्रे सुखं पूर्वसौम्ये भौमे च दक्षिणे ।  
 शनौ चंद्रे सुखं पश्चिमाहुरौ चैवोत्तरासुखी ॥ १ ॥

टीका ॥ सूर्य शुक्रे को पूर्व सुख जानिये - बुध मंगल को दक्षिणा सुख  
 जानिये - सोम शनि को पश्चिम सुख जानिये - बृहस्पतिको  
 उत्तर सुखी संक्रांति जानिये ॥ १ ॥

**वारनक्षत्रों के अनुसार संक्रांतिकाच-**

वार	उग्र	नाम	काल	दिशा	फल	फल
रवि	क्षिप्र	घोरा	पूर्वान्ह	पूर्वकी	शूद्रसुख	विप्र राजा
चंद्र	चर	ध्वाक्षी	मध्यान्ह	पश्चिम	वैश्योंकी	वैश्योंकी
मंगल	भैत्र	महोदरी	अपरान्ह	दक्षिणा	चौरोंकी	शूद्रोंकी
बुध	ध्रुव	मंदाकिनी	प्रदोष	दक्षिणा	राजाओं	पिशाचों
बृहस्प-	भिष्म	नन्द	अर्द्धरात्रि	उत्तरकी	द्विजगण	राक्षसों
शुक्रे	दारुणा	भिष्मा	अपररात्रि	पूर्वकी	पशुओंकी	नदोंकी
शनि	नक्षत्र	राक्षसी	प्रत्यूषका	पश्चिम	चांडालों	पशुपालों

फलं ॥ गजेलक्ष्मी ३ स्थैर्यं घोटके वाहने तथा ॥  
 सिंहे व्याघ्रे भयं प्रोक्तं सुभिसंगर्दभे शुनौ ५ ॥  
 वाराहे महती पीडा जायते मेष वाहने ६ ॥  
 महिष्यां च भवेत्केशः कुक्कुटे मृत्युरेव च ५ ॥

टीका ॥ वाराह में महती पीडा - मेष में पीडा - महिष में क्लेश - कुक्कु  
 ट में मृत्यु के समान क्लेश जानना ॥ ५ ॥

### संक्रांतिके वस्त्र

श्वेत पीत हरितं च पांडुरं रक्तं श्याममसितं  
 वह्नवर्णम् ॥ कंबलो विवसनं धनवर्णान्यं  
 शुकानि च ववादि ५ क्रमात् ॥ १ ॥ १ ॥

टीका ॥ वस्त्र में श्वेत वर्ण - बालव में पीत वर्ण - कौलव में हरित - तैत  
 ल में पांडुर - गरल में रक्त - वशिज में श्याम वर्ण - विष्ठी में काला -  
 शकुन में विच विचित्र - चतुष्यद में कंबल - नाग में नग्न - किंस्तुघ्न में  
 धन वर्ण जानो ॥ १ ॥

### आयुध

भुशुंडी च गदा खड्ग दंड को दंड तोमरान् ॥

कुंत पाशांकुशास्त्रं च वाराश्रैवायुधं ववात्

टीका ॥ वस्त्र में तोप - बालव में गदा - कौलव में खड्ग - तैतल में दंड - गरल  
 में धनुष - वशिज में तोमर - विष्ठी में वरुछी - शकुन में पाशा - चतुष्यद  
 में अंकुश - नाग में ललवार - किंस्तुघ्न में वारा ॥ १ ॥

### भोजन का पात्र

सौ वरीं रजतं तांभ्रं कांस्यं लोहं च स्वर्णरम्

पत्रं वस्त्रं करो भूमिः काष्ठ पात्रं ववादि ॥

टीका ॥ वस्त्र में सोने का - बालव में रूपा - कौलव में तांबा - तैतल में कांसा -  
 गरल में लोहा - वशिज में ठीकरा - विष्ठी में पत्र - शकुन में वस्त्र - चतु  
 ष्यद में कर - नाग में भूमि - किंस्तुघ्न में काष्ठ पात्र जानो ॥

### संक्रांतिका भक्ष्य पदार्थ

अन्नं च पायसं भक्ष्यं पक्वान्नं च पयोदधि ॥

श्री०॥ वव में नूपुर · बालव में कंकना · कोलव में मीती · नैतिल में मू-  
गा · गरल में मुकट · वरिज में भशि · विष्ठी में गोंगची · शकुन में को-  
डीका · चतुष्पद में नीलक · नाग में पन्ना · किंस्तुप्र में सोनेका ॥ १॥

### संक्रांतिकी कचुकी

विचित्र परांगी शुक भूर्ज पत्रिका सीता तथा पाट  
ल नील वर्णा ॥ कृष्णाजिन चर्म वल्क पांडुर  
ववादि तत्रैव तु कंचुकी स्यात् ॥ १ ॥ ५ ॥

श्री०॥ वव में विचित्र · बालव में पजउ श्या · कोलव में हरित वर्णा नैतल  
में भोज पत्र · गरल में सेत · वरिज में पाठल · विष्ठी में नीला · शकुन  
में काली · चतुष्पद में अंजनी · नाग में वल्कल · किंस्तुप्र में पांडुर ॥ २ ॥

### संक्रांतिकी अवस्था

शिशुः कुमारी च गता लका युवा प्रौढा प्रगल्भा  
यततश्च दृढा ॥ बंध्या च बंध्याति सुवार्थिनी  
च प्रव्राजका चैव फलं शुभं ववात् ॥ १ ॥

श्री०॥ वव में बालक · बालव में कुमारी के मल में गता लका · नैतल  
में युवा · गरल में प्रौढा · वरिज में प्रगल्भा · विष्ठी में दृढा · शकु-  
न में बंध्या · चतुष्पद में अति बंध्या · नाग में सुवार्थिनी · किंस्तु-  
प्र में श्राव्राजिका सुवासनी ॥ १ ॥

### फलश्रुति

वाहनादि बुधैर्ज्ञेयमथो संक्रांतिशेषतः ॥

वाहनादिक वस्तुनां संक्रमातु विनाशता २

श्रीका ॥ संक्रांति जिस वाहन पर स्थित हो और जो वस्तु धारण  
करती हो उसका नाश कहना ॥ १ ॥

### संक्रांति कितने मुहूर्तों की होती है

संक्रांतौ भूर्ति भेदा हर पवन यमे चारुणो सर्पिरोद्दे  
रुषा पंचेदु संसायुक्त कर पितृ भेचाग्निदस्वचसोम्ये  
त्वाश्रु मेत्रे च मूले श्रुति वसु वपुषा त्रीणि पूर्वा सरामे

## संक्रांतिकादूसराप्रकार

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋषकम्  
द्वित्रिसंख्यासमर्धस्याच्चतुःपंचमहर्घता १

श्रीका ॥ गये मास की संक्रांति का दिन नक्षत्र और प्राप्ति संक्रांतिका  
दिन नक्षत्र इन दोनों का अंतर करने से जो तीन वा दो होंय तो सप्त  
जानना और चार पांच जो अंतर आवे तो महंगा जानिये ॥१॥

### धान्यविचारः

संक्रांतिनाड्यातिथि वारऋषधान्याक्षरं वदि  
हरेतु भागम् । अन्यच्च । संक्रांतिनाडी नवमिष्टि  
ताच सप्ताहता पाव कभाजिताच एक महर्घ  
द्वितीयेऽपि । अष्टम्ये महर्घे मुनियो वदन्ति २

श्रीका ॥ संक्रांति की घरी और गत तिथि वार नक्षत्र धान्य के नाम  
क्षर इनको एकत्र कर तीन का भाग दे - दूसरा मतान्तर ॥  
संक्रांति की घडियों में ६ सिलावे सात गुना करे और तीनका  
भाग दे शेष बचे सी फल कहना - एक बचे तो सस्ता और दो  
बचे तो सम - तीन बचे तो महंगा कहना चाहिये ॥२॥

### नक्षत्र के अनुसार संक्रांतिकी पीडा

संक्रांत्यपरनक्षत्राद्गणयज्जन्मभावधि ॥

त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं पुनः पुनः ॥१॥

पंथा भोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम्

श्रीका ॥ संक्रांति के पहले नक्षत्र से लेके अपने नक्षत्र ताई गिने इस  
रीति से उसका विचार करे पहले तीन ३ में पंथा चलावे दूसरे ६ में  
भोग मिले तीसरे तीन में वस्त्र चौथे ६ में हानि जानिये पांचमें ३  
त्रिक में धन प्राप्ति जानिये इसी रीति से सब नक्षत्रन में जानना ॥

### जन्मनक्षत्रों का फल

यस्य जन्मर्षमासाद्यतिथौ संक्रांतौ भवेत्  
तन्मासाभ्यंतरे तस्य वैरं लेशं धनक्षयः १

टी॥ जैसा चंद्रमा भला वा बुरा होय तैसा संक्रांति फल की देने वाली होती है ॥१॥

**संक्रांति पुराय काल**

पूर्वतो हि परतोश्च संक्रमात् २५ कालघटका  
स्तुषोडश ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥  
परदिनि हि पुराय दम् ॥ १॥

टी॥ संक्रांति के समय ने दोनो ओर पुराय काल की घरी सोलह सोलह होती है और आधी रात से पीछे वा पहले संक्रांति होय तो दोनो दिन पुराय काल कहना आधी पीछे दूसरे दिन पुराय काल आधी पहले पहले दिन पुराय काल ॥१॥

**चंद्र ग्रहण प्रकरण**

भानोऽप्यत्र चंद्रमा रक्षितः ॥  
योगिभास्यानिशाशेषे चंद्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका ॥ सूर्य से २५ पंद्रह बेनक्षत्र में जो चंद्रमा होय तो पूर्ण के अंत में पडवा की संधि में चंद्र ग्रहण होय ॥१॥

**सूर्य ग्रहण प्र-**

भाघोनिंग्रस्तनक्षत्रे ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥  
अमावास्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका ॥ सबेरे महीनों की भावसके दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशि के होते हैं परंतु अमावास्या के दिन सूर्य नक्षत्र और दिवस का नक्षत्र एक होय तो अमावास्या को पडवा की संधि में सूर्य ग्रहण होता है उस दिन सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र देखिये उसमें से १२ काटि शेष १६ बचे और सूर्य नक्षत्र १६ सोलहवां होय तो वही सूर्य ग्रहण होता है ॥१॥

राशि अनुसार ग्रहण शुभाशुभ फल ॥

त्रिषट् दृष्टायो पगतं नराणां शुभप्रदस्याद्ग्रह  
रं रवौद्रोः ॥ १॥ द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्यात् ॥  
शेषेष्वनियं मुनयो वदन्ति ॥ १॥ १॥ १॥

टीका ॥ सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण अपनी राशि से जिस राशि पर होय



सावरा में लक्ष्मी - भाद्र में दरिद्र - आश्विन में धनवान - कार्तिक में निर्धना - मार्गशिर में प्रजावती - चैत्र में व्यभिचारिणी - माघ में पुत्रवती - फाल्गुण में रजोदर्शन होय तो पुत्र संपन्न जानिये ॥३॥

**तिथिफल**

शुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ॥  
 तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् १  
 पंचम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी  
 सप्तम्यां सुप्रजानारी चाष्टम्यां राक्षसी तथो २  
 नवम्यां विधवानारी दशम्यां सौख्यभोगिनी  
 एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणांशुवत् ३  
 त्रयोदश्यां शुभाप्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ॥  
 पूर्णिमास्यां मावस्यां च न चाशुभमेव च ७

टीका ॥ पडवा में रजो दर्शन होय तो शुचि शोकके अर्थ जानिये - द्वितीया में दुखिया तृतीया में पुत्रवती - चैत्र में विधवा पात्र में सुहागरूठ में कार्य नाशिनी सातें में उत्तम संतान आठें में राक्षसी - नौमी में विधवा - दशमी में सुख भोगिनी - एकदशी में शुचि और द्वादशी में मरणा - त्रयोदशी में शुभ - चौदश में व्यभिचारिणी - पूर्णों में शुभ और मावस में अशुभ जानिये ॥७॥

**संक्रान्त्याग्रहणोच्चैर्वैरिणी च गता लका ।**

टीका ॥ संक्रान्ति में प्रथम रजो दर्शन होय तो वैरिणी होय और ग्रहण में होय तो विधवा का योग जानना चाहिये ॥

**वारफल**

आदित्ये विधवा नारी सोमे चैव मृतप्रजा ॥१॥  
 मंगले आत्मघाती स्याद्दुष्कन्या प्रसूस्मृताः  
 शरवे च सतः प्राप्तिः कन्या पुत्रयुतां शुभो ॥२॥  
 मंदे च पुंश्रली नारी ज्ञेयं वारफलं शुभम् ॥२॥

टीका ॥ रविवार में प्रथम रजो दर्शन होय तो विधवा होय - सोमवार

पुत्रयुक्तात् शोभने मंगलान्विता ॥ अतिगंडे तु  
 विधवा सुकर्मिणा तु शोभना ॥ धृति संपत्तियुक्तात्  
 शूले रोगयुता भवेत् ॥ गंडे दुःखान्वितानारी वृद्धौ  
 पुत्रान्विता भवेत् ॥ ध्रुवे तु शोभनानारी व्याघाते-  
 भर्तृघातकी ॥ हर्षरा हर्षयुक्ता तु वज्रं चैवानप्य  
 नासिद्धौ पुत्रान्वितानारी व्यतीपाते विभर्त्तका ॥ मृ-  
 तवत्सा च वर्याणो परिषेचाल्य जीविनी ॥ शिवे पुत्रवती  
 नारी सिद्धे शीघ्र फलान्विता ॥ साध्यधर्म परानारी शुभे  
 शुभगुणान्विता ॥ शुक्ले शुभकरानारी ब्रह्मरिणो स्वपती  
 रता ॥ ऐन्द्रे देवरक्ता च वैधव्यं वैधृतौ स्मृतम् ॥ १

टीका ॥ विष्कुंभ में प्रथम रजो दर्शन होय तो विधवा जानिये -  
 प्रीति योग में पति को प्यारी - आयुष्मान् में धन प्राप्ति - सौभाग्य  
 में पुत्रवती - शोभन में मंगल दायिनी - अति गंड में विधवा सुक  
 र्मा में शुभता - धृति में संपत्ति युक्त - शूल में रोग होय - गंड में दुःखा  
 न्वित - वृद्धि में पुत्र युक्त - ध्रुव में शुभ - व्याघात में पति घातनी - ह  
 र्षरा में हर्ष युक्ता - वज्र में चंध्या - सिद्धि में पुत्र युक्ता - व्यती पात  
 में पति रहिता - वर्याणा में मृत पुत्रा - परिषे में अल्प जीविनी -  
 शिव में पुत्रवती - सिद्धि में शीघ्र फला - साध्य में अधम परा -  
 शुभ में शुभगुण युक्ता - शुक्ल में शुभ कर्म परा - ब्रह्म में निज पति  
 रहिता - ऐन्द्रे में देवर रता - वैधृति में विधवा होय ॥ १ ॥

करणा फलं

ववे प्रोक्ता तु चंध्या स्त्री बालवेषु संपदः ॥ कोलवेषु  
 श्रुती नारी तैतिले चारुभाषिणी ॥ गरेच गुणसंपन्ना  
 वणिजे पुत्रिणी स्मृता ॥ नेत्रां च धृष्टा च दृष्टा च दृष्टौ  
 कामपीडिता ॥ चतुर्थ्ये दे शुभानारी नागे पुत्रवती भवेत्  
 किंलुप्रे व्यभिचारी तु करणा नो शुभं फलम् ॥ १ ॥

टीका ॥ वव करणा में प्रथम रजो दर्शन होय तो स्त्री चंध्या होय - बालव

श्रिके रदुःखिनी ॥ धनलग्ने धने श्रयं मकरे कर्कशा  
 भवेत् ॥ कुम्भे वंश हये प्रीच मीने सर्वगुरा विना ॥ ४ ॥  
 टी० ॥ मेष लग्ने में रजो धर्म होय तो हरिद्राणी-रूपमें धन युक्त मियुन  
 में कामिनी कर्क में पति नाशिनी सिंह में पुत्र प्रसूता कन्या में पतिव्रता  
 बुला में अधता-वृश्चिक में दरिद्र का दुःख-धन में ऐश्वर्य मकर में  
 कर्कशा कुम्भ में दोनों वंश की नाश करता-मीन में गुरावती ॥ ४ ॥

**ग्रहों के फल**

लग्ने राहु श्र सौरि श्र रवि चन्द्रो तथे वच ॥ ५  
 तदा सा विधवा नारी सर्व सौभाग्य वर्जिता १  
 टीका ॥ जिस लग्ने में प्रथम स्त्री रजस्वला हो तिस लग्ने में राहु शनि  
 रवि चन्द्र ये चार वार ग्रह स्थित होय तो वह स्त्री विधवा होय ॥ १ ॥

**रक्त दर्शन फल**

शोणितं विंदु मात्रेण सैरिणी चाल्प शोणित  
 रक्ते रक्ते भवेत् पुत्रः कृषो चैव मृत प्रजा ॥ ५  
 पिच्छली च भवे हन्था काक वंध्या च पांडुरे ॥  
 पीते दुःश्रारिणी स्या सुभगा गुंजसा दृष्टे ॥  
 सिंदूर वर्ण रक्ते तु कन्या संततिरे वच ॥ २ ॥  
 टीका ॥ अथन अतु दर्शन के समय रक्त विंदु मात्र और अल्प वर्ण हो  
 यतो स्त्री व्यभिचारिणी होय और रक्त वर्ण रुधिर होतो पुत्रवती का  
 ला वर्ण रुधिर होय तो मृत प्रजा पिच्छला कहिये गाढा होय तो बंध्या  
 पांडुर होय तो बोक और पीला होय तो दुश्चारिणी और गुंजा की तुल्य  
 होय तो शुभा सिंदूर वर्ण होय तो कन्या प्रसूता-इस प्रकार रक्त दर्  
 शन का फल जानना चाहिये ॥ २ ॥

**काल फल**

पूर्वाह्ने शुभगा ज्ञाता मध्याह्ने चैव निर्धना ॥  
 अपराह्ने शुभा चैव सायान्हे सर्व भोगिनी ॥  
 संध्या कर्मयोर्वेप्या निशीथे विधवा भवेत् ॥

चतुर्दश्यां शीघ्रास्तुः प्रशास्ता दशवासराः  
तस्माच्चिरात् चंडालो पुथितां परि वर्जयेत् ॥

टीका ॥ स्त्रियों के चतुर्धर्म से स्वाभाविक रईसोलह रात्रि होती हैं  
उनमें से प्रथमती रात्रि पुथवती की चंडाल संज्ञा ब्रह्म घात  
नी रजकी चौथी ग्यारही तेरही ये दिन वर्जित हैं और बाकी रही  
दशरात्रि सी शुभ हैं ॥ २ ॥

रात्रौ चतुर्थ्यां पुत्रः स्यादल्पायुर्धनवर्जितः ॥  
पंचम्यां पुत्रिणी नारी षष्ठ्यां पुत्रस्तमध्यमाः  
सप्तम्यां प्रजायोषी दशम्यां मीश्वरः पुमान् ।  
नवम्यां शुभगानारी दशम्यां प्रवरः स्तुतः ॥  
एकादश्यां धर्म्या स्त्री द्विदश्यां पुरुषोत्तमः ॥  
त्रयोदश्यां स्तुता पापावर्षा सकर कारिणी ॥  
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च आत्मवेदी हृदयतः ॥  
प्रजायते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पतिव्रता ॥  
आश्रयः सर्वभूतानां षोडश्यां जायते पुमान् ।

टीका ॥ चौथी रात्रि में स्त्री संगम करेती पुत्र अल्पायु धनवर्जित  
हो-पांचमी रात्रि में पुत्रवती हो-छठी रात्रि में मध्यमपुत्र-सातमी  
रात्रि में पुत्र होय - आठमी रात्रि में ईश्वर का भक्त होय-नवमी रात्रि  
में सौभाग्य वद्धि होय दशमी में गुणवान् पुत्र-ग्यारहवीं में अश्वमी  
पुत्र-बारहवीं में उत्तम पुरुष - तेरवीं रात्रि में पाप कर्ता कन्या हो-  
चौदहवीं रात्रि में धर्मात्मा कृतज्ञ व्रत करने हारा पुत्र होय ॥ पंद्र-  
हवीं रात्रि में पतिव्रता-षोडशी रात्रि में सब जीवों का आश्र  
य देने वाला पुत्र होय ॥ ४ ॥

निषेक के तिथि वार का फलं  
षष्ठ्यष्टमी पंचदशी चतुर्थी चतुर्दशी मय्यु  
भयत्रहिन्वा ॥ शेषः शुभास्तु स्तिथयोति  
ये के वाराः शशां कार्यसितेन्दुजाश्च ॥ १ ॥

**घने बुधस्य ॥ काकीच वंध्याभवतीह शु  
के स्त्री पुत्र लाभो रविजीव भौमे ॥१॥ ५**

टीका ॥ शनिवार को पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु-चंद्रवार को शरीर नाश-बुध को पुत्रनाश-शुक्र को काक वंध्या-रविजीवभौम इन में पुत्र लाभ-परंतु चंद्रमा श्रेष्ठ होय दुष्ट योगादि वर्जनीय है कहे जो नक्षत्र तिन में अरु शुभ दिन में पुंसवन कहिये जिस मुहूर्त में गर्भ की स्थिति कही उसी में अनवल्लोम न कर्म भी युक्त है ॥ १ ॥

**अन्य मतसे**

**चतुर्थे षष्ठ्यमभास भाजि सोरेण गर्भे प्रथमं विधेयम् ।  
सीमंत कर्म द्विज भामिनीनां भासेष्टमे विष्णु वलिं च कुर्यात्**  
टीका ॥ प्रथम गर्भाधारणा होने से चौथे छठे आठ में ऐसे समशीर भासों में आठ भास पर्यंत स्त्रियों का सीमंत कर्म और विष्णु वलि करना उचित है ॥ १ ॥

**सीमंते तिष्य हस्तादिति हरि शशि भृत्यो  
ष्म विद्युत्तरारथ्या ॥ पक्ष छिद्रान्च रिक्तापित्त  
तिथिषुपहायापराःस्युःप्रशस्ताः ॥१॥ ५**

टीका ॥ सीमंत कर्म में पुष्य हस्त पुनर्वसु अश्लेषा मृगशिर रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्ष छिद्र तथा रिक्ता तिथि को छोड़ि के शेष तिथि शुभ जानिये ॥ १ ॥

**पक्ष छिद्रा तिथि**

**चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ॥**

**षष्ठी च द्वादशी चैव पक्ष छिद्रा ज्ञया स्मृताः**

**कृष्ण देतास्तु तिथिषु वर्जनीयाश्च नडिकाः**

**भूला अमनु तत्त्वांक दश शेषास्तु शोभनाः ९**

टीका ॥ चतुर्दशी की प्रथम १४ चौरह घड़ी और चौथी की ८ घड़ी अष्टमी की १४ घड़ी नवमी की २४ घड़ी षष्ठी की ८ घड़ी द्वादशी की १० घड़ी ये वर्जनीय हैं शेष शुभ हैं ॥ १ ॥ २ ॥

अन्यलभ्ये भवन्ति स एव ज्ञेयं विचक्षणेः

यथा राहुस्तथा शय्याभौ मेखदा गभंगता

रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम्

रीका ॥ मीन अथवा मेष में प्रसव होय तो उस समय में स्त्री दो जा  
निये और वृष कुंभ में प्रसव होय तो चार स्त्री जानिये तुला कन्या  
होय तो सात स्त्री जानिये धन कर्क होय तो पंच स्त्री जानिये शेष  
लग्नों में तीन स्त्री जानिये - जन्म कुंडली के ग्रहों की रीतिसे जिस  
दशा में राहु होय उस दशा में शय्या का जानना जो लग्न में भंग  
ल होय तो खदा का अंग भंग कहना जिस दशा में सूर्य होय उसी  
दशा में दीपक जानिये जिस दशा में शनि होय उसी दशा में बाल  
क का नाल जानिये वा लोहा जानिये ॥ ३॥

### तिथिगंडांत

पूर्णा नशरययोः सित्योः संधिनाडी ह्यतया

गंडांतं मृत्युदं जन्मयाचोद्वाह व्रतादिषु ॥ १॥

री० ॥ पूर्णिमा के अंत में चटिका प्रतिपदा के आदिकी घटी और  
रेसेही दोनों की संधि इसक्रम से पंचमी षष्ठी दशमी एकादशी  
इनकी संधिकी दोघटी शुभकर्म में वर्जनीय हैं इनको गंडांत कहते हैं १

### लग्न गंडांत

कुलीर सिंहयोः कीटं चापयो मीन मेषयोः ॥

गंडांतं मंतराल स्याद पटिकाधं मृतिप्रदम् १

रीका ॥ कर्क सिंह इन दोनों की आधी घटी धन मीन इनकी मेष  
इनकी संधि में मृत्यु प्रर जानिये ॥ १॥

### नक्षत्रगंडांत

वैशाखिद्वयोः सर्पि पिच्यशो अथ च ज्येश्ठ

मूलयो रतरालम् ॥ तिद्रंडांतं स्याच्चतुर्नीडि के

हियात्रा जन्मोद्वाह कालिय निधम् ॥ १ ॥

रीका ॥ वैशाखिद्वयोः सर्पिनीद्वयोः अथ च ज्येश्ठ मूलयो रतरालम् ॥ तिद्रंडांतं स्याच्चतुर्नीडि के

हरले और अमावास्या में केवल जन्म होय तो बहुत से दोष लगे और जिसके इनमें प्रसूति होय तो उसकी आयु धन का नाश होय । और गंडांत में प्रसूति होय तो बहुत से दोष जानिये ॥ १ ॥

दिन क्षयादिफल

दिन क्षये व्यतीपाते व्याघाते विधि वेधतौ ॥ मूलगंडेति गंडेच परिषेयमघंटके ॥ कालगंडे मृत्यु योगे दग्धयोगे सुदारुणो ॥ तस्मिन् गंडे दिने प्राप्ते प्रसूति र्यदि जायते ॥ अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सती टीका ॥ दिनक्षय व्यतीपात व्याघात विधि वेधति गंडमूल अति गंड परिषेयमघंट कालगंड मृत्यु योग दग्धयोगदारुणयोग इन्में जन्म होय तो बड़ा पापी और प्रसूता स्त्रीको भी पाप युक्त जानिये ॥ १ ॥

ज्येष्ठानक्षत्रके जन्मका फल

ज्येष्ठादौ जन्मे माता द्वितीये जनने पिता ॥ तृतीये जनने भ्राता स्वयं भ्राता चतुर्थके ॥ आत्मानं पंचमेहं निषधे गोत्रक्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥ नवमे च दशमे सर्वहंति दशांशकम् ॥ टीका ॥ ज्येष्ठानक्षत्रमें जिसका जन्म होय तो उस नक्षत्रकी छः छः घड़ियों का भाग कर फल जानना पहली छः घड़ीमे माताको अशुभ दूसरी छः घड़ी पिताको तीसरी छः घड़ी मामाको चौथी माताको पांचवीं बालकको छठी वंश गोत्रको सातवीं पिताको आठवीं बड़े भाईको नवीं सुसुरको दशांश सबको बुरी है ॥ १ ॥ २ ॥

मूलनक्षत्रजन्मफल

मूलं स्तंभं च कच शारवापत्रं पुष्पं फलं शिखा विद्याश्च मुनयश्चैव दिशाश्च वसवस्तथा ॥ नंदाचारारसा रुद्रामूलभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ मूले मूल विनाशाय स्तंभे हानिर्धनक्षयः ॥ स्वविभ्रातृविनाशाय शारवामातृर्विनाशकृत ॥ पुत्रे सपरिवारः स्यात् पृथेय नष्ट च ल्लभः ॥ १ ॥

हृदयकी तिसमें आत्म घाती - आठवीं घरी जानु की तिसमें न  
नवमी घरी गुह्य की भोगी दशमी ५ घरी पांच की अनवान जानना  
जिस विभाग में जन्म होय तिस विभाग के अनुसार फल जानना ॥

अथ जन्म कालमें जैसे ग्रह परे होंय तिसका फल ॥

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितो दिनकरः कुरुते ग पीडा पृथ्वी सुतं  
वितनुते रुधिर प्रकोपं ॥ आया सुतः प्रकुरुते वहते दुःख भवे  
जीवेदुर्भागव बुधाः सुखं कांतिदास्युः ॥ धनस्थान ॥ दुःखाव  
हा धनविनाशकरा प्रदिष्टा वित्तस्थितारविशाने ॥ अरु विपुत्रा  
चंद्रो बुधः सुरगुरु भृगु नंदनो वानाना विधे धनचयं कुरुते ध-  
नस्यः २ सहज स्थान ॥ भानुः करोति विरुजं रजनी करोपिकी  
र्त्नोपतं क्षिति सुतः प्रचुर प्रकोपं ॥ अरु द्वि बुधः सुधिपरां सुवि  
नीतवेषं स्त्रीणां प्रियं गुरु कवीर विजस्तृतीये ३ सुहृत्स्थान ॥ आ  
दित्य भौम शनयः सुरव वि विं कुर्वेति जन्म निनरं सुचिं चतुर्थे  
सोमो बुधः सुरगुरु भृगु नंदनो वा सौरव्या न्वितं च नृप कर्मस्त ॥ प्र  
धानं ४ सुतस्थान ॥ पुत्रे रविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्च स्वत्यात्म  
जं शानि धरा तनुजा च दुःखं ॥ शुक्रं देव गुरुवः सुतधाम संस्थाः  
कुर्वेति पुत्रवहले सुरिवनं सरूपम् ५ विप्रस्थान ॥ माते इ भूषि  
तनुयो हत शत्रु पक्षं पर्युर्नरं रिपु गृहेष्वनि पूजनीयं ॥ कर्त्तव्यं  
जो मति विहीन मनल्य रोगं जीवः करोति विकले भरता शशांकः  
देजाया स्थान ॥ निगमांशु भोग रविजाः किल सप्तमस्था जायां  
कर्म निरतां तनु संततिं च ॥ जीवेनुर्भागव बुधावद्द पुत्रयुक्तां  
पां न्वितां जन मनो हर रूप शीलाम् ७ मृत्युस्थान ॥ सवे ग्रहादि  
कर प्रमुरवानितांतं मृत्युस्थितानित युते किल दुष्ट बुद्धिम् ॥ श  
स्त्राभिघात परि पीडित गात्रयस्त्रिं सौख्ये विहीन मातरोग गरीः  
रूपतम ॥ ८ ॥ धर्मस्थान ॥ धर्मस्थितारविशाने अर भूमि पु-  
त्राः कुर्वेति धर्मरहितं विमतिं कुशीलम् ॥ चंद्रो बुधो भृ  
गु मृतं स्तुर राज मंत्री धर्म क्रिया कनिरते कुरुते मनु-



संख्या	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श.रा.के
४	पीडा वहु कारक	सुखभोग	पीडा कारक	सुखभोग	सुखभोग	सुखभोग	पीडा कारक
५	रोगपुत्र पुत्र	बहुपुत्र	संतान रहित	अल्प पुत्र	बहुपुत्र	बहुपुत्र कन्या	संतति विलंब
६	शत्रुनाशक	दुःखमर शांतुल्य	शत्रु नाशः	बुद्धि हीन	शरीर विकल	बुद्धिहीन	शत्रुगृह पूज्य
७	स्त्रीदुष्टा संतान	रूपवती स्त्री	स्त्रीदुष्टा	स्त्रीरूपवान् बहुपुत्र	मनहरण सुखभोग	सुख	दुष्ट स्त्री पुत्रयो.
८	स्थान घाती	सर्व पीडा	गृहों का सुख राह	फलएत रोगी	कसमभ ऐसा	दुष्टबुल जा.	धिमान नासव.
९	अधर्मी धर्म दुष्टप्री.	धार्मिक होय	दुष्ट धर्म रहित	धर्म में प्रीति	धर्मैती र्थ	धर्म प्रीति	दुष्ट बुद्धी
१०	दुष्ट कर्म पुत्र	कीर्त वान्	कुल दीपक	कीर्ति वान्	शुभ कमी	संपति वान्	दुष्ट स्वभाव
११	राजसी आप कर्म	बहु लाभः	पृथ्वी लाभ	विवेक युक्तः	आयु वृद्धिः	गुरावान् पुत्र	कीर्ति वान्
१२	दुष्ट रत्न	नेत्र पीडा	पापी रोग	धन हीन	कृशता शरीर	व्याधि युक्तः	सत रत्न मे प्रीति

जन्मलग्न में स्त्री के मृत्यु कारक ग्रह ॥

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम संभवः ।

अष्टमे च यदा सौरीस्तस्य भार्या न जीवति १

श्रीका ॥ जन्म लग्न से छठ मे स्थान भौम राहु और सातवें हो शनि आठवें स्थान पड़े तो उसकी भार्या न जीवे ॥ यह वचन पुरुष जातक में कहा है ॥ १॥

पराक्रमी अपराक्रमी ग्रह

मूर्त्तौ शुक्र बुधो यस्य केन्द्रे चैव वृहस्पतिः ॥

**पातालस्थे यदा राहु श्रेण्डुः षष्ठाय मेपि च  
पाप दृष्टोपि शेषरा सद्यः प्राणहरः प्रिपोः**

टी०॥ जन्मलग्न से सातवें राहु और छठे आठवें चंद्रमा ही अह पाप दृष्टि से देखते हों तो बालक की मृत्यु होय अथवा होनेही लग्न में राहु होय चंद्रमा छठे होंय पाप ग्रह की दृष्टि होय तो मृत्यु जानिये ॥१॥

**जन्म लग्ने यदा भौमश्राव मे च बृहस्पतिः**

**वर्षे च द्वादशे मृत्युर्वेदिरक्षति शंकरः १**

टी०॥ जन्मलग्न में मंगल होय आठमें स्थानमें बृहस्पति होय पाप ग्रहकी दृष्टि होय तो बारह वर्ष में मृत्यु जानिये ॥१॥

**शनि क्षेत्रे यदा सूर्यो भानु क्षेत्रे यदा शनिः**

**वर्षे च द्वादशे मृत्युर्वेदो वै रक्षिता यदि २**

जो शनि के घर में सूर्य होय और सूर्य के घर में शनि होय तो बारह वर्ष में मृत्यु जानिये ॥

**षष्ठाष्टमस्तथा सूर्यो जन्म काले यदा बुधः**

**चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ३**

टी० लग्न में छठे आठवें जो बुध हों तो चौथे वर्ष मृत्यु पावे जो शं. स. तो भी ३ ॥

**भौम क्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टा सुच चंद्रमाः**

**वर्षे ष मेपि मृत्युर्वेदुश्चरो रक्षिता यदि १**

टी० मंगल के घर में बृहस्पति ही और छठे आठवें चंद्रमा ही कोई ग्रह देखता नही तो ईश्वर रक्षित बालक भी ८ वर्ष में मृत्यु होवे ॥१॥

**दशमोपियदा राहुर्जन्म लग्ने यदा भवेत्**

**वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधे मृत्युर्नरस्य च ॥**

टी० जन्म लग्न से दसवें राहु होंय अथवा लग्न में ही होतो १६ वर्ष में मृत्यु होय ॥१॥

**ग्रहों की दृष्टि**

**पादेक दृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाद दृष्टिर्नवपंचमेवा**

**त्रिपाद दृष्टिश्चतुरष्टके च संपूर्ण दृष्टिः समसप्तके च**

**शनिस्त्वेकादशे पूरणा दृष्टि जीवस्य कौराके**

विनष्टतनयां रविजोहरिद्रां। शुक्रः शशांकतनयश्च गुरु  
 असाधी मायुः क्षयं च कुरुते च च शर्वरीशः। ११। धनस्थान  
 कुर्वति भास्कर शनैश्च राहु भौमा हरिश्च दुःखमतुलं नि  
 यतं द्वितीये। चित्रे स्वरी मविधवां गुरु शुक्रसौम्या नारीं प्र  
 भूततनयां कुरुते शशांकः। १२। सहजस्थान। सूर्येन्दुभोगु  
 रुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्येद्वियं बहू सुतां धनभागिनी च।  
 सत्यं दिवा कर सुतः कुरुते धनाढ्या लक्ष्मी ददाति नियतं कि  
 लसैर्हिकेषः। ३। सुहनस्थान। सत्यं पयो भवति सूर्य सुते चतुर्थे दो  
 भाग्य मुष्मकिरणं कुरुते शशी च राहु विनष्टतनयां क्षितिजो  
 त्पवीजां सौम्या चितां भृगुसुरेज्य वधाश्च कुर्युः। ४। सुतस्था  
 ना नद्यात्मजां रविकुजो रवतु पंचमस्थो चंद्रात्मजो बहू सु  
 तां गुरु भार्गवौ च। राहुर्ददाति भरणां रविजस्तुरोगं कन्या  
 प्रसूति निरतां कुरुते शशांकः। ५। रिपुस्थान। षष्ठ्यस्थिता  
 शनिदिवा कर राहु भौमा जीवस्तथा बहू सुतां धनभाग्  
 नी च। चंद्रः करोति विधवा मुशना हरिद्रां वैश्या शशांकत  
 नयः कलह प्रियां च। ६। जायास्थान। सौरास्त्री ववुधराहु रवी  
 दुःशुक्रदद्युः प्रसद्य मरणां रवतु सप्तमस्थाः। ७। वैधव्यबंधन  
 भयं सयवित्तनाशं व्याधि प्रवास मरणां निषतं क्रमेण। ७।  
 मृत्युस्थान। स्थानेष्टमे गुरु बुधौ निषतं वियोगं मृत्युं शशी  
 भृगु सुतश्च तथैव राहुः। सूर्यः करोति विधवां धननी कुज  
 अस्त्योत्तमजो बहू सुतापति क्लृभां च। ८। धर्मः। धर्मस्थिता भृगु  
 दिवा कर भूमिपुत्र जीवाः सुधर्म निरतां शशिनः सुभोगां। राहु  
 अस्त्यतनयश्च करोति बंध्या नारी प्रसूततनया कुरुते शशां  
 कः। ९। कर्मः। राहु नभस्य लग्ने विधवां करोति पापे परां दिन  
 करश्च शनैश्चरश्च। मृत्युं कुजो र्थरहितां कुटिलां च चंद्रः शेषा  
 हा धनवती बहू क्लृभां च। १०। आशु। आशु विवे सुजां। जनी  
 शशांकः पुत्रा चिता क्षिति सुतो रविजो धनाश्च स्वायुष्मती सु

स्य च। मंदस्य दशा १० वर्षाणि गुरोश्चैकोणविंशति  
 राहोर्द्वादशा वर्षाणि शुक्रस्यैकेच विंशति ॥१॥  
 (अष्टोत्तरी महादशा)

सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष ६	१५	८	१७	१०	१६	१२	२१
आर्द्रा पु ष्य पुन श्लेषा	मघा पू र्वा उज्ज रा फाल्गु नी	हस्त वि वा स्वा विशाख	ज्येष्ठा मूल	पूर्वाषा उ. वा. मि. अ वरा	धनिष्ठा शतभि पूर्वाभा उषद	उत्तरा भा रेवती अ भरणी	कृतिका रोहिणी मृगशिर

(अंतर्दशा लाने का क्रम)

महादशा स्व स्वदशाब्दनिघ्राभक्ताः स्ववाह  
 शशिभिः समाद्याः ॥ अंतर्दशास्युर्गगने चरा  
 रांतदेक भावेहि महादशा स्यात् ॥ १ ॥

१० दशा के वर्षों से दशा के वर्षों की गुरा के १०८ का भाग देना जो  
 मिले उसे वर्ष जानो फिर वारह गुरा करे १०८ का भाग दे मिले सो मही  
 ना फिर तीस गुरा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले उसे दिन जानना  
 फिर आठ गुरा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले सो घटी जानना  
 फिर ६० गुरा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले सो पल जानना  
 फिर वर्ष मास दिन घटी पलों को सूर्य में संयुक्त करना अंतर्दशा  
 दूसरीति से सबको जानना चाहिये ॥ १ ॥

सूर्य की महादशा वर्ष ६ - आर्द्रा पुनर्वसो पुष्य श्लेषा इन  
 नक्षत्रों में

सूर्यः	चंद्रः	भौमः	बुधः	शनिः	गुरुः	राहुः	शुक्रः
०	०	०	०	०	१	०	१
४	१०	५	११	६	१	८	२
०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

गुरुकीदशाकेवर्ष १६- धनिष्ठाशतभिषापूर्वाभाद्रपदयेनक्षत्र

गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
३	२	३	१	२	१	२	१
४	१	८	०	७	४	११	६
३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	८
२०	०	०	०	०	४०	४०	२०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

राहुकीदशाकेवर्ष १२- उत्तराभाद्रपदरेवतीश्रद्धिनीभरणीये

राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
१	२	८	१	२	१	१	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

शुक्रकीदशाकेवर्ष २१- कृत्तिकाशेखरीमृगशिरयेनक्षत्र ॥

शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
४	१	२	१	३	१	३	२
१	२	११	६	३	११	८	४
०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

विंशोत्तरी ३॥

जयनीनजनुर्भमंक हतक्रमसोकेन्दुकजागुरुरयः  
 शनिचंद्रजकेतुभागेवाः पारश्रैया दशाधिपास्ततः  
 री० श्रद्धिनीसेलेके जन्मनक्षत्र तकजो संख्या हायतामें २ घराय  
 देय फिर ईका भागदे श्रेषरहे जो सूचंमं रा ह प्र बु के शु ये दशा  
 पतिजानो ॥

(दशाकाभुक्तभोग्य)

ऋतुदिगिरयो धतिर्नृपाति धतिभेघहयानखा  
 समाः क्रमतोहिमता अथादिमाजनिभस्थाघटिकास  
 माताः भभोगेनभक्ताः फलंभक्तपाकस्तदूनादशा



चनेषु च युद्ध बुद्धिः ॥ सिद्धं च कार्यमपियत्र सदा वि  
नक्त्यात्सर्वे दाशनिदशा गमने भवन्ति ॥ ६ ॥

टीका ॥ मूढा वाद विवाद दूसरे को मारना चाँधना धन की हानि मित्रकंप  
से लड़ाई की बुद्धि सिद्ध कार्य को नाश यह शनिदशा का फल जानिये ६ ॥

दिव्यांगनामदन संगम के लिसौरखंजाना विलास  
मभिराग मनोभिरामैः ॥ हेमादिरत्न विभवागमको  
प्राधान्यं स्यात्सर्वे दा बुधदशा गमने भवन्ति ॥ ७ ॥

टीका ॥ सुंदर स्त्री का सुख और सब प्रकार के भोग विलास सुवरी और रत्ना  
दिक की प्राप्ति धन संग्रह ईश्वर स्मरण ये बुध की दशा का फल जानना ७

भायी वियोग जनितं च शरीर दुःखं दुष्यस्य हानिश्च  
निकृष्ट परं परांच ॥ रोगाश्च बन्ध कलहश्च विदेशतश्च  
केतो दशा जनन काल दशा भवन्ति ॥ ८ ॥

टीका ॥ स्त्री वियोग से शरीर पीडा दुष्य की हानि कष्ट कलह देशा  
तर गमन करे यह केतु की दशा में फल जानिये ॥ ८ ॥

आराम वृद्धि परि सर्वे शरीर वृद्धि येनात पत्र धन  
धान्य जमाहुलं च ॥ आयुः शरीर सुत पौत्र सुखं  
चराशां दुष्य च भर्गव दशा गमने भवन्ति ॥ ९ ॥

टीका ॥ चाग आदि स्थान की प्राप्ति शरीर पुष्टि श्वेत छत्र की प्राप्ति धन धा  
न्य की वृद्धि आयु की पुत्र पौत्र की वृद्धि दुष्य प्राप्ति ये शुक्र की दशा का फल

### योगिनी दशा क्रम

स्वर्क्षः पिनाकिनयनेः संयोज्य च सुभिर्भजेत् ॥

योगिन्यथै समारब्धात्ता शून्य पातन संकटा ९

टीका ॥ अश्विनी से जन्म नक्षत्र की संख्या में तीत मिलावे आठ का भा  
ग दे शेष अंक वचे सो योगिनी दशा जानिये जो शून्य वचे तो संकटा  
की दशा जानिये ॥ ९ ॥ ( योगिनी के नाम )

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका पिच ॥

उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्यथै दशा स्मृताः १२

उल्कायशुद्धि हरने वाली राज्य भय करने वाली सिद्ध कार्य की सिद्ध करने वाली संकटा व्याधि मरणाकेश की देने हारी ॥ २॥

वर्षदशा का फल

रविदिन नरव संख्या चंद्रमा व्योम वाणे क्षिति तनय गज  
शुक्ली चंद्रजः पट्ट शराश्र ॥ शनिरस संख्या वाक्यतिर्ना  
गवाणेर्नयन युग कराडुः सप्रतिः शुक्र संख्या ॥ ३॥  
न्यञ्च ॥ जन्म नाविंशति सूर्ये तृतीये दश चंद्रमाः ॥ चतु  
र्थे चाष्ट भोमे च षष्ठे बुध चतुर्थकं ॥ सप्तमं दश सौरि स्या  
न्नवमे चाष्टमेशुरैः ॥ दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वतु भूगोर्द  
शा ३ फलं ॥ पंचाभोगे ज्ञता पश्र सौरव्य पीडा धनं क  
मात ॥ नाशः शोकश्च सौरव्य च जन्म सूर्ये दशा फल म ४

टीका ॥ सूर्य की २० दिन की दशा जानिये - चंद्रमा की ५० दिन की दशा  
मंगल की २० दिन की - बुध की ५६ दिन की - शनिकी ३६ दिन की -  
बृहस्पतिकी ५० दिन की दशा जानिये - राहु की ४२ दिन की दशा जा  
निये - शुक्र की ७० दिन की दशा जानिये - सूर्य की दशा में मार्ग चले  
चंद्रमा में भोग प्राप्ति होय - मंगल की दशा में रोग शोक रुगड़ा ॥  
बुध की दशा सुख कारक - शनिकी दशा पीडा कारक - गुरु की  
दशा धन देने वाली राजा से मिलाप करावे - राहु की दशा में ना  
ना प्रकार के शोच उपजे - शुक्र की दशा में शुभ होय ॥ ४ ॥

(ग्रहों की नित्य दशा का प्रकार)

नित्यि चारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितं ॥ नवमित्तु  
हरेद्भागं शेषं दिन दशोच्यते ॥ रवि चंद्रो भोम राहु गुरु म  
द्वज के सितौ । क्रमेणो का दशा ज्ञेया फल पूर्वोक्ति मे वदि

टीका ॥ गई भई नित्यि और बार और नक्षत्र अपने नाम के अक्षर इन  
सब को जोड़ के इकट्ठा करे और ६ का भाग दे शेष जो रहें सो सूर्यादि द  
शा पति जानिये - इसी प्रकार नित्य दशा क्रम से जानिये और वर्ष दशा  
के तुल्य फल जानना चाहिये ॥ (दूसरा सुहर्त)



गुरु १३ महीना एक राशि भोगता है विसका फल मध्यमें दो मास जानिये - बुध एक मास एक राशि भोगता है और मध्यमें सात दिन फल देता है - शनि ३० मास एक राशि भोगता है सो अंत के छः महीने फल देता है - राहु केतु १२ प्रहर ह महीना एक राशि भोगते हैं - अंत में दो मास फल देते हैं ॥१॥

(द्वादश भवनों के नाम फल)

तन धन सहज सु हत पुत्र रिपवश्च जाया मृत्यु धर्म कर्माव्ययारव्यानि द्वादश भवनानि ॥ फलम् ॥ १ ॥  
 सूर्यः स्थान विनाश भयं श्रियं मान हानि मय देन्यम् ॥ विजयं मार्ग पीडां सु हतं हंति सिद्धि वायु मय हानिम् ॥ २ ॥  
 चंद्रो नक्षत्र धनं सौरव्यं रोगं कार्यं क्षतिं श्रियम् ॥ श्रियं पृथुं मृत्यु भयं सुरव माय व्ययं क्रमात् ॥ ३ ॥ भौमो रिभीति धन नाश भयं मयं तथा च क्षति मय लाभम् ॥ धनात्पुं शत्रु भयं च पीडां शोकं धनं हानि मनु क्रमेण ॥ ४ ॥ बुधः सुबंधं धन मय भीति धनं रुजं स्थान मयो च पीडाम् ॥ अर्थं रुजं सौरव्यं मयात्म सौरव्यं अर्थ क्षतिं जन्म गृहात् करोति ॥ ५ ॥ गुरु भयं धनं क्लेशं धन नाशं सुखं शुभम् ॥ मान रोगं सुखं देन्यं लाभं पीडां च जन्म भात् ॥ ६ ॥ कविः शत्रु नाशं धनं सौरव्यं मयं सुनां प्रिरियोः साध्यं संशोकं मयं न ॥ हह हस्यं लाभं विपतिं धनांश्च धनांश्च तनो ॥ त्यात्मनो जन्म राषोः ॥ ७ ॥ सर्व नाशं प्राणि विविं तनां शं विपत्ते धनं शत्रु वृद्धिं सुतारिः प्रवृद्धिम् ॥ श्रियं दोष संधिं रिपुं द्रव्यं तया दीनस्थं धनं वहु नर्थम् ॥ ८ ॥ राहु हानिं तथा नैव धनं वैरं मृत्यु श्रियम् ॥ कलिं वसुं च दुरिं वरं सौरव्यं सुचं क्रमात् ॥ ९ ॥ केतुः क्रमा वृजं वैरं सुखं भीतिं शुबंधनम् ॥ गतिं गदं दुष्कृतं च शोकं कौति च शत्रुताम् ॥ १० ॥ इति द्वादश फलम् ॥

तैसेही कृष्णपक्ष में आठवां वारहवां चौथाश्रेष्ठ जानिय परंतु शुक्ल  
पक्षमें चंद्रमा कावल कृष्णपक्षमें तारा कावल जानिये ॥१॥

ये रविचरागोचरतीर्थवर्गदशाक्रमद्वाप्यशुभाभवन्ति  
दानादिभाते सुतरां प्रसन्नान्तेनाधुना दानविधिप्रवक्ष्ये  
टीका ॥ जोग्रहगोचर में अष्टकयोगों में दशाक्रम में नैय होय तिस  
के प्रसन्नता के लिये दानविधि कहते हैं ॥१॥

(वारों के अनुसारदान)

भानुस्तांबूलदानादपरतिनृणां वैकृतं वा सरोत्पंसोमः  
श्रीरवराडदानादवनिवरसुतीभोजनात्पुण्यदानात् ॥ सो  
म्यः शास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्  
तस्त्रानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मनत्यापरेच ॥२॥  
टीका ॥ रविवार को तांबूल देना सोमवार को चंदन देना मंगलको  
भोजन गुडधानीबुधको शास्त्रीक मंत्रजपकराना गुरुको शिवजीकी  
आराधना वेसनकालडू शुक्रको श्वेतवस्त्र खीरभोजन शनिकी  
तेल लगाना और ब्राह्मण को प्रसन्न वरना दंडीत करना ये सब  
अशुभ फल को दूरकरि शुभ फल देताहै ॥२॥

(ग्रहों के दान और जप)

भाशािकपगोधूमसबत्सधैतुः कौलंभवसंगुडहेमताम्रं  
आरक्तकंचंदनमंपुजंचवदेति दानं हि विरोचनाय ॥२॥  
दक्षशपात्रस्थिति नंदुला अक पर सुक्ता फल मधुवल्गु  
युगौव शुक्ल क्वथं च तीर्थं चंद्राय दद्यात्पुनः पूर्ण कुभम्  
अवालगोधूममस्तिका अंबुवातरा अपि गुडः सुवराभि  
आरक्त वस्त्रं करवीर पुष्पं तांबू च भोमाय चंदति दानम् ३  
वषच नीलं किल धैत कौस्यं सुहाज्यगारुत्मत सर्वपुण्यं  
दासी च दंतो हिरदश्च नूनं च दंति दानं विधुनन्दनायम् ॥४॥  
शर्करा च रजनी तुरंगमः पीत धान्यमपि पीतमम्बरम् ॥  
पुष्करगलवरां सकांचनं प्रीतये सुरगुरौः प्रदीयनाम् ५

तिकदाचिदेवपुरुषस्यैवग्रहापीडनम् ॥२॥

टीका ॥ देवता ब्राह्मण इनको आदर पूर्वक नमस्कार करना दिन दिन गुरुके साथके वचन मानना कथा श्रवण करना होम यज्ञके दर्शन करना और मन को शुद्ध रखना ग्रहों के निमित्त जपदान करना इन बातोंसे सब पीडा दूर होय और शुभ फल प्राप्ति होय ॥ २॥

जातकर्म

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नांदि आहुं विधानतः

जातकर्मततः कुर्यादित्ये रत्नभजापुरा ॥ १॥

टीका ॥ पुत्र के उत्पन्न होने पर पिता तत्काल नारी आहु विधि पूर्वक करे तिस पीछे जब तक कोई अन्य जात वालक का स्पर्शन करे उसे प्रथम जात कर्म कहते हैं ॥ १॥

नामकरण

पुष्यार्क चयमैत्रभेनुमृगभेज्येष्टा धनिष्ठा उत्तरा -

दिन्यारथेषु च नाम कर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ

अहिहारशके तथा न्यदिवसे प्रशस्ते तथैकादशे गो

सिंहालिघटे पुष्यार्क बुधयो जीवेशाशांके पिच ॥ १॥

टीका ॥ पुष्य हस्त चित्रा स्वाति अनुराधा मृगशिरज्येष्ठा धनिष्ठा तीनों उत्तरा पुनर्वसु येन हस्त नाम करी में शुभ हैं और जन्मसे ११ तथा १२ दिन अथवा २६ २० २० १०० ये दिवस नाम करी में शुभ हैं और वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये लग्न शुभ हैं और रवि बुध गुरु शुक्र सोम के चार शुभ हैं और रिक्ता विना तिथि और दुष्ट योगादि नाम कम में वर्जित हैं सो बुधिन इसको विचार के कहें ॥ १॥

(अब कहें उ चक्र नाम के लिये कहें हैं)

चूवे चोला चिनी प्रोक्ता ली लूले लोभराय च ॥ आई

ऊर कृति कास्या द्रोवा वी वृत्तुरो हिरी ॥ १॥ वेवो काकी

मृगशिरः कू घड छ त था ड्र का ॥ के को हा ही पुनर्वसु हू

हे हो डानु पुष्य भं ॥ डी डू डे डो तु आ हो वा पा की मू ले म वा स्त ना नो रा दी ट् पूर्व फल्यु टे टो पा सु चरं तथा ॥ पूर्व का ता हस्त -

श्रादीलशयनं पुंसो द्वादशे दिवसे शुभम् ॥  
त्रयोदशे तु कन्यायाननक्षत्र विचारणा ॥१२

टी०॥ जन्म होने के उपरांत पुत्र को १२ दिन और कन्या को १३ दिन पालने में श्रायन करावे और नक्षत्रादिके विचार की कुछ आवश्यकता नई

(दुग्धपान का मुहूर्त वृहस्पतिके मतसे)

एकत्रिंशद्दिने चैव पयःशरवेन पापयेत् ॥

अन्नप्राशननक्षत्रद्विसौदयराशिसु ॥१२

टी०॥ जन्म होने के पीछे ३२ वे दिन अन्नप्राशन के जो नक्षत्र उनमें श्रातमें रूपभरिके बालक को पिलाना चाहिये ॥१२॥

(तांबूलखनिका मु०)

साईं मास द्वये दद्यात्तांबूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरादिक  
सामिन्नं विलासापहिनो यथा ॥ मूले च त्वाष्ट्रकरतिथ्यहरीं  
मेघुपौष्पे तथा मृगशिरं दिति वासरेषु ॥ अकेदुर्जीव भृगु  
क्षौधन वासरेषु तांबूलं मक्षराधिभिर्मुनिभिः प्रदिष्टः ॥१३

टी०॥ जन्म होने के पीछे टाईं महीने में कर्पूर आदि पदार्थ मिलाकर तांबूल बालक को मूल चित्रा हस्त पुष्य अवरणान्ये च रेवती मृगशिरसु पुनर्वसु धनिष्ठा और रविवार सोमवार गुरुवार शुक्रवार बुधवार इन वारों और नक्षत्रों में तांबूल भक्षण शुभ जानना ॥१३॥

(सूर्यावलोकन वा कुवा पूजन मुहूर्त)

हस्तः पुष्य पुनर्वसु हरियुगं भवत्रय राहिरागीरेवत्सु  
तरफाल्गुनी मृगशिरा षाढोत्तरा स्वातिभिः ॥ मासे तु  
र्य तृतीयकौशानिकुजोत्पक्काचरिक्तातिथिं सिंहा  
दित्रयकुंभराशिसहितं निष्काशानं शस्यते ॥१४॥

टी०॥ हस्त पुष्य पुनर्वसु अवरण धनिष्ठा अत्र राधाज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तरफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढ स्वाति चोथे वाती सर मास में शानि भीम रिक्ता इन विना सिंह कन्या तुला कुंभ इन शुभदिनों में पहले बालक को वाहर निकालके सूर्यावलोकन कराना शुभ है १॥

सन्मथवापकुंभमकरंहित्वाचरिक्तातिथिंषष्टीप  
वतथाएमीनपिसिनीवालीच नूडां शुभाम् ॥ १॥

जन्मतरुत तृतीयेन्द्रे अष्टमिच्छतिपंडिताः  
पंचमे सप्तमेवापि जन्मतो मध्यमे भवेत् ॥ २॥

टी०॥ रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाति पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा अव  
राधनिष्ठा शतभिषा पुष्य येनक्षत्र और शुक्र सोम बुध ये वार  
शुक्र पक्ष उत्तरायन जुंडन में ये शुभ हैं और हव कन्या मिथुन धन  
कुंभमकर इन को छोड़ के और रिक्ता छूटि आठे अमावस्या इन दुख  
तिथियों को छोड़ के जन्म से पांचवें वर्ष में जुंडन शुभ है और पांचवें  
सातवें वर्ष में मध्यम है ऐसा पंडितों ने कहा है ॥ १॥ २॥

(विद्यारंभसुहर्त)

रेवत्यां मृग पंच के हरि युगे पूर्वा सुहस्तत्र ये मूलैश्च  
अभिजिच्च भावु भृगुजे सौम्ये धनुनी वयोः ॥ १॥

अष्टे पंचम के विहाय निरिदक्षान् ध्यायंच षष्ठीयु  
तान् रिक्तां सौम्यदिने तथैव विबुधैः ज्ञोक्तः सुहर्तः शुभः २

टी०॥ रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य हीरा अवरा धनिष्ठा पूर्वा  
हस्त चित्रा स्वाति मूल अश्विनी अभिजित और रवि गुरु शुक्र बुध सोम  
ये वार शुभ तिथि शुक्र पक्ष उत्तरायन जन्म से पांचवें वर्ष में प्रथम  
विद्याभ्यास करना शुभ है ॥ १॥

(यन्त्रीपवीतकासुहर्त)

पूर्वाषाढ हरि त्रये श्चि मृगभे हस्त त्रये रेवती ॥ ज्येष्ठा  
पुष्य भगेषु चोत्तर गते भानौ च पक्षे सिते ॥ गोमीन  
अमहा धनुर्वनचरे शुक्ले कर्क जीवे तिथौ पंचम्यां दशा-  
मीवये व्रत महश्रे वेद्दि जन्म द्वये ॥ १॥ १ ॥ १ ॥

टी०॥ पूर्वाषाढ अवरा धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त  
चित्रा स्वाति रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वा फाल्गुनी और शुक्र पक्ष उत्त  
रायन चषमीन कन्या धन सिंह ये लग्न रवि गुरु सोम शुक्र -

आशुद्धतः शिशुरह स्त्रितयं सितः स्यात् पञ्चादशा  
हमिह पंचदिना निवृद्धः ॥ आग्रपक्षमेव गदितो च व  
शिशुः सुरवे जीवस्तु पक्षमपि वृद्धः शिशुर्विद्वयः ॥ १ ॥

टी० ॥ पूर्व में शुक्र का उदय होय तो तीन दिन बाल संज्ञा कहिये और अ  
ग्र होय तो २५ दिन वृहत्व के वर्जित हैं और पश्चिम में उदय होय तो पंच  
दिन बाल संज्ञा और १० दिन वर्जित हैं और शुरु के उदय अस्त में पंद्र  
ह दिन वर्जनीय हैं ॥ १ ॥ (अस्तोदय काल द्वारा)

यम चारभुज वासर चञ्चिरो दिशि हि सप्त ॥  
सितास्तमनं तथा ॥ गगन वासा यजे हि शि ।  
पश्चिमे न बहिनास्तमनं तु भृगोर्बुधेः ॥ १ ॥

टी० ॥ ४५ वें दिवस शुक्र का अस्त पूर्व में होता है और उसका उदय  
७२ वें दिवस पश्चिम में होता है और १५० वें दिवस पश्चिम में अस्त  
होता है जिसका उदय ५६ वें दिन पूर्व में होता है ॥ १ ॥

अस्त में वर्जनीय कर्म

वापी कूप तडाग यज्ञ गमनं क्षीरं प्रतिष्ठा ब्रह्म  
विद्या मेहिर कर्षी वैधन महादानं गुरोः सेवनम्  
नीये स्थान विवाह काम्यहवनं संज्ञोपदेशं मुग्ध  
दूरे गौप जिजीविषुः परिहरे दूले गुरो भार्गवे ९

टी० ॥ वापी कूप तलाव यज्ञोपवीत यज्ञ याज्ञा मुंडन देव प्रतिष्ठा  
विद्यारंभ नवीन गृह प्रवेश बालक का कर्षी छेदन महादान गुरु  
सेवा करनी तीर्थ स्नान विवाह उत्तम कर्म होय संज्ञोपदेश यह  
कर्म गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित हैं ॥ १ ॥

(विवाह वर्जनीय)

नाषाठ प्रभृति चतुष्टये विवाहो नो यो वै न च मधुसक्त  
के विधेयः नैवास्तं गतवति भार्गवे च जीवे वृद्धत्वे न ख  
लुत्तघोर्न बालभावे । गीर्वासा संत्रिशा मृगेन्द्रमधिधि  
नैनमासे धिके त्रिदिन संसृशिन अभ मे च ॥ १ ॥ ५

**गुरुवलम**

नद्यात्मजा धनवती विधवा कुशीला पुत्रान्विता हतथ  
 वा शुभगा विपुत्रा ॥ स्वामिप्रिया विगतपुत्रधवा धना  
 द्या वंध्या भवित्पुरगुरो कम शोभिजन्म ॥२॥ २॥

टीका ॥ कन्याके जन्म स्थान में जो दृहस्पति होय तो विवाह में मृत्यु  
 दायक अत्यंत बालकों को है और दूसरी धनवती तीसरी में विध  
 वा चौथी में व्यभिचारिणी पांचमी में पुत्रवती छठी में पति कानाश  
 सानदी में रोभाग्यवती आठवीं में पुत्रहानि नवीं में पतिप्रिया दशमी  
 में बालक कानाश ग्यारही में धनाद्या बारही में वंध्या जानिये ऐसे  
 कर्मसे फल जानिये ॥ २॥

(गुरु अनुकूल करनेका विचार)

**जन्म विदशमा रिह पूजया शुभदेगुरुः**

**विवाहे च चतुर्थे घृ द्वादशे च्छुष्ट मृतिप्रदः १**

टीका ॥ जन्म का तीसरा छठ दशमा गुरुनेष्ट है परंतु पूजा करनेसे शुभ  
 छल देता है और चौथा आठवां बारहवां गुरु मृत्यु दायक है विवाहमें १

(अष्ट भैत्री ज्ञानं)

**वरो वप्रयंतया तारा योनिग्रह गरीतया**

**भकूटं नाडि मंत्री च इत्येता चाष्ट भैत्रिका १**

टीका ॥ वरो वप्रय तारा योनिग्रह भैत्री गरा भैत्री भकूट नाडी इनकी भैत्री  
 जानिये ॥ २॥

**मिलापमें वर्यादिकों का ज्ञान**

**श्री लालिकर्कया विप्रान्तराः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्या नक्र**

**वृषा विश्या अद्रा बुग्म तुला घराः १ दृंद चाप घट कन्यका**

**तुला मानवा अज वृषो चतुष्यदो ॥ कर्क मीन मकर जलौ**

**इकाः केसरी वन चरो लिकीटकाः २ ॥ कन्या सीहर भयाव**

**त कन्या भंवर आदिपि ॥ गराये न्नमभिः शेषे चिच्चि भ्रम**

**सत्सूतम् ॥ ३ ॥ अप्रवोग जन्म सर्प सर्पश्याम विडाल**

**कः ॥ भेषो विडाल कश्चैव मूषको मूषक श्रगो ॥ ४ ॥**

कुंभये दो दो राशि द्विर्दश हैं सो वर्जित हैं - चतुर्थ दशमरकाद  
 शुभय सप्तम ॥

चतुर्थे दशमश्रेव तृतीयेकादशः शुभः

उभयः सप्तमः साम्यमेकही शुभमुच्यते

टीका ॥ वधुवर को परस्पर राशि चौथे दशके तृतीये रकादश और  
 सप्तम अथवा एक राशि होय तो शुभ जानिये ॥ (ग्रहमैत्री)

नाम	सूर्य	चंद्र	अंगार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	बं. बं. ५	सं. बु. ५	बं. बु. ५	सं. शु. ५	सं. बं. ५	बु. शु. ५	बु. शु. ५
सम	बु.	मं. बु. शु. शु.	शु. शु.	मं. बु. शु.	शु. ०	मं. बु.	बु. ०
शत्रु	शु. शु.	०	शु.	बं.	बु. शु. ५	र. बं. ५	र. बं. मं. ५

मार्तंड के मत से गुराों का मिलाना

वराों का गुरा-होनों का एक वरा अथवा वरको ऊंचा होय तो शुभ जा.

वैर भक्ष्यो गुरा भावा ह्योः साम्ये गुरा ह्ययं  
 वश्य वैरे गुरा श्रे को वश्य भक्ष्यो गुरा द्वे कर

वरा के गुरा

वश्य के गुरा

नाम	ब्रा.	सं.	बि.	शु.	२	५	१	०	२	संशुभद
आधरा	१	०	०	०	५	२	०	०	०	मानव
शुची	१	०	०	०	१	०	२	२	२	जलवर
वैश्य	१	१	१	०	०	०	२	२	०	वानर
मूढ	१	१	१	१	२	०	१	०	१	कीट

एक तोल भ्रते तारा शुभा चैव शुभान्यतः ॥

तदा सही गुरा श्रेक तारा शुद्धो मिथस्वयः २

उभयाने शुभा तारा सदा शून्यं समादिशत

टीका ॥ एक की शुभ तारा और एक की अशुभ तारा होय तो डेठ २ ॥



जो.	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	०
भैस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	१	२
मृग	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
बानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नीला	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	३	४

ग्रहों के गुण दोनों का स्वामी १ मैत्री के गुण २ सम शत्रु का गुण ०० मित्रत्व के गुण ४ शत्रु मित्र का गुण १ सम का गुण ०० शत्रु का गुण शून्य ०० इस प्रकार ग्रह मैत्री के गुण जानिये - गुणों के गुण - दोनों का गुण एक होय तिसके गुण ६ वर देवता गण - वधू मनुष्य गण तिसके गुण ६ इस विपरीत होय तो ५ गुण और वर राक्षस वधू देवता तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

ग्रहों के गुण								गणों के गुण				
ग्रह	सू	चं	मं	बु	हृ	शु	श	ग्रह	गण	देवता	मनुष्य	राक्षस
सू.	५	५	५	३	५	०	०	सू	देवता	६	६	१
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥	चं.	मनुष्य	६	६	०
मं.	५	४	५	॥	५	२	॥	मं.	राक्षस	१	०	६
बु.	३	१	॥	५	॥	५	४	बु.	भिन्ननाडी के गुण एकनाडी शून्य			
हृ.	५	४	५	॥	५	॥	३	हृ.	नाडीगण	आदि	मध्य	अंत्य
शु.	५	॥	३	५	॥	५	५	शु.	आदि	७	८	८
श.	०	॥	॥	४	३	५	५	श.	मध्य	८	०	८
									अंत्य	८	०	०

सत्कूट के गुण ७ अथवा असत्कूट के एक राशि भिन्न चरण भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एकादश इनके गुण ७ भिन्न राशि नक्षत्र एक इसके गुण ५ प्रीति षडाष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नवम पंचम इनमें वर दूरता हो योनि शत्रुता हो ने परभी भूकूट के गुण ६ होते हैं असत्कूट के लक्षण वर योनि मैत्र

मध्यम जानिये - राक्षस मनुष्य गणमें मृत्यु जानिये ॥ १ ॥ + ॥ +

### कूट फलं

वडा एकेयमृत्युः पंचमेनवमेन पत्यताज्ञेया ॥

द्विर्द्वादशे निधनता शेषेषु मध्यमताज्ञेया ॥ १ ॥

टीका ॥ दोनों का षडा एक होय तो मृत्यु कारक नव पंचम अत्र पत्य का  
एक दूसरा बारहवा निधनता कारक शेष रहा सो मध्यम जानना ॥ १ ॥

नाडी फलं ॥ अग्रनाडी व्यधे दुर्त्ता मध्यनाडी व्यधे

द्वयं ॥ पृष्टनाडी व्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः १

टी० ॥ दोनों की आदिनाडी होय तो भर्ता को बुरी - मध्यनाडी दोनों को  
हों तो अशुभ अंत्यनाडी दोनों को होय तो कन्या को अशुभ है ॥ १ ॥

मध्यनाडी ॥ जठरे निधनत्वं च गर्भे मरणमेव च

पृष्टे दोर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ १ ॥

टी० ॥ दोनों की मध्यनाडी निधनता कारक और गर्भनाशका और अं  
त्यनाडा दर्भाग कारक जानिये ॥ ज्योतिः प्रकाशे पापर्वनाडी

निधनं मध्यनाड्यां तु दंपत्यो नैव पापर्वयोः

करग्रपृष्टनाड्यौ न विद्यते इतितद्वच ॥ १

टी० ॥ दोनों की मध्यनाडी मृत्यु प्रद जैसे ही पार्श्वनाडी परंतु विवाह  
में पार्श्वनाडी मना नहीं है और के मत से क्षत्रियादिको मना कही है ॥

(असत्कूट विचारः)

स्त्रीके नक्षत्रसे वरको नक्षत्र निकट होतो अशुभ और वरके नक्षत्र से  
स्त्रीको नक्षत्र दूर होतो शुभ जो नक्षत्र १ वा स्वामी १ होतो शुभ जानिये ॥

राजमार्तंडके मतसे

दुष्टकूटों का दान कहते हैं ॥

षडाएके गोमिथुनं प्रदद्यात्कास्यं सरूपं

नवपंचमे च ॥ नाड्यां सुधे च न्न सुवर्णाव

स्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मणतर्पणञ्च ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रति आवश्यक में दुष्टकूटादिक के दान वर और वधू को

## कर्त्तरी दोष लक्षणं

लग्नाच्च द्राह्ययद्विस्थो पापखेटो यदातदा  
कर्त्तरीवर्जनीयासा विवाहोपनयादिषु ॥१॥

नहिकर्त्तरीजोदोषःसौम्ययोर्यदिजायते ॥

शुभग्रहयुतलग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्त्तरी ॥२॥

टीका ॥ लग्न अथवा चंद्रमासे १२वें दूसरे स्थान में जो पापग्रह पड़े तो कर्त्तरी दोष होता है इसमें विवाह यज्ञोपवीत वर्जित है इन हीं स्थानों में जो शुभग्रह होय तो कर्त्तरी दोष नहीं है और जो लग्न शुभ ग्रह युक्त हो तो शुभजानिये और क्रूर ग्रह युक्त होय तो शुभजानिये ॥२॥

(वरवधुकी राशि से अष्टम राशिका दोष)

वरवधुर्वेटो श्वापि जन्म राशौ च लग्नतः

त्याज्यमष्टम लग्नं स्याद्विवाहव्रतबंधयोः १

टीका ॥ वरवधु और वट इनकी राशि से वा जन्म लग्न से वरवधुकी वल्ल चारीकी से अष्टम लग्न विवाह यज्ञोपवीत की होय तो अशुभ है ॥१॥

(दुष्ट महूर्त्त कथन)

तिथ्यं शोदिनमानस्य रात्रिमानस्य चैव हि

महूर्त्तः कथितः स्तेषु दुर्महूर्त्तेशु भेत्यजेत १

टीका ॥ दिनमान और रात्रिमान इनका पंद्रहवां अंश दुर्महूर्त्त होता है सो शुभकार्य में वर्जित है ॥१॥

(यामाद्वादिक कथनं)

सूर्याद्यामदलं दिवैव निगमाद्ग्रहीषणागत्रिषट्

संख्याकं कुलिकं दिवेन्द्रविदिदनागर्तुवेदद्विकम्

व्येकंतं निशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुत्तितैः । का

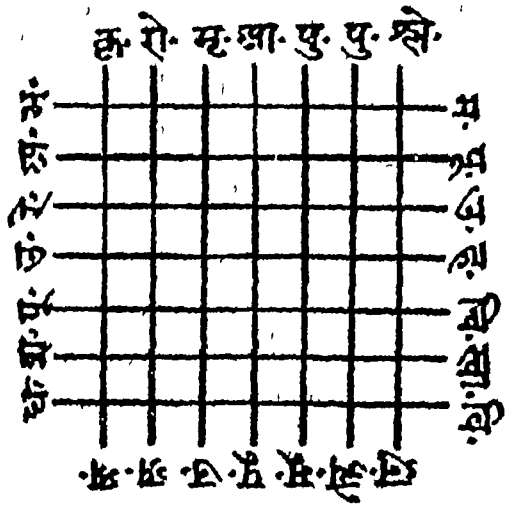
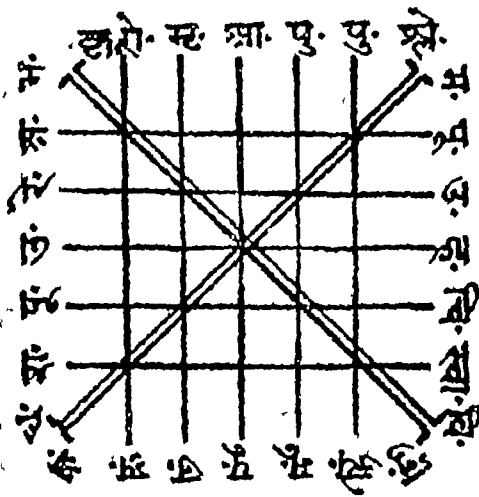
लंकरकमैनिघंटममरेज्यज्ञास्फुजिद्वाः क्रमात्

टीका ॥ दिनमान का सोलहवां भाग कुलिरविवार से होता है सो शुभ कार्य में वर्जित है और रात्रि में एक एक घटाद्वये किसीके मतसे पंच दशांश वर्जित है शुभ कार्य में इस रीति से जानना ॥१॥

श्रुत्यग्निभेभिजिद्वाहयैवैश्वेन्द्रक्षेतुरुद्रभे ॥ १ ॥  
 मूलादित्येवपुष्येद्रुमैत्राश्लेषेमघातके । हस्तभा  
 ग्यर्यमांत्येचहस्ताहिर्वुध्मभेतथा । चित्रजचरणे  
 स्वातीवारुणेचपरस्परं । वासुवेन्द्राग्निभेतद्देधःसप्त  
 सलाकजः । त्याज्यः पापोद्भवोपत्नाद्भतबंधादिकर्मसु

(नक्षत्रचरणवेधः)

टीका ॥ यच्चसप्तशलाकाचक्रमेंजिसरेखापरजोनक्षत्रहोयऔरउसी  
 मेंपापग्रहहोयतोवहनक्षत्रविद्धहोयव्याहमेंअशुभजानिये ॥



(श्लोकः)

सप्तपंचसलाकाभ्याविद्धमेकागलेनयत्  
 लक्षापग्रहगंधिषांपादमात्रशुभेत्यजेत् । १  
 वेधमाद्यंतयोर्घ्नोरन्योन्यद्वितृतीययाः ॥  
 क्रूरैरपित्यजेत्यादंकेचिदुचुर्महषयः ॥ २

टीका ॥ विद्धनक्षत्रऔरएकागलेलक्षाउत्पातनक्षत्रइनके  
 चरणमेंशुभग्रहकायोगहोवापापग्रहकावहनक्षत्रशुभकर्ममेंवर्जि  
 तहैपहिलेचरणमेंचौथेसेऔरदूसरेचरणसेतीसरेचरणसेपरस्परवेध  
 होताहैकिसीकेमतसेपापग्रहकावेधचरणवर्जितहैसोएकागल  
 दोषमार्त्तंडकेमतसेविष्कभादिदुष्टयोगरहितदिननक्षत्रसे  
 अभिजितसहितगुणनासेविषमनक्षत्रमेंसूर्यहोयतो

अधिक वा न्यून होय तो या मित्रदोष नहीं - दूसरा पक्ष लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह वा पापग्रह समप्रश होय तो जा मित्रदोष होय गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियों के मत के अनुसार जा मित्रदोष विवाह में वर्जित जो लग्न से एकादश षष्ठ तासरे इन स्थानों में सूय होय तो जा मित्र दोष सुखदायक जानिये ॥ १ ॥

### चरत्रयदोष

कर्क लग्नेथ जामेषे घटाशो यदि दीयते  
तुलायां मकरे च्छे वैधव्यं जायते ध्रुवं १

टीका ॥ कर्क और मेष लग्न में तुला का अंश और मकर तुला का चंद्रमा ऐसे योगों का दोष वैधव्य कारक होता है सो वर्जित है विवाह में ॥ १ ॥

तिथि के अनुसार वर्जित लग्न

प्रतिपदि तुला मकरौ सिंह मकरौ तृतायायां क  
न्या मिथने पंचम्यां सप्तम्यां चैव धनु कर्को नवम्यां  
कर्कसिंहौ एकादश्यां धनु मीनौ त्रयोदश्यां वृषभ  
मीनौ शून्य लग्नानि तिथियो गात् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रतिपदा को तुला और मकर तृतीया को सिंह मकर पंचमी को कन्या मिथन सप्तमी को कर्क धनु नवमी को कर्क सिंह एकादशी को धन मीन त्रयोदशी को वृष मीन इन तिथि में ये शून्य लग्न जानो शुभ कार्य में वर्जित है ॥ १ ॥

### दोष निवारण

घ्नूं विना केंद्रगतो मरे ज्यस्त्री कोण गो वापि हिलक्षमेकं  
न हंति दोषास्त्रिंशतं भृगुश्च शतं बुधो वापि हि दृश्य मूर्तिः

टीका ॥ गुरु शुक्र वा बुध ये इन स्थानों में १।४।६।१०।५ होय तो एक लक्ष तीन सौ दोषों को क्रम से दूर करते हैं गुरु तो १०००० शुक्र ३०० बुध १००० ऐसे लग्न शुद्ध जानना ॥ १ ॥

(बारह राशियों का उदय प्रमाण)

गजाग्निदस्त्रा २३८ गिरिषट्कदस्त्रा २६७ व्योसेंदुरामा ३१०

रस रामरामा ३३६ कुरामरामा ३३१ गजचंद्ररामा ३१८ नगेंद्र

शको वेदाध्य वेदोनः षष्टिभक्तायनां प्राकाः  
देयास्तेतुरवौ स्पष्टे चरलग्नादि सिद्धये ॥१॥

टीका ॥ वर्तमान शकः में ४४४ घटाने से जो शेष बचे उसमें ६० का भाग दे चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नों को सिद्ध के लिये अयनांश को स्पष्ट सूर्य के अंश और घटिकाओं में मिलाने से सायन सूर्य के होते ॥ १ ॥

### उदाहरण

भा-६०।१३२५ (२२ अंश ७।१।१७।१५ स्पष्ट रवि  
२२।५ अयनांश मिलावे

१२०

१२५

१२०

५

६० गुणांक

यह सायन जानिये

६०) ३०० (५ कला

३००  
००

### लग्न से दृष्ट काल लाना

स्फुटसायन भार्गव भोग्यांश फल संमतिः। सायनं शतनोश्चापि भुक्तांश फल संयुता। मध्य लग्नोदये युक्ता षष्ट्या प्राणाडिकास्तनोटीका ॥ सायन सूर्य से भोग्य और सायन लग्न से भुक्त बनाने की रीति दोनों का योग करके और सूर्य लग्न के मध्य का उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देने से लग्न पर से सूर्य का भोग्य काल स्पष्ट हो जाता है ॥

उदाहरण ॥ शके १७६६ कार्तिक शुदि ६ भौम चर को स्पष्ट

सूर्य की राशि आदि ७।१।१७।१५ और अयनांशः २२।५ को सूर्य के अंश और घटिकाओं में मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादिक होता है १।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशि का सूर्य २३ अंश २२ घटी १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ये हुआ ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक का है वृश्चिक का उदय कहिये ३३१ इनसे भाग्यांश को गुणने से ये अंक हुआ २९६४ इनमें ३० का भाग देने से आये ७३।८ इसको सूर्य का भोग्य काल जानिये ॥

### रवि के भोग्य काल लाने का क्रम

अंश	घटी
भाग ३०) २१६४	१५।७३।८ ये सूर्य भोग्य काल जानिये
<u>२१०</u>	
६४	
<u>६०</u>	
४	
६० गुण	
<u>२४०</u>	
१५ शेष	
भाग ३०) २५५	(८ शेष
<u>२४०</u>	
१५ शेष	

### लग्न से भुक्त काल लाने का क्रम

राशि	अंश	कला	भाग ३०)	अं.	शक्रांश
६	१३	२० मकर लग्न		१४४६	(१४५-१२
	२३	५ यह अयनांश मिलावे		<u>१२०</u>	
१०	५	२५ सायन लग्न भुक्त		२४६	
		२६७ लग्न का उदय		<u>२४०</u>	
		<u>१३३५</u>		६	
		१३३५		६	
		१११		६० गुणक	
		<u>१४४६</u>		भा. ३०) ३६०	
६०)		१५० अंश		३६०	
		६६७५ (१११			
		<u>६०</u>			
		६०७			
		<u>६०</u>			
		७५			
		<u>६७</u>			
		१५			

<p>दृष्ट का भाग</p> <p>६०) १८२ (१३।२</p> <p>६२</p> <hr/> <p>१८२</p> <p>१८</p> <hr/> <p>६० गुणक</p>	<p>१२४</p> <p>१२०</p> <hr/> <p>४</p>
<p>भाग २०) १२०</p> <p>१२०</p>	<p>७ १ १७ १५ प्रातःकालकासूर्य</p> <hr/> <p>१३ २ गस्य घटी</p> <hr/> <p>७ १ ३० ३५</p> <hr/> <p>३२ ५ प्रयनांशाः</p> <hr/> <p>७ ३ ३५ १७ सा. ता. सूर्य</p>

(दृष्ट घटी से लग्न लाने का क्रम)

तत्कालार्कः सायनी स्योदयज्ञाः भोग्यांशाः खञ्जुधृता  
 भोग्यकालः ॥ एवं यातां शैर्भवेद्यात कालो भोग्यः शोध्यो  
 भीष्ट नडी पलेभ्यः ॥ १ ॥ तदनुजही हि ग्राह्यो द्यांश्च शेषं  
 गगनगुणं सशुद्धहलुवाद्यं ॥ सहित मजादिगृहैरशुद्ध  
 पूर्वैर्भवति विलग्नमदोयनांशहीनम् ॥ २ ॥ २ ॥

टीका ॥ सायन सूर्य जिस राशि में होय उसका उदय लेना और सायन सूर्य  
 के ३० अंश में हीन करे शेष बचे सो भोग्यांश जानिये उदय राशि को भोग्य  
 अंश से गुणिये ३० का भाग देते तो सूर्य का भोग्यकाल निकल आवे सूर्य का  
 गतकाल लाने का क्रम - सायन सूर्य के उदय में उसी के अंशादिको गुणके  
 ३० का भाग देतो भूक्तकाल आजायगा दृष्ट घटियों के पल करके उसमें  
 भोग्यकाल को हीन करे शेष जिस राशि में सूर्य का उदय होय वह राशि  
 और आगे जितनी राश उदय में कम हो उनको घटादे जो उदय न घटे तो  
 अशुद्ध जानिये शेष अंको का ३० गुणाकर अशुद्ध राशि का भाग दे तो अं  
 शादिक अविंगे उसमें शेष राशि से अशुद्ध राशि को पूर्व राशि तक युक्त  
 करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट हो जाय ॥

(उदाहरण) पीछे जो सायन सूर्य आया है वह ७।२३।३५।१५  
 उसका उदय ३३९ सूर्य के अंश २३। ३५। १७ ये ३० में हीन करे  
 शेष बचे वह भोग्यांश है। २४। ४४ इनको उदय से गुणों के अंक



राशि का उदय नहीं घट सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं ॥ शेष रहे ५५ ॥ १६ इनको ३० से गुणा किया तो वे अंक १६ ॥ ५५ हुए इनका अशुद्ध उदय से भाग दे जितने भाग आवें वे अंक और शेष अंक ५५ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर उनको उदय में भाग दिया तो घटी शेष १५६ को ६० से गुणा तो हुए ९३६० फिर उनको उदय में भाग दिया तो पल ३५ मेष राशि से अशुद्ध की पूर्व राशि तक राश ११ और शेष ५५ ही अंशादिक ६ ॥ १२ ॥ १५ तिनके और राशि के अंकों के लिये से स्या ५ सायन लग्न १० ३६ ॥ १२ ॥ ३५ अयनांश १२ ॥ ५ सायन लग्न के अंश घटिये में घटाने से स्या लग्न ६ ॥ १४ ॥ ७ ॥ ३५ मकर लग्न अंश ७ घट ३५ पल जा ०

शेषांक १५ १६	५६	१५६
१६५० ३० गुणाक	६० गुणाक	६० गुणाक
	२६० ३३६० (१२घ)	२६ ७ ६३६० (३५ प)
२६७ १६५८ (६ अंश ६०) ४८० (८	२६७	८०७
१६०२	६६०	९३५०
५६	५३४	९३३५
	९५६	९५

राशि	अंश	घटी	पल
१०	६	१२	३५
	३३	५	अयनांश घटावे
	१४	७	३५

इस प्रकार मकर लग्न का प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥

सूर्य और लग्न एक राशि के होय तो दृष्ट घटी लाने का क्रम यदि तनु दिनु नाथावे क राशौ तदं शांतर इत उदयः स्यात् रवाग्नि हृत्विष्ट कालः

टीका ॥ सूर्य और लग्न एक राशि के होय तो दोनों का अंतर निका ले और तिसको राशि के उदय से गुणो ३० का भाग दे जो लब्धि हो

लग्नादिभागोद्रेष्काणोनवांशोनवमांशकः।

द्वादशांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः

टीका ॥ लग्नके ३० अंश होते हैं तिनका आधा १५ अंश होरा कहाता है और लग्नकी कालीसराभाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और लग्नका नवमभाग ३०। २० ऐसे नवमांश कहाता है और लग्नके सातवें भाग ४। १७ ऐसे सातवां भाग सप्तांश कहाता है और लग्नका १२वां भाग २। ३० ऐसे द्वादशांश कहाता है और लग्नका ३०वां भागका त्रिंशांश कहते हैं इस रीतिसे १ लग्नके ३० अंश होते हैं उन्ही अंशोंके द्वैवर्ग होते हैं ॥

**आदौग्रहज्ञानं**

यस्यग्रहस्ययोगिस्तस्यतदुग्रहमुच्यते

टीका ॥ जिस ग्रह का जो राशि होय सो ग्रह उसीका कहाता है ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
ग्रह	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.	ग्र.

**होरा कथनं ॥ श्लो ॥** सूर्यहोर्विषमेलग्नहोरा चंद्रार्कयोः समे  
 टीका ॥ विषमलग्नमें १५ अंश तक सूर्यकी होरा तिसके पीछे सूर्यकी होरा समराशिमें १५ अंश तक चंद्रमाकी होरा तिसके पीछे सूर्यकी होरा शुभसूर्यकी होरा अशुभ जानिये ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	०
अंश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	१५
अंश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	वृ.	चं.	सू.	

**द्रेष्काणकथनं**

द्रेष्काणआद्यौलग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च ॥

द्रेष्काणश्चतुर्थायस्तु लग्नान्नवमराशियः १

टीका ॥ प्रथमद्रेष्काण लग्नके ३० अंश तन्में ३ द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका दूसरे द्रेष्काणका स्वामी पंचमका तीसरे द्रेष्काणका स्वामी नवमका होता है शं. मं. सू. इनका द्रेष्काण अशुभ और शुभ जानिये १

लग्ना त्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नवमांशकः।  
 द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशंशस्त्रिंशदंशकः

टीका ॥ लग्न के ३० अंश होते हैं तिनका आधा १५ अंश होरा कहाता है और लग्न ही काली सरा भाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और लग्न का नवस भाग ३०। २० ऐसे नवमांश कहाता है और लग्न के सातवें भाग ४। १० ऐसे सातवां भाग सप्तंश कहाता है और लग्न का १२वां भाग २। ३० ऐसे द्वादशांश कहाता है और लग्न का ३०वां भाग का त्रिंशंश कहते हैं इस रीति से १ लग्न के ३० अंश होते हैं उन्ही अंशों के ६ वर्ग होते हैं ॥

आदौ ग्रह ज्ञानं

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्ग्रहमुच्यते

टीका ॥ जिस ग्रह का जो राशि होय सो ग्रह उसीका कहाता है ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
ग्रह	मं.	शु.	वृ.	चं.	सू.	बु.	सु.	मं.	वृ.	श.	श.	वृ.	ग्र.

होरा कथनं ॥ श्लो ॥ सूर्ये हो दिवसे लग्ने होरा चंद्रार्कयोः सरे  
 टीका ॥ निवम लग्न में १५ अंश तक सूर्य की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा  
 रा सम राशि में १५ अंश तक चंद्रमा की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा  
 शुभ सूर्य की होरा अशुभ जानिये ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	के.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	०
अंश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	०
अंश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	वृ.	चं.	सू.	

द्रेष्काण कथनं

द्रेष्काण आदौ लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च ॥

द्रेष्काण अततायस्त लग्नान्नवमराशियः १

टीका ॥ प्रथम द्रेष्काण लग्न के ३० अंश तन्में ३ द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काण का स्वामी लग्न का दूसरे द्रेष्काण का स्वामी पंचम का तीसरे द्रेष्काण का स्वामी नवम का होता है शं.मं.सू.इनका द्रेष्काण अशुभ और शुभ जानिये १



कहने हैं कोई तीनवर्ग भी शुभ कहते हैं और दो वर्ग एकवर्ग ही यती वली नहीं शुभ नहीं हैं इससे शुभकार्य में वर्जित हैं ॥१॥

**लग्नांश फलमाह**

**लग्नेनतुर्दशे भागे चषस्यमकरस्यच**

**कन्याकर्कर मीनातामशुद्दादशेलिनः**

टीका ॥ चष मकर इनके १४ अंश कन्याकर्क मीन इनके ८ अंश चश्रिक के १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ॥१॥

**कुभेस्यांशेषडिंशेचतुर्विंशेचतोलिनः**

**नयुक्तासुकयोलेयंशुभंसप्तदशांशके२**

टीका ॥ कुंभके २६ अंश तुलाके ३४ अंश मिथुनके और धनके २७ अंश ये शुभ फल को देते हैं ॥१॥

**एकविंशतिमे भागे मेघस्याष्टादशेहरे**

**संपूर्णा फलदं चादौ मध्ये मध्य फलप्रदं**

टीका ॥ मेघके २१ अंश सिंहके १० अंश यह लग्नीके शुभ फलके देने वाले हैं और मध्यमें होय तो मध्य फलको देते हैं ॥

**वर्गोत्तमलग्नके लक्षणा ॥ अंततुच्छ फलं लग्नं यदि वर्गोत्तमं न चेत् ॥ लग्नस्य स्वनवांशो मः सवर्गोत्तम उच्यते १**

टीका ॥ लग्नके अंतभागमें वर्गोत्तम न होय तो लग्न अभिषु फल देता है और लग्न अपने नवांशकमें होय तो वर्गोत्तमी कहिये ॥१॥

**( गोधूललग्न कथन )**

**गोधूलं पदजातिके शुभकरं पंचांग शुद्धौ खेर धास्ता**

**त्पर पूर्वतीर्ध घटिका तत्रेदु मथारिगम ॥ सोग्रांगं कु**

**जमधमं गुरुपमाहः पातमर्क कमंज ह्या द्विप्रभु**

**रेवतिसंकट इदं सद्यो वनाये क्वचित् ॥१॥ ४ ॥१॥**

टीका ॥ शुद्धादिकोंको पंचांग शुद्ध देख करके सूर्यके अर्द्धास्त समय प्रथम और पश्चात् प्रदह पल गोधूलकाल शुभ है और गोधूल लग्नसेषधम और अषमस्थानी चद्रमा और पाप ग्रह भीम-

कथित है ऐसे दिवस में नूतन पीत वस्त्र करिकें स्त्रियों  
को प्रथम पल्लव धारण करावे ॥१॥

गांधर्व विवाह मुहूर्त कथनं

शूद्रांतेषु पुत्रर्भवा परिणयः प्रोक्तो विवाहोक्तभेनालो  
कां तिथि मास वेध भृगु जेज्यास्तादि तत्रार्कभात ॥ त्रि  
वर्धेषु मृतिर्धनं मृति मृति एवोर्धु देह्यु गं श्रीरोन्न  
त्यपयो धृतिशकृततत्त्वर्थेत्ययः साभिजित् ॥१॥

टीका ॥ शूद्र आदि और रजक आदि और अन्यजाति जिनकी स्त्रि  
योंका पुनर्विवाह होजाता है उनके धरेजे का मुहूर्त विवाह नक्षत्र  
अवश्य देखे मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्तको कुम्हने दे  
खे इनका दोष नहीं है और सूर्य नक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत नक्षत्र  
मीने कमसे पहले तीन मरणा दूसरे तीन धनदाती तरे तीन मरणा  
चौथे तीन मरणा पांचवें तीन पुत्रलाभ छठे तीन मरणा सातवें तीसरे  
भेदुर्भागा आठवें तीसरे नें लक्ष्मी नवें तीसरे औन्नत्यता दूसरीति से  
गांधर्व नक्षत्र जानिये सूर्य के नक्षत्रसे चौथा ग्यारहां पच्चीसवां इन  
स्थानोंके नक्षत्र शुभ और शूय नक्षत्र अशुभ जानना ॥१॥

(दूसरे अतके अनुसार)

इंद्रादि तिथि का श्लेषा आग्नेयं वारुणा तथा ॥

अश्विनी वरु देवत्यं पट्टकाले शुभस्मृतम् १

टीका ॥ ज्येष्ठा श्लेषा आदी कृत्तिका शतभिषा धनिष्ठा येनक्षत्र धो  
जा करने में शुभ जानिये ॥ १ ॥

दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त

हस्तादि पंचक भिषक वसु पुष्यभेषु सूर्य क्षमाज

गुरुभार्गव वासरेषु ॥ रिक्ता विवर्जित तीर्थोषलि

कुंभलग्ने सिंहे वषे भवति दत्त परिग्रहोयम् ॥१॥

टीका ॥ हस्त चित्रा स्वाति विशारवा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य  
और मंगल गुरु शुक्र ये वार और चौथ नौमी चौदश - दृष्टिक  
कुंभये लग्न वर्जित हैं और सिंह वषये लग्न शुभ हैं ॥१॥

ग्राह्य शुभ जानिय अन्यथा अशुभ जानिये ॥ १॥

एकमेसप्तमे ष्यो मगदहानिस्त्रिषष्टगे ॥

तुर्यावाहादशे रोगाः शेषस्थाने भवेत्सुरं

दीका ॥ एक राशि अथवा सप्तम होय तो मूल्य तीसरी अथवा सातवीं होय तो गृह की हानि और चौथी आठवीं चारहवीं अथवा जन्म की होय तो रोग कारक जानिये शेष शुभ जानता ॥ १॥

(जातक वर्ग जानने का क्रम)

अकचरतपयशवर्मारक्षो कसूतः स्मृताः

एकोनसूवेषु वर्गानां स्वरशास्त्रविशारदः १

अवर्गे षोडशे ज्ञेयाः स्वराः कादिषु पंचसु ॥

पंचपंचैव वर्गाभ्युप्युतु चतुरक्षरौ २

दीका ॥ अवर्गों का वर्ग पर्यंत ४ अक्षर हैं जिसमें अवर्ग के १६ स्वर और क वर्ग से पवर्ग पर्यंत ५५ तिनके २५ अक्षर हैं और यशून दो नों वर्गों के ४ स्वर होते हैं यह स्वर शास्त्र के ज्ञाता कहते हैं ॥ १॥ २॥

वर्गों के स्वामी

ताक्ष्यमार्जार सिंह श्वसर्पासुगजसूकराः

दुर्गेशाः कसूतो ज्ञेयाः स्ववर्गात्पंचमोरिषु ३

दीका ॥ अवर्ग का स्वामी गरुड क वर्ग का मार्जार पवर्ग का सिंह ३ दुर्ग का स्वान ४ तवर्ग का सर्प ५ पवर्ग का मूखक ६ यवर्ग का गज ७ सवर्ग का मेढा वा मृग मूकर २ और जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का होय उससे पंचमे वर्ग का स्वामी वैरी जानिये और चौथा मित्र और तीसरा उदासीन जानना चाहिये ॥ १॥

काकिरी

स्ववर्गं द्विसुरां कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ॥

अथ भिन्नहरेदुर्गा योधिकः सवर्गा भवेत्

दीका ॥ अपने नाम के वर्ग को द्विसुरा करे उसमें प्रामादिक का वर्ग भिलावे और आठ का भाग दे और प्रामादिक का वर्ग द्विसुरा

और सब वर्णों को गज आय शुभ कही है ॥१॥

मत्तंतरसे आयों के फल

ध्वज कृतार्थी मरणं च धूम सिंह जय आय

शुनि प्रकोपः ॥ वृषे च राज्यं च रवे च दुःखं

ध्वांक्षे मृतिश्चैव गजे सुरवं स्यात् ॥१॥

टीका ॥ ध्वज का फल कृतार्थ जानिये धूम का फल मरण जानिये सिंह का फल जय जानिये खान आय का फल कोप-वृष आय का फल राज्य रव आय का फल दुःख जानिये-ध्वांक्ष आय का फल मृत्यु गज आय का फल सुरव जानिये ॥१॥

(अथ नक्षत्र के अनुसार व्यय साधन)

पूर्व द्वारे वृषः श्रेयान् गजः प्राग्यमदिङ्मुखः

द्वारमघाहतं धिष्टायै विभक्तं स्याद्दहस्य भम

भेद्य भक्ते व्ययः श्रेयसायादत्यो व्ययः शुभः ।

टीका ॥ पूर्वाभिमुख गृहों का गज और बैल ये शुभ कारक होते हैं और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहों का गजायु कहा है और पूर्व में के क्षेत्र फल को आठ से गुराण करे २७ का भाग दे शेष वचे सो घर के नक्षत्र जाने उक्त नक्षत्रों में आठ का भाग दे शेष रहे सो उस घर का व्यय जानिये और आपकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ जानिये ॥१॥

(गृहों की राशि विचार)

अश्विन्यादि नये मेघो मघादिव तये हरिः ॥

मूलादि त्रितये धन्वी भद्रयं श्रेय राशिषु ॥२

टीका ॥ गृहों के नक्षत्र अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रों की राशिमें वरोहि-आधे मृगशिर की दृष आधा मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु की मिथुन पुष्य श्रेष्ठा की कर्क मघा पूर्वा उत्तरा की सिंह हस्त चित्रा की कन्या स्वाति विशाखा की तुला अनुराधा ज्येष्ठा की वृश्चिक मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ की धनश्रवणा धनिष्ठा की मकर पूतभि या पूर्वाभाद्र पद की कुंभ उत्तराभाद्र पद की और रेवती की मीन १२



## गृहों के स्थानों की योजना

स्थानागारं दिशि प्राच्या माग्ने प्यां पंचनालयम्  
याम्यायां प्रायनागारं नैऋत्यां प्रास्त्रमंदिरम् १  
प्रतीच्या भोजनागारं व्यायव्यां पशुमन्दिरम्  
भांडकोशं चोत्तरस्यां ईशान्यां देवमन्दिरम् २

टी०॥ पूर्व में स्थान घर १ अग्नि कोश में रसोई का स्थान २ दक्षिण में सेने का स्थान ३ नैऋत्य में प्रास्त्र का स्थान ४ पश्चिम में भोजन का स्थान ५ वायव्य में पशु मंदिर ६ उत्तर में भंडार कोश का स्थान ७ ईशान में देव मंदिर ८ इस प्रकार घर बनाना चाहिये ॥ १॥

अल्पदोषं गुणाश्रेयं दोषायानभवेद्गृहम् ॥

आयव्ययौ प्रयत्नेन विरुद्धं च वर्जयेत् ॥ १॥

टी०॥ जिस घर में दोष थोड़े हों परन्तु बहुत गुणों करके श्रेष्ठ होय तो दोष नहीं होता और आयव्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तो पलकर कैवर्जित है ॥ १॥

## गृहारंभचक्रम्

आरंभे दृषभं चक्रं स्तंभे स्तेयं कर्मकम्

प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः शुभम्

टी०॥ गृहारंभ से दृषभचक्र और स्थंभ स्थापन में कर्मचक्र और गृह प्रवेश में कलशचक्र ये वास्तुचक्र में देख लीजे ॥ १॥

गृहारंभके मास ॥ सौम्य फाल्गुन वैशाख

भाद्र आवरा कार्तिका ॥ मासाः स्युर्गृहनि

मार्गो पुत्रा रोग्या धनप्रदा ॥ १॥

टी०॥ धौष फाल्गुन वैशाख भाद्र आवरा कार्तिक इन महीनों में गृहारंभ शिलान्यास स्तंभ प्रतिष्ठा यह शुभ जानिये ॥ पुनि आरोग्य आयु वृद्धि धन की प्राप्ति इन बातों को शुभ करे है ॥ १॥

## मासों का फल

शोको धान्यं पंचतानिः पशुत्वं स्वाग्निर्नैस्तं

संगरं भृत्यनाशम् ॥ सच्छ्री प्राप्तिवद्भिभी

ज्ञानवां हानि आठवां मृत्युकारक इत कमसे शुभाशुभफलदायक  
होते हैं ॥

**शिलान्यास**

दक्षिण पूर्व को रोककर पूजा शिलान्यासे प्रथम  
शेष प्रदक्षिण संभ्रमैव प्रतिष्ठाय्याः ॥१॥

टी० ॥ पूजन करके आग्नेय कोण में प्रथम शिला स्थापन करे शेष  
शिला प्रदक्षिणा स्थापित करवे इसी प्रकार संभ्र स्थापित करे ९

**शिलान्यास नक्षत्र**

शिलान्यासः प्रकर्तव्यो गृहाराणाम् शक्रो भृगो  
पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्याश्चिंत्युत्तरावथे १

टी० ॥ शक्रा मृगाशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों  
उत्तरा यह नक्षत्र शुभ हैं ॥१॥

**सूर्यके नक्षत्र से द्वार चक्रं**

शिरः ४	कोशा ८	शाखा ८	देहलयां ३	मध्यमें ४
लक्ष्मी	उदसनं	सौरव्यं	गृहपतिभरां	सौरव्यं

**शेषनागके मुख**

सिंहे कन्या तुलायां भुजगपतिमुखं शंभुकोरो ग्नि  
खात वायव्ये स्यात्तदा संपत्त्वलिधनमकरे ईशखा  
तवदंति ॥ कुंभे मीने च मेखे निचरति दिशि मु  
खं खात वायव्य कोरो चाग्ने कोरो मुखं वैदृष  
मिथुन गते कर्कटे रक्षुखातम् ॥१॥ ॥१॥ ॥

टी० ॥ सिंह कन्या तुला इन राशिल के सूर्य में ईशान में मुख जानिये  
तव अग्नि कोण में खात करावे वृश्चिक धनमकर इनके सूर्य में वा  
यु कोण में मुख जानिये तव ईशान कोण में खात करावे - कुंभ मी  
न मेष इनके सूर्य में नैचरति में मुख जानिये तव वायव्य में खा  
त करावे वृष मिथुन कर्क इनके सूर्य में अग्नि कोण में मुख जानिये ॥

पञ्चाद्वयं विचरन् गृहपाते सुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्य  
 यस्माच्चंद्रश्च प्रतिदिनं गणायन्मो भवकं विलोक्य ॥१॥  
 टी॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्र तक संख्या और फलसे क्रमसे जा  
 निये प्रथम ३ नक्षत्रमें संभारो परा करे तो अत्युत्तम - दूसरे ५ गर्भके नक्षत्र  
 में गर्भसुख करे तीसरे ७ नक्षत्र मध्यके धनसुख पुत्रसुख करे चौथे ८  
 नक्षत्र पुच्छके मित्रहानिका पांचवें ३ नक्षत्र अग्र भागके सुखसौभा  
 ग्यपुत्रलाभकारक ऐसे देहलीकरना शुभ जानिये ॥१॥ (द्वारचक्रं)

अर्काच्चत्वारिंशत्क्षारिणो ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ॥ द्वौ द्वौ  
 कोणेषु दद्याद्देशारवा पांचचतुश्चतुः ॥ अधश्चत्वारिंश  
 यानि मध्ये त्रीणि प्रदायेत् ॥ ऊर्ध्वे तु लभते राज्यमुद्वासे  
 कोणाकेषु च । शारवायां लभते लक्ष्मीं मध्ये राज्यप्रदं  
 तथा ॥ अधः स्यले मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥१॥

टी॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिवसके नक्षत्र पर्यंत लिरवने का क्रम प्रथम ४ न  
 क्षत्र ऊर्ध्वके तिसका फल राज्य प्राप्ति दूसरे कोणाके ४ नक्षत्र तिसका फ  
 ल उद्वासन तीसरे वाजूके नक्षत्र ४ तिसका फल लक्ष्मी प्राप्ति चौथे ४ न  
 चैके नक्षत्र तिसका फल राज्य प्राप्ति पांचमें मध्यके ३ नक्षत्र तिसका  
 फल मरण ॥१॥ (प्रांतिकर्मका अग्निचक्रं)

श्लोकानि विचरयन्ता कृत्वा प्राशेषे गुरोर्भुभुविवन्द्वासः  
 सौरव्याय होमेषां शिशुगमशेषे प्राणार्थनाशो दिवि भूतलेन  
 टीका ॥ जिस तिथिमें प्राणति करनी होय विस तिथिमें एक और मिला  
 वे और जो वार होय सो मिलावे और ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल  
 जानना तीन और शून्य चंचलो पृथ्वीमें अग्निका वासा जानिये तिस  
 का फल सुख रंही एक चंचेतो अग्निका वासा स्वर्गमें जानिये ।  
 तिसका फल प्रारानाशक और दीवचंचेतो अर्थनाशक जायना ॥१॥

(गृहके मुखमें आहुतिका विचार)

नक्षत्राणि किं गुभास्फुरी चंद्रमः कुजसुरेज्यविधंतुदकेतवः ॥  
 रविभतो दिनं भगणायतकसात् प्रतिवर्गं चितयं चित्तपन्यसेत् ॥

लग्नका शुभाशुभविचार । त्रिकोणकेन्द्रों: शुभै: त्रिषष्ट  
त्याभसंस्थितै: ॥ असहृहे स्थिरादरेगहृ विप्रदले द्विषो १  
टी० ॥ त्रिकोणकेन्द्रमें शुभग्रह होय और तीसरे ग्यारहवें पापग्रह हो  
यहेसी स्थिर लग्नमें गृह प्रवेश शुभजानिये ॥ १ ॥

गृह प्रवेश लग्न ॥ त्रिकोणकेन्द्रों: शुभै: त्रिषष्ट  
शुभै: ॥ चंद्रे लग्नारि रं प्रान्त्य वजिते स्यात्कुम्भगृहम् १  
टी० ॥ तीसरे छठे ग्यारहवें ३।६।११ पापग्रह शुभ और आठवें वारहवें  
५१२ शुभग्रह होय तो शुभ परंतु चंद्रमालग्न में छठे वारहवें आठवें नवें  
१।६।७।१२।६ होय तो शुभ हैं ॥ २ ॥ अशुभयोग लग्नके ॥

धनकेन्द्र त्रिकोणास्थ: क्षीराचंद्रो न शोभत: ॥  
प्राचीने वांशम: खेट: स्वात्तसंस्थोपिनो शुभ: १  
टी० ॥ लग्नके विषे ३।१।४।७।१०।५।६ इन स्थानोंमें स्थित कुम्भपक्ष  
का चंद्रमा तो अशुभजानना और शत्रुग्रह और नवांशमें तथा १०।७  
स्थित होय तो अशुभजानना ॥ आयुषयोग ॥

लग्नजीव: सुखे शुक्रो बुध: कर्मण्यरौ रवि: ॥  
रविज: सहजै न्यूनं शत आयु: स्यात्तदा गृहम् ॥ १  
टी० ॥ लग्नमें वृहस्पति मित स्थानी दशममें बुधचौथे शुक्रतीसरे श  
नि छठे सूर्य ऐसी लग्नमें घर का आरंभ करे तो १०० वर्ष की आयु होय ॥

दूसरा प्रकार

भृगुर्लघु बुधे व्योम्नि लाभके: केन्द्रगोशुक्र: ॥  
यस्यारंभे च तस्या युवत्साराणां शत द्वयम् ॥ १ ॥  
टी० ॥ शुक्रबुधये दशममें १० स्थानमें हो ११ रविहो केन्द्रमें वृहस्पति  
होय ऐसी लग्नमें गृह आरंभ करे तो दोसो २०० वर्ष की आयु होय ॥ २ ॥

तीसरा ॥ जीवो बुधो भृगुशुक्रौ चि लाभगो भानुभूमि  
जो ॥ प्रारंभे यस्य तस्यायु: समाप्तीति: सह श्रिया:  
टी० ॥ बुधवृहस्पति शुक्रये दशममें स्थानमें हो सूर्यमंगलये ११वें स्था  
नमें हीपती लक्ष्मीयुत घर की आयु २० वर्ष की जानिये ॥ १ ॥

उदीच्यांदिशिपःप्रश्मेविप्रशल्पंकरद्धः॥तश्चूधनिर्धन  
 त्वायकुवेरसृष्टशस्यहि॥७॥ईशान्यांयदिशःप्रश्मेगोश  
 ल्यंसाद्धहस्ततः॥तद्गोधनस्यनाशायजायतेगृहमेधिनः॥  
 ॥८॥हृपयाकोष्ठमध्येचवक्षोमात्रंभवेद्धः॥नृकपाल  
 मथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकत् ॥ ८ ॥ ४ ४ ४ ४ ॥

टीका ॥ पृच्छक के मुख से आदि अक्षर अ वर्ग का निकले तो पूर्व को डे  
 ढ हाथ गहरा खोदे तो मनुष्य की हड्डी निकले वह मृत्यु कारक जानिये  
 १ और कः निकले तो दो हाथ गहरा अग्नि कोण में खोदे तामें गध की ह  
 ड्डी निकले उससे राजदंड का भय कभी निवृत्त न होय १ च अक्षर उच्चार  
 ण होय तो दक्षिण की ओर कमर की बराबर गहरा खोदे तो नर के हाड  
 निकले तिसका फल चिरकाल के रोग से मरण होय ३ ट का उच्चारण  
 हो तो नक्त्य दिशामें डेढ हाथ गहरा खोदने से कुत्ते के हाड निकले ति  
 स का फल कनजीवे ४ त का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ हाथ  
 गहरे पर वालक क हाड जानिये तिसका फल घर का मालिक सदा घर  
 में न रहे ५ य का उच्चारण होय तो वायव्य दिशामें चार हाथ गहरे में ज  
 ली हुई धान की भूसी वा कोयले निकले तिसका फल मित्र का नाश खो  
 दे सुपने दिखाई दें ई य का उच्चारण होय तो एक हाथ गहरा उत्तरमें खो  
 दे तो ब्राह्मण के हाड निकले तिसका फल कुवेर की बराबर धन का ना  
 श करे हरिद्र होय ७ श का उच्चारण होय तो ईशान दिशामें डेढ हाथ पर  
 गौ के हाड जा ० तिसका फल गोधन का नाश करे ॥ ८ ॥ हृ प य इनका  
 उच्चारण हो तो मध्य में छाती की बराबर अँडे में मनुष्य कपाल वा भ  
 स्म वा लोह निकले तिसका फल कुल नाश इस प्रकार जिस वर्ग का  
 नामाक्षर प्रश्म कर्ता के मुख से उच्चारित हो उसी दिशामें देखै ॥ ८ ॥

**शुक्र का विचार**

एक ग्रामे पुरे वापे दुर्भिक्षे राष्ट्र विस्रवे ॥ विवा  
 हे तीर्थ यात्रायां प्रति शुक्रान विद्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ गांव के गांव में शहर के शहर में दुर्भिक्ष में काल में देश के उपद्रव

टीका सुगमधादिचक्र ॥

राशि	मे.	ह.	मि.	कं	सिं.	कं	तु	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
सू.	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	३
चं.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
वृ.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	६
शु.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
श	७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	ज्येष्ठा	मूल	श्रव	शत	रेवती	भाणी	रोहिणी	आर्द्रा	श्लेषा
वार	सूर्य	शनि	चंद्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	भौम	भौम	शुक्र	शुक्र
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
गुण	रजो	रजो	तमो	सतो	तमो	रजो	रजो	सतो	तमो	तमो	तमो	सतो

( तिथि परत्व लग्न वर्जित )

नंदायामलिहयोस्तुतलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायां मीनध  
 नुवोः कालतिष्ठतिसर्वदा १ जयायां स्त्रीमिथुनयो रित्तायां मेष  
 कर्कयोः ॥ पूर्णानां कुंभदृषयोर्मनुष्यमराणां ध्रुवम् ॥ २ ॥

टीका ॥ नंदा तिथि को सिंह तुला वृश्चिक मकर और भद्रा तिथि को मी  
 न धन जया तिथि को कन्या मिथुन रित्ता तिथि में मेष कर्क पूर्ण तिथि  
 में कुंभ दृष इन तिथियों में लग्न वर्जित है ॥ १ ॥

मेष वेदा दृषेष्टोच मिथुने च तृतीयकः ॥ दृष्टा कर्क  
 रविः सिंहे कन्या अंक प्रकीर्तितः । षट् तुले वृश्चिके  
 खं दुधने रुद्रा प्रकीर्तितः । मकरे ऋषयः प्रोक्ताः कुंभे वा  
 णाः उदाहृताः । मीने प्राध्व काल चंद्रः शौनकश्चेदमब्रवीत् २

टीका ॥ मेष राशि को चौथा दृष को आठवां मिथुन को ३ कर्क को १० सिं  
 ह को १२ कन्या को ६ तुला को ६ वृ. को १० धन को ११ मकर को ७ कुंभ को ५  
 मीन को ४ इस प्रकार लाल चंद्र राशि के अनुसार शौनक मत से वर्जनीय है ॥

टीका ॥ रवि की होरा में गमन करे तो आगे जो शुकुन होय तिस को कहते हैं । रज की वस्त्र युक्त कन्या ४ ब्राह्मण ३ काक २ नौला २ चाष १ वैलगाय ये शुकुन मिले ॥ १ ॥

चंद्रस्यहोरे द्विज युग्मकाकभेरीमृदंगानकुलः खरोष्टौ  
हयश्रगाभेषशुभस्तथैवपुष्याणिनारीद्वयमेवमार्गं ॥ १

टीका ॥ चंद्रमा की होरा में गमन करे तो मार्ग में दो ब्राह्मण काक नगरि मृदंग और नौला गधा ऊँट छोड़ा गाय वा मेढा कुत्ता और पुष्य दो स्त्री ये शुकुन जानिये ॥ १ ॥ (मंगल की होरा)

मर्जारयुद्धं कलहः कुदुंवे रजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ।

नपुंसकः स्वव्रितयं द्विजश्च नग्नो विमुक्तो धराणी सुतस्य  
टीका ॥ मंगल की होरा में गमन करे तो मर्जार युद्ध अथवा स्त्री पुरुष की लड़ाई वा रजस्वला स्त्री वा जलता हुआ घर के नपुंसक ३ कुत्ता नग्न ब्राह्मण ये मिलें ॥ १ ॥ (बुध की होरा)

बुधस्यहोरे प्राकुनश्च सर्वः स्त्रीपुत्रयुक्ता कलप्रास्तु पूर्णः

सुचातकश्चापगजौ कुमारः पुष्याणि नारीखलुदर्पणाश्च १  
टीका ॥ बुध की होरा में सब प्राकुन स्त्री पुत्र युक्त पानी भर कलशा सातक पक्षी वा चाष पक्षी हाथी वा बालक स्त्री दर्पणा ये मार्ग में मिलें ॥ १

(गुरु की होरा)

गुरोर्द्विजातिर्गणकाचधेनुस्त्री बालयुक्ता सजलो घटस्तु

कर्णाचकाकोनकुलोवकश्च हंसस्य राजा वहवस्तु वैश्याः १  
टीका ॥ गुरु की होरा में ब्राह्मण गणिका वा गाय पुत्र सहित स्त्री जल का भरा घड़ा शाल कुन वस्त्र काक नौला वगुला हंस राजा वैश्य मिलें ॥ १ ॥

शुक्रस्यहोरे गणिका द्विजेन्द्रः काकत्रिकंचाथनपुंसको वा  
मद्यं हि मांसं गणिका च धेनुर्धान्यं च शूद्रं व्रितयं च वैश्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ शुक्र की होरा में ब्राह्मण गणिका ३ तीन काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलें ॥ १ ॥

पतंगशूनोर्यवनश्च नग्नो रजस्वलास्त्री मृतकंस्तथैव

कृतिका एक विंशत्या भरण्यः सप्तनाडिकाः

एकादशमघायाश्च त्रिपूर्वाणां च षोडशः ॥ १

विशाखा शार्प चित्रा च स्वाती रोद्र चतुर्दशी ॥

आद्यास्तु घटिकास्त्याज्याः शेषांशो गमनं पुंसं २

टीका ॥ तीनों पूजा की १६ घटी मघा की ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणी की ७ घटी

कृतिका २१ घटी जन्म नक्षत्र संपूर्ण श्लेषा विशाखा चित्रा स्वाति आद्या

इन नक्षत्रों की आदि की १४ घटी यात्र में वर्जित है ॥ १ ॥ २ ॥

(शुभाशुभ वार यात्रा समय)

अर्कल्लोशमनर्थकं च गमने सोमे च बन्धुम्विप्रयं

चांगारेन लतस्कर ज्वरभयं प्राप्नोति चार्थबुधे ॥

क्षेमरोग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रेशुभो

मंदे बंधनहानि रोगमरणान्मुक्तानि गर्गादिभिः १

टीका ॥ रविवार को गमन करे तो मार्ग मल्लेश होय अर्थ की हानि सोम

वार को गमन करे तो बंधु प्रिय दर्शन होय मंगल को गमन करे तो अग्नि

चौर भय ज्वर भय - बुध को गमन करे तो द्रव्य और सुख की प्राप्ति - गुरु

को गमन करे तो आरोग्य - शुक्र को गमन करे तो शुभ फल प्राप्ति और लाभ

होय शनि को गमन करे तो बंधन रोग होय मरण होय ॥ १ ॥

तिथिवार नक्षत्र अनुसार दिक् मूलवर्ज्या दिशा परत्व जानना

मूलश्रवणशुक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च ॥ शनौ सो

मेव धे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ पूर्व दिशा को मूल श्रवण ज्येष्ठा परवा नवमी शनि सोम ये

वार इनमें गमन नहीं करे वर्जित है ॥ १ ॥

पूर्वाभाद्रपदाश्विनौ पंचमी च त्रयोदशी

गुरुधनिष्ठा चैव याम्ये सप्तविवर्जयेत् १

टीका ॥ दक्षिण दिशा को पूर्वाभाद्रपदाश्विनी पंचमी तरस गुरु

वार धनिष्ठा इनमें गमन नहीं करे ॥ १ ॥

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी



रवि गहु इनके दोषों को सन्मुख चंद्रमा दूर करता है ॥ १ ॥

दिशा के अनुसार सन्मुख चंद्रमा ॥

मेषे च सिंह धन पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये । तुले  
च कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्का लिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥

सन्मुखो चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदा ॥ एष्टतः

प्राणनाशाय वामे चंद्रधनक्षयः ॥ २ ॥ ३ ३ ३ ॥

टीका ॥ मेष सिंह धन ये पूर्वभागी चंद्रमा वृष कन्या मकर इनका दक्षिण  
भागी चंद्रमा तुल कुंभ मिथुन इनका पश्चिममें चंद्रमा कर्क वृश्चिक मीन इ  
नका उत्तरमें चंद्रमा वास करता है ॥ फल ॥ दिशानुसार सन्मुख चंद्र होय तो  
गमन करे अर्थ लाभ होय दाहना होय तो धन संपत्तिकी लाभ पीछे चंद्र होय तो  
प्राणनाश करे और बायां चंद्रमा होय तो धननाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

कालवेला विचार ॥ पूर्वाह्ने चोत्तरांगच्छेत्प्राच्यां मध्या

ह्नके तथा ॥ दक्षिणे अपरान्हे तु पश्चिमे अर्द्धरात्रके ॥ १ ॥

टीका ॥ दिवसके पहले पहरमें उत्तरको और दूसरे पहरमें तथा म  
ध्यानमें पूर्वको और तीसरे पहर चौथेमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रि में  
पश्चिमको गमन नकरना शुभ है ॥ १ ॥ (योगिनी वासः)

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्तरे ॥ तृतीयैकादशी

वन्द्यौ चतुर्द्वादशिने चरते ॥ १ ॥ पंचत्रयोदशी याम्येषष्ठी

भूतं च पश्चिमे ॥ षष्टे च शिवदाः प्रोक्ता वामे चैव विषोषतः

॥ सप्तमी पूर्ववायव्ये अमावास्या षष्ठमी शिवे ॥ योगिनी

सामवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदानृणाम् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रतिपदा और नवमी को पूर्वमें योगिनी जानिये - द्वितीया और द  
शमी को उत्तरमें - तीज एकादशी को अग्नि कोण में - चौथ द्वादशी को नै  
ऋत्यमें - पंचमी त्रयोदशी को दक्षिणमें - षष्ठी चौदश को पश्चिममें - सप्त  
मी पूर्णिमा को वायव्यमें - अमावसः अष्टमी को दर्शनमें दस प्रमाणसे योगि  
नाका वासा जानिये ॥ १ ॥ फल ॥ ये पीछे आर बाये होय तो शुभ जानो - दाहिने  
होय तो धन हानिकरे और सन्मुख मरणके तुल्य फल जानिये ॥ १ ॥

४ लाहृप्रत ५ वडवानल ६ खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे आठ नाम  
 तिनके नीचे अंक लिखे हैं २०।२४।६।१०।११।१८।४।३। उनमें गमन का  
 लकी तिथि है उनको एक एक अंक में मिलावे ८ का भाग दे शेष जो अंक  
 रहे उसी दिशा को काल जानिये इस प्रकार पूर्वादि ८ दिशा क्रम से जा  
 निये एष्ट भागी काल शुभ सन्मुख फल शुभ-एष्ट भागमें पातक लोह  
 और वडवानल ये तीनों शुभ-अग्र भागमें खड्ग शुभ-वाम भागमें कव  
 च शुभ-दक्षिण भागमें कांति शुभ-ऐसे दिशानुसार शुभ विचार के उस  
 दिशा को युद्ध में वा यात्रा में गमन करे तो कार्य सिद्ध होय ॥ १ ॥

पंथा राहु चक्रं ॥ स्युर्धर्मे दस्यु पुष्यो रगवसुजलपद्मी  
 श्रमेत्राप्यथार्थेयाभ्यांजांघ्रीदकार्णादिति पितृपव  
 नोदन्यथोभानिकामे ॥ ब्रह्माद्रौ बुध्यचित्रानि ऋति  
 विधिभगोरव्यानि मोक्षयोथ रोहिण्यर्यमणाप्येदु वि  
 श्वांतिममदिनकरक्षीणि पथ्यादिराहौ ॥ १ ॥

धर्म	आश्विनी	पुष्य	श्लेषा	विशा	ऽनुरा	धनिष्ठा	शत
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाति	ज्येष्ठा	श्रवण	पू-भाद्र
काम	हस्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	ऽभि	उ-भा
मोक्ष	रोहिणी	मृगशिर	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषा	उ-षा	रेवती

टीका ॥ धर्म मार्ग के नक्षत्र ७ अर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तीसरे काम  
 मार्ग के नक्षत्र ७ चौथे मोक्ष मार्ग के नक्षत्र ७ या प्रकार चार मार्गों के नक्षत्र में  
 होय सूर्य तो चंद्रमा चार मार्ग के नक्षत्र में फिरता है तिसका फल सुनो ॥

### धर्म मार्ग का फल

धर्म मार्गें गते सूर्ये अर्थी प्रो चंद्रमा यदि ॥ तदा  
 शत्रुभयं तस्य ज्ञेयं तु विबुधैः शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य और अर्थ मार्गी नक्षत्रों में चंद्रमा  
 होय तो गमन करने वाले को मार्ग में शत्रु भय होय ॥ १ ॥

धर्म मार्गें गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ॥  
 संहारश्च भवेत्तत्र भृगौ हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

विग्रहं दारुणं चैव कार्यनाशं विनिर्दिशेत्  
 टीका ॥ काममार्गीसूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्यकानाशहोय  
 काममार्गी गतेसूर्ये चंद्रमोक्ष गतेपिवा ॥ रात्रो  
 लाभो भवेत्तस्य स्वर्थलाभं विनिर्दिशेत् ॥ १०  
 टीका ॥ काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा होय तो राजा से लाभ हो  
 य और अर्थ सिद्ध होय ॥ १० ॥

मोक्षमार्गी गतेसूर्ये चंद्रे धर्म स्थिते यदि ॥  
 हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यप्रसिध्यति  
 टीका ॥ मोक्षमार्गी सूर्य वा धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हेमलाभ होय  
 और सर्व सिद्धि होय ॥ ११ ॥

मोक्षमार्गी गतेसूर्ये अर्थाशे चंद्रमा यदि ॥ विफ  
 लं यस्य कार्ये च चौरराज रिपुर्भयम् ॥ १२ ॥  
 टीका ॥ मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा होय तो राजा चोर  
 और चोरी से भय होय ॥ १२ ॥

मोक्षमार्गी गतेसूर्ये चंद्रे काम स्थिते यदि ॥ सर्व  
 सिद्धिमवाप्नोति कार्ये च जयमेव च ॥ १३ ॥  
 टीका ॥ मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो सर्व कार्य सि  
 द्ध होय ॥ मोक्षमार्गी गतेसूर्ये चंद्रे तत्र वसंस्थिते ॥

विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥  
 टीका ॥ मोक्षमार्गी सूर्य चंद्रमा दोनों होय तो विघ्न और लड़ाई होय ॥ १४  
 यात्रा युद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरादिषु ॥ व्या  
 पारेषु च सर्वेषु यथा राहुः प्रशस्यते ॥ १५ ॥  
 टीका ॥ यात्रा में युद्ध में विवाह में नगरादिक के प्रवेश में तैसेही सर्व  
 व्यापारों में प्रवेश करने में यथा राहु शुभ होता है ॥ १५ ॥

गर्गादिकामत ॥ उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च वृहस्प  
 तिः ॥ अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यजनार्दनः ॥ १६ ॥  
 टीका ॥ गर्गादिक के मत से रात्रि पिछली घड़ी ऊषा काल होती है उसमें

सूर्यभाद्रणये च्चांद्रसप्तभिर्भागमाचरेत् ॥ त्रिषट्कभ्रमाणंचै  
वद्विसप्तमहदाडलं ॥ प्रथमपंचचत्वारिंशदलोनास्तिनिश्चि  
तम् ॥ आडलताडनंप्रोक्तंभ्रमाणेकार्यनाशानम् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्रतक गिने और सातका भागदेशेष  
३७ वचें तो उस दिन भ्रमाण और कार्यनाश करे अथवा ७ ही वचें तो  
आडल जानिये उस दिन ताडन करने में शुभ है और १४।५ वचें तो आड  
ल नहीं होता गमन में उक्त है ॥ १ ॥ (हैवरमुहूर्त)

सूर्यभाद्रणये च्चांद्रपक्षादितिथिवारयुक्तं नव  
भिस्तुहरेद्भागसप्तशेषंतुहैवरम् ॥ १ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिवस नक्षत्रकी संख्या में पक्ष तिथिवार मि  
लावे ८ का भागदेशेष ७ रहें तो हैवर मुहूर्त जानो सो गमनमें शुभ है ॥ १

(घवाडमुहूर्त) ॥ सूर्यभाद्रणये च्चांद्रत्रिगुणंतिथिमि  
श्रितम् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागत्रीणिषोषंघवाडकम् १

टीका ॥ सूर्यके नक्षत्रसे दिवस नक्षत्रतक गिने तिसको तिगुणा करे  
चलती तिथि उसमें मिलावे ८ का भागदेशेष ३ वचें तो घवाड जानिये १

वारानुसारस्वर ॥ गुरोशनीरवौभौमेशुभोवैदक्षिण  
स्वरः ॥ अन्यवारेषु वामस्तुस्वरश्चैव शुभस्मृतः ॥ १  
निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ॥ यस्स्वरः  
सैवनाशाग्रे योगीनामतमीदृशाम् ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ गुरु शनि रवि भौम इन चारवारों में दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश  
करने में शुभ है और बुध चंद्र शुक्र इन वारों में बायां स्वर चले तो निर्गमको  
शुभ है ये योगियोंके मतसे स्वरविचार है ॥ (वारानुसारशाकुन)

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुतेसप्तजीवपदानि त्रेयंचैकाद  
शार्केशनिशाशिशुगुषु प्रोक्तमर्थे चतुष्कं ॥ तस्मिन्काले मु  
हूर्ते सकलगुणयुते कार्यसिद्धिः शुभोक्तानास्मिंपंचांग  
शुद्धिर्नखलुशाश्रीवलंभाषितं गगमुख्यैः ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥

टीका ॥ बुधको ८ पद अपनी छाया हो तो गमनको मंगलको ८ तो गमन

ईशान्यां च शुभं ज्ञेयं मात्म चिक्त्वा महद्दयम् ॥ ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञे  
 यं मध्ये चैव महद्दयम् ॥ आसने प्रायनं चैव दाने चैव तु भोज  
 ने ॥ चामुंगो पृथ्वतश्चैव षट् छिक्त्वाश्च शुभावहः १॥२॥  
 टी० ॥ पूर्व की छीक अशुभ आग्नेय की शोक कारक दक्षिण की दुःख  
 कारक नैऋत की अरिष्ट कारक पश्चिम की शुभ वायव्य की भक्षणाक  
 ती उत्तर की धन दायक ईशान की शुभ अर्धनी छीक अत्यंत दुःखदा  
 यक ऊपर की होय तो शुभ दायक और मध्य में होय तो वडा भय कारक  
 और छः जगै शुभ दायक आसन १ प्राग्या २ दान ३ भोजन ४ वाये ५ पृथ  
 ने हेये शुभ जानिये ॥२॥

पल्लनी शब्द प्राकृत ॥

वित्तं ब्रह्मणि कार्य सिद्धिमतुलां प्राके हुतां प्रोभयं वाथि  
 मित्र वधः क्षयश्च निचरते लाभः समुद्रालये ॥ वाय  
 ध्यां वरमिष्ट मन्त्रमशानं सौम्यार्थं लाभस्तया द्रुं प्रा  
 ने गृहगोधि कार्यमतुलं सर्वत्र भूमी भयम् ॥२॥

टी० ॥ पल्लनी शब्द के अनुसार दिशा का फल ऊर्ध्व दिशा को लक्ष्मी प्रा  
 ग् पूर्व को कार्य सिद्धि आग्नेय को भय दक्षिण को मित्र वध नैऋत को क्ष  
 य पश्चिम को लाभ वायव्य को मिष्ट भोजन उत्तर को लाभ ईशान को दान  
 र्ग सिद्धि भूमी में सर्वत्र भय जानिये ॥ (पल्लनी पतन प्रारट का चढना  
 राज्यतु सिरसि ज्ञेयं ललाटे वंधुद प्रानं ॥ भूमध्ये राज्यसन्धो  
 नं मुतरां च धनस्य १ अथ रोष्ठे धनैश्चर्यनासांते व्याधिपी  
 दुने ॥ प्रायुष्यं दक्षिणे करी बहूला भस्तु वामके २ अक्षी  
 स्तु वंधनं ज्ञेयं भुजे भूपतितुल्यता ॥ राजक्षोभ तथा वामे  
 कंठे प्रातु विनाशानं ॥ स्तन द्वये च दुर्भाग्यं उदरे मंडनं शुभं  
 प्रजानाशः पृष्ठे प्रोजानु जंघे शुभावहं ४ करद्वये वस्त्रला  
 भः स्कंधयोर्विजयी भवेत् ॥ नाभौ बहू धनं प्रोक्तं पूर्वांश्चैव ह  
 यादिकं ५ दक्षिणे मणि वंधे च मनस्तापो धनक्षयः ॥ मणि  
 वंधे तथा वामे कीर्ति हि द्विधन प्रदं ६ नरवेषु धान्यलाभं च व  
 त्रे मिष्ठान्न भोजनं ॥ गुल्फयोर्वंधनं ज्ञेयं कंशांते मरणां ध्रुवं ७

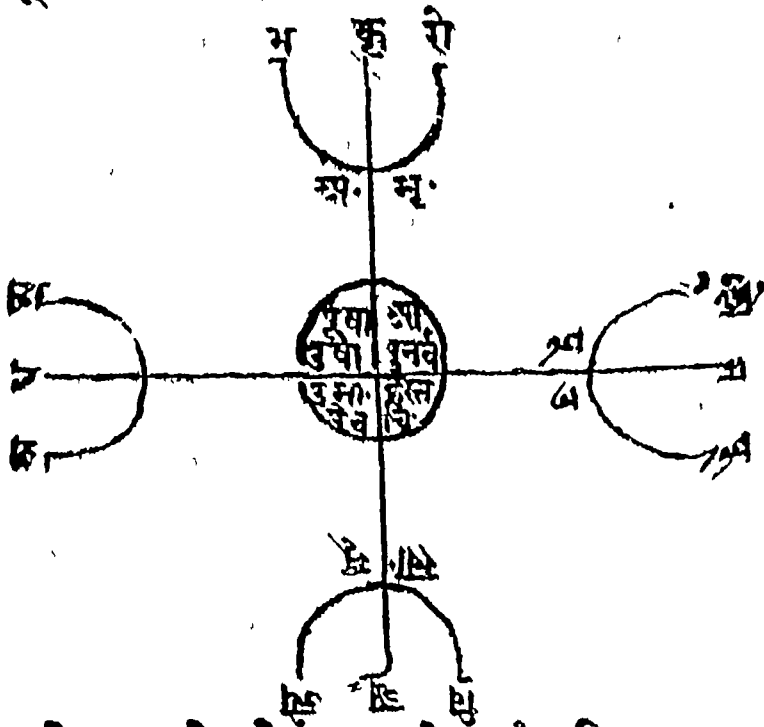
टीका ॥ अंग का फरक नादहिना भाग शुभ है और वामां भाग हृदय पीठ ये अशुभ जानना चाहिये ॥ १ ॥

अंगानां स्पंदनं चैव शुभाशुभविचेष्टितं। तन्मे विस्तर तो ज्ञ हि येन स्यात्। द्विधो भुवि। मत्स्य उवाच ॥ पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनंदनः ॥ स्थानं च वृद्धिमायाति भू न सो प्रियसंगमः ॥ भृत्यलब्धीश्चासिदेशे ह्यगुपाते धनागमः उत्कंठोपगमो मध्ये दृष्टं राजन्विचक्षरोः ॥ ४ ॥ दृग्बंधने संगरे च जयश्रीघ्नमवाप्नुयात् ॥ यो विह्लाभो पांगदेशे श्रवणांते प्रियश्रुतिः ॥ नासिकायां प्रीति सौख्यं प्रियप्राप्तिरधोष्ठयोः ॥ कंठे तु भोगलाभस्याङ्गे वृद्धिरथांसयोः ॥ सुहृत्श्रेष्ठश्च वाहभ्यां हस्ते चैव धनागमः ॥ एष्टे परं जयोस्ते घो जयो वृक्षस्थले भवेत् ॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननं भगे ॥ स्थानभ्रशो नाभिदेशे प्रांत्रे चैव धनागमः जानुसंधौ परैः संधिर्वलवृद्धिर्भवेत् ॥ एकदेशे भवेत्सा मीजं पाभ्यां रविनंदनः ॥ ८ ॥ उत्तमस्थानमान्येति पद्भ्यां प्रस्फुरणो नृपः ॥ अलाभं चाध्वगमनं भवेत्पादतले नृपः ॥ १० ॥

टीका ॥ मनु प्रश्न करते हैं अंग के स्थान स्फुरण का विचार शुभाशुभ फल विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ॥

१ मस्तक स्फुरण	पृथ्वीलाभ होइ	११ अधरोष्ठ	प्रीयवस्तु प्राप्ति
२ ललाटे स्फुरण	स्थान वृद्धि	१२ कंठ में	ऐश्वर्य प्राप्ति
३ भ्रुकुटी मध्यमा	प्रियदर्शन	१३ कंधों में	भोग वृद्धि
४ नेत्रों में कु.	भृत्य मिले	१४ दोनों वाहं	महत्की भट
५ नेत्रों की कोरों में	धन प्राप्ति	१५ दोनों हाथ	धन प्राप्ति
६ कंठ मध्य	राज्य प्रीति	१६ एष्ट में	दूसरे से जय होय
७ दृग्बंधन	युद्ध में जीत	१७ उरू में	जय प्राप्ति
८ अपांग देश	स्त्री लाभ	१८ कुक्षि में	प्रीति प्राप्ति
९ करणों में	प्रिय मित्र की सु.	१९ शिरो में	स्त्री प्राप्ति

नक्षत्रतक गिने और गमन करना हो तो कृत्तिका से दिवसनक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मों को सूर्य नक्षत्र से सोम नक्षत्रतक गिने इस क्रम से १



विमूललागे भवेन्मृत्युर्मध्यमं वहि रघकम्  
लाभक्षेमं जया रोग्यं चंद्रगर्भेषु संमितम् १।

टी॥ विमूल के अग्रभाग में दिवसनक्षत्र होय तो मृत्यु और बाहरी अघक में हो तो मध्यममध्यके अघक में हो तो क्षेम लाभ जय आरोग्य ये सब संमत जानिये ॥१॥

### गमन की लग्न

चर लग्ने प्रयातव्यं हि स्वभावे तथा नरैः ॥

लग्ने स्थिरे नृगं तव्यं यात्रायां क्षेमभीप्सुभिः

टी॥ अथ कर्क तुला मकर ये चर और मिथुन कन्या धनमीन ये हि स्वभाव आठ लग्नों में गमन करने से सब कार्य सुफल हीय श्रेष्ठ लग्न स्थिर से वर्जित है यात्रा में ॥१॥

### दूसरा प्रकार लग्न का

लग्ने कार्मुकमेष नौलि गमने कार्यं त्वे लं वा नृगां  
पंचत्वं मकरे तथैव च घटे तद्दत्तफलं च स्थिरके ॥ सिं  
है कर्कटके वृषे परिगतः सर्वा र्थे सिद्धिं लभेत् क-  
न्यामीनगतस्तर्ध्वं मिथुने शीरव्यं शुभान्न चक १॥

दी॥ जो कूरग्रह चतुर्थ स्थान में हो उसे वर्जिकें श्रेष्ठ ग्रह होय वे शुभ फल  
तो देख योग करिकें ३ मास चाइय मे दिवस के अंत में कार्य सिद्ध होय ॥९॥

गुरु भूगु अंड बुधो यदा स्थान शुभे चलये तु सुते च युक्ता ॥  
कुर्वति कार्यस्य च सिद्धिः ॥ १० ॥ इत्येवापि वृत्त सत्यम् ॥  
दी॥ गुरु शुक्र चंद्रमा बुधये चारों ग्रह पंचम स्थान में होय तो सु  
भ होय और ३ मास में कार्य सिद्धि होय ॥१॥

जीवश्च शुक्रश्च बुधश्च वध करो नियात्रा फलां विल  
यात् । पक्षद्वयेनापि वदंति सत्यं सौम्यर्क्ष संस्थः ॥ वलश्च चंद्र  
दी॥ गुरु शुक्र चा बुधये बडे स्थान में ही और मृग शिर नक्षत्र का चंद्र  
मा उसी स्थान में हो तो सर्व कार्य एक मास में सिद्धि होय ॥२॥

चेत्सप्तमस्था गुरु सौम्य सोमाः कुर्वति यात्रा विजयं नृपाणां  
सर्वं नृपास्त र भवति व प्रया मास द्वयेनापि च पंचभिर्दिने  
दी॥ चंद्र बुध गुरु मे सप्तम स्थान में होय तो यात्रा में विजय होय  
सत्र राजाही मास में वा पांच दिन में वशी भूत होय ॥३॥

कूराश्च सर्वे यदि लग्न काले मृत्यु स्थिता मृत्यु करा भवति  
सौम्यो र कूर्वा भूगु नंदनश्च दी चो युषां मृत्यु करश्च चन्द्रः ४  
दी॥ शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टम स्थान में हो तो मृत्यु कारक औ  
र ये न हो तो शुभ होय आयु की वृद्धि करे परंतु चंद्रमा कारक जानना ॥४॥

धर्म स्थिता यदि भवति हि पाप खेदाः प्रयाण काले च तथैव चं  
द्रमाः ॥ तदा जयं वै स बले च चंद्रे मास त्रयेणापि दिनैश्च तुभिः ५  
दी॥ नवम स्थान में पाप ग्रह तथा चंद्रमा होय तो तीन मास में  
वा चार दिवस में कार्य सिद्धि होय ॥५॥

धर्मा स्थितो वा यदि जीव शुक्रो तो मस्य सन्नुर्यदिलग्न का  
ले । लग्ने चरे वा यदि वा स्थिरे वा कार्यस्य सिद्धिश्च भवेच्च लाभः  
दी॥ धर्म स्थान में गुरु बुध शुक्र चंद्रमा ये चर लग्न में वा स्थिर  
लग्न में स्थित होय तो कार्य सिद्धि करे लाभ करे ॥६॥

कर्म स्थिता पाप खगास्त सौम्या । कुर्वति कार्य शनि वर्जिता प्र



प्रस्थानेपि कृतेनोयान्महादोषान्विते दिने १

टी०॥ गर्गजी के मत से दूसरे के घर में प्रस्थान रखना और भृगुजी के मत से सीमा से बाहर रखना और भारद्वाज के मत से चारों मात्रों पर के अर्थ तजितना तीर जाता है। उतने पर और वसिष्ठ के मत से नगर के बाहर रखे परंतु महादोष युक्त दिवस में यात्रा न करे परंतु परस्थान रोज रोज चलाता रहे ॥ प्रस्थान दिवस में वर्जनीय पदार्थ

क्रोध क्षौर रतिश्च मामिषगुडधूताश्च दुग्धासवक्षा  
राभ्यंगगयासितां च रचमी तैलं कटह्यद्गमे ॥ क्षौरश्चौ  
ररतीः क्रमाची शरसप्राह परंतु दिने रोगं स्त्र्यार्तवकं  
सितान्यतिलकं प्रस्थानके पीति च ॥ १ ॥ ५ ॥ ५

टी०॥ कोप करना और क्षौर स्त्री संग परिश्रम करना भांग गुड धूल रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्य विषयक भयश्चेत वस्त्र वर्मन तैल कटु पदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थान दिन वर्जित हैं तिन में दूध क्षौर स्त्री संगये क्रमसे ३५१७ दिन प्रस्थान दिन में पहले वर्जित है शेष और कही हुई वस्तुके तल प्रस्थान दिन में वर्जित है और श्वेत से भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्णा आदि तिलक और रोग विषयक चिंता भी प्रस्थानके दिन वर्जित है ॥ १ ॥

मत्स्योक्तप्रकृत ॥ श्लेषध्याचनियुक्तो हि धान्यं कृत्स्नं तु  
यद्भवेत् ॥ कार्पासश्च तृणां शुष्कं च्छं गोमयमेव च ॥ १ ॥

टी०॥ श्लेषधुक्त मनुष्य काला धान्य कपास सूखा तृणा भूमी इत्यादि वस्तु और उपलाये प्रस्थान समय आगे से आचिनो अशुभ जानिये ॥ १ ॥

इंधनं च तथा गारं गुडं सर्पिस्तथा शुभम् ॥ ५ ॥

अभ्यक्तो मलिनां मंदः स्तथानग्रश्च मानवः १

टी०॥ इंधन भस्म गुड चीदुष पदार्थ तैल लगाने से मलिन मंद नग्र मनुष्य ये प्रस्थान समय में अशुभ जानिये ॥ १ ॥

मुक्तकेशो रुजानश्च काषायां च रधारसाः ॥

उन्मतः कथितो सत्वो दीनो वाद्यनपुंसकः २

टी०॥ मुलेभये केशयुक्त मनुष्य रोगी गेरु आवस्त्र पहिने मनुष्य उन्मत

टी०॥ दूसरी वारभी अशुभ शुकुनरीखे तो घोंडप्र प्राण स्वांस पीछें जाय  
तीसरे जो अशुभ शुकुनरीखे तो न जाय घरमें प्रवेश करे इसने पीछे मग  
शुकुन कहते हैं ॥१॥ गमनकालके उत्तमशुकुन ॥

प्रशास्तीवाद्यशब्दश्रुभिन्नभेरीवास्तथा ॥

पुरनः शब्द एहीति शस्यतेन च पृथक्तः ॥ ग

च्छेति चैव पश्चाद्यः पुरस्तादभविगर्हितः १

टी०॥ यात्राकालके शुभ शुकुन कहते हैं वाजोंका शब्दभेरी का शब्द  
नक्कारों का शब्द और आश्रये यह आगेसे होय तो शुभजानिय और  
जाश्रये शब्द पीछे से होय तो शुभ आगे होय तो अशुभजानना १

श्वितासुमनसः पृथ्याः पूर्णाकुम्भस्तथैव च ॥

जलजाः पक्षिराश्रैव भांसमत्स्यस्य पार्थिव १

टी०॥ श्वेतफूलभरा पानी का कलश जलके पक्षीमत्स्यका मांसये शु  
भ हैं ॥ गावस्तरंगमीनागो वृद्ध एकः पशुत्स्वजा ॥

त्रिदशाः सहदेवि प्राज्वलितश्रुहतासनः १

टीका॥ गौघोड़ा हाथी वृद्ध एक पशुदकरी देवता मित्र ब्राह्मण

जलती अग्नी यह शुभजानिये ॥१॥

गणिकाच महाभागदूर्वाश्रुर्द्राश्रुगोमयम्

रुवजं रूप्यं च ताम्रं च सर्वरत्नानि चाण्यथ ॥ १

टी०॥ वे प्रयाहरी दूव गोवरसोतारूपा तांबा और सवरत्न ये शुभ हैं ॥१॥

श्रोषधानि च सर्वज्ञायवाः सर्वार्थकास्तथा

रुद्रपात्रं पात्रं पाताका च मृतिका युधपीठकम् १

टी०॥ श्रोषध सर्वज्ञ पुरुषजो श्वेतसरसो रवद्रुपात्र पताका मृतिका

श्रुध आसन यह शुभजानिये ॥ १॥

राजलिंगानि सर्वाणि शबं रदितवर्जितम्

घृतं दधि पुष्यश्रैव फलानि विविधानि च १

टी०॥ सवराजाके चिन्ह रोदनरहित मृत्क इही दूधणी और

नाना प्रकारके फल ये शुभजानिये ॥१॥

सूर्यशुभानुहिमरोचिपिचंद्रधिगयोत्सार्पाच्चभूमित  
 नयेथवुधेचहस्तात्॥मैवाहुरौभृगुसूतेखलुवैश्यदे  
 वाच्छायासुतेवरुणभाक्क्रमशःस्फुरेव॥आनंदः का  
 लदंडश्चधूम्राख्योयप्रजापतिः॥सौम्येध्यांक्षोधजना  
 माश्रीचत्सोवरागमुहुरः॥छत्रंमैत्रोमानसश्चपद्मारेखालं  
 वकस्तथा॥उत्पानिमृत्युकारणारख्यःविद्विश्चैवशुभोभृतः  
 सुसलोथगदाख्यश्रमांतंगौराक्षसश्ररः॥स्थिरःप्रवर्द्धमा  
 नश्चयोगोद्याविशतिक्रमात्॥फलेखनामसदृशःयोगः  
 प्रोक्तामदावुधैः॥फलं॥आनंदोलभतेसिद्धिकालदंडे  
 मृत्तितथा॥धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापते॥  
 सौम्येचैवमहत्सौरख्यंध्यांक्षेचैवधनक्षयं॥ध्वजनाश्री  
 चसौभाग्यंश्रीचत्ससौख्यसंपदा॥यज्ञोक्षयोमुहुरश्चश्रीला  
 प्राक्ततथैवच॥छत्रेचराजसन्मानोमैत्रेपुष्टिर्नसप्रायः॥  
 मानसेचैवसौभाग्यंपद्मारेखेचधनागमं॥लंबकेधनहा  
 निश्चउत्पातेप्राणानाश्रवं॥मृत्युयोगेभवेन्मृत्युःकारो  
 चक्लेपामादिशेत्॥सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिःशुभकल्याणमे  
 वच॥अमृतेराजसन्मानोसुसलेचधनक्षयः॥गदाख्येचा  
 क्षयाविद्यामातंगेकुलवर्द्धनं॥राक्षसेनुमहत्कष्टंचरेका  
 र्यंचसिध्यति॥स्थिरयोगेशूहारांभःप्रवृद्धेपाणिपीडनम  
 दीका

आनंदादियोग २५ हैं तिनमें एक अयोगके मातवार और सात नक्ष  
 ३ तिनका क्रम ऐसे जानिये मविवारको अशुभिनीसे आनंदादि योग  
 होते हैं सोमवारको मृगशिरसे आनंदादि-मंगलको अशुभसे आ  
 नंदादि-बुधकी हस्तसे आनंदादि-बृहस्पतिको अशुभसे आ  
 दादि-शुक्रको उत्तराषाढसे आनंदादि-शनिवारको शतभिषासे  
 आनंदादि-इस प्रकारसे २५ योगोंका क्रम जानना ॥

॥ प्रागे चक्र लिखा है ॥

२७	स्थिर	इ.मा	कृति	पुन.	पू.फा	स्वा.	मू.	श्रव	गृहभः
२८	पर्वमान	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा	वि.	पू.वा	घान	विवाह

### चरयोग

रवौ पूषा गुरौ पुष्यः शनौ मूल भृगो मघा ॥ सौम्ये ग्राह्यं  
 विष्णु भौमे चंद्रे द्वा चरयोगकः ॥ १ ॥ क्रकचयोगः ॥ रवौ  
 तुदादशी प्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ॥ चंद्रे चैकादशी न  
 वमी बुधवासरे ॥ २ ॥ शुके च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव तु  
 षष्टिका ॥ गुरौ चाष्टमिका ज्ञेया योगस्तु क्रकचो बुधेः  
 ॥ ३ ॥ दग्धयोग ॥ बुधे तृतीया कुजपंचमी च षष्ठ्या  
 गुरौ रश्मि शुक्रवारे ॥ एकादशी सोम शनिर्नवम्यां  
 द्वादश्या मकी मिति दग्धयोगः ॥ ४ ॥ मृत्युदा योग ॥  
 रवौ भौमे भवेन्नंदा भद्रा जीव शशांकयोः ॥ जया शुके  
 बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ५ ॥ सिद्धियोगः ॥  
 शुके नंदा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिताः ॥ शनौ रिक्ता  
 गुरौ पूर्णा सिद्धि योगा उदाहृताः ॥ ५ ॥ उत्पत्तादियो-  
 ॥ विशारवा दिचतुष्कंच भास्करा दिक्मेरातु ॥ उत्पत्त  
 मृत्युकालश्च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ यमदंष्ट्र  
 योगः ॥ मघा धनिष्ठा मूर्ये तु चंद्रे मूल विशारवकेरु  
 तिका भरणी भौमे सौम्ये पूषा पुनर्वसुः ॥ ७ ॥ गुरौ पू  
 वा श्विनी शुके रोहिणी चानुराधिके ॥ शनौ विष्णुः श  
 तभिषक्यमदंष्ट्रा प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥ यमदंष्ट्र योगः ॥  
 रवौ मघा बुधे मूल गुरौ चैव च कृत्तिका ॥ भौमे चाद्रा श  
 नौ रश्मिः शुके चैवतुरोहिणी ॥ चंद्रे विष्णु रश्मि योगीयं य  
 मदंष्ट्रः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥ सुसलक्ष्णयोगः ॥ चंद्रे चित्रा  
 भृगोज्येष्ठा शनौ चैवतुरेवती ॥ चांद्रजे तु धनिष्ठा कार्त्तिके  
 तु भरणी तथा ॥ उवाच ॥ इत्थं भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा  
 ज्ञेयं सुसलक्ष्णयोगो वर्ज्यः शुभे बुधे ॥ १० ॥

नाभौवेहा शुभाचहम् ॥ शुवेदे भवपीडाचरह  
हलेकमयेकम् ॥ एकवाभेनाशकरे भृत्य

भास्वामिभान्तकम् ॥ १ ॥

टी० ॥ नराकारचकके अवयव स्थानी में स्थापित करे शिरपैत्री  
नक्षत्र धरे तिसका फल अर्थलाभ सुखमें ३ तीननाशका हृदयमें  
५ पांच धन धान्यदृष्टि पैरीं पर ईक्षः हरिद्र दधिपर २ मत्स्यनाभि  
में ५ शुभगुहा पर २ शय पीडाचाये हाथपर १ अर्थ अर्थ प्राप्ति दाह  
ने पर १ नाशकरे ॥ दूसरा मन्त्र

हासीचक्रप्रवस्था भिदासी भास्वामिभान्तकं ॥ श्रीर्वि  
शीशिगुरीशीशिस्कंद यो अहयं स्पृत्तम् १ हृदयेपंचक  
हाशिनाभौपंचभगेककम् ॥ जानुद्वयेद्वयं शैवपादयोश्च  
चयंत्रयम् २ ॥ फलं ॥ शिरस्थाने भवेत्त्राभौ गुरवेहानिः  
प्रजायते ॥ स्कंधे च स्वामिने भृत्य हृदये पुष्टि चर्द्धनम्  
॥ ३ ॥ नाभौ हानि प्रदं प्रोक्तं भगे चैव पलायनम् ॥ जा  
नौ सैवांल्लभे नित्यं पादयोस्तु धनदाय ॥ ४ ॥ ५

टी० ॥ हासीके जन्म नक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रक गिने तिसका  
क्रम सीस पर ३ लाभ सुखमें ३ हानिकंधा पर २ स्वामीकी मृत्युहृ  
दयमें ५ पुष्टिनाभिमें ५ हानिभग पर १ पलायनजानु पर २ सेवाकरे  
पदपर ६ धनक्षयद्वयमें शुभफलदेखकर रक्खे ॥ ४ ॥

( गवादिपशुलेनैकामुहते )

श्रीर्वेत्रयं गुरवे हेतु पादेष्वेवो चिनिदिशेत ॥ हृदयेपंच  
अरहाशिहानिष्वेवो भगेककम् २ ॥ फलं ॥ शिरस्थाने  
भवेत्त्राभौ गुरवेहानि प्रजायते ॥ पादयो रथलाभः स्वा  
नहृदये सौख्य चर्द्धनम् ॥ स्तनयोस्तु महात्नाभोगुह्य  
स्थाने महद्वयम् ॥ अर्थलादिगयां शैव्यं महिष्यं सूर्यभाच्य  
शैव ॥ हृदये च हृदये शैव्यं विप्रैः पत्सु पीडशः ॥ १ ॥

टी० ॥ गाय वा वृष लेना होय तो उत्तरा फाल्गुनी तै लैके शिवसनास

ये प्रथम कानों पर २ लाभ मस्तक पर २ लाभ हातों पर २ लाभ पूंछ पर २ हाथि संड पर २ शुभ पीठ पर ४ मुख संपदा पैद पर ४ रोग मुख पर ४ मध्यम पायी पर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥२॥

(पालकी चढने का मुहूर्त)

सूर्य भा दिन भं यावत्सं च पंच चतुर्दिशि ॥ मध्ये तु सप्त ।  
इत्यानि च के ज्ञेयं सुरवा बहम् ॥ फलं ॥ पूर्व भागे तु चारि ।  
ग्यं दक्षिणे काष्ठ कारकं ॥ पश्चिमे कृशाता चैव उत्तरे व्या  
धिसंभवः ॥ मध्यस्थं च शुभं प्रोक्तं मायु वृद्धिकरं परम्  
फल्यं कारो परां चैव दाल कस्य बुधैर्हितम् ॥२॥ २॥ ३॥

दी० ॥ सूर्य नक्षत्र द्विवसनक्षत्र पर्यंत पालकी पालना इनमें चढना  
चाहै उस के चारों ओर और मध्य में लिरवने का क्रम पूर्व भाग में ५ आ-  
रोम्य दक्षिण में ५ कष्ट करना पश्चिमें ५ कृशाता उत्तर में ५ व्याधिन  
आ मध्य में ७ आयु वृद्धि कारक जानिये ॥२॥ २॥ ३॥

( छत्र चक्र )

शुक्ल रा रोहिणी रोहो पुष्य शुभ शत तारका ॥ धनिष्ठा अ  
श्वरा श्रेष्ठ शुभाति छत्र धारणी ॥ फलं ॥ मूले त्रिणास  
स्रहंडे कंठे चैव तु पंचकं ॥ मध्ये वसु प्रदान च्यं शिरवरे वेद  
रश्च ॥ मूले च जायते नाशो दंडे हानिर्धन क्षयः ॥ २॥  
कंठे च राज सन्मानो मध्ये छत्र पतिर्भवेत् ॥ शिरवरे  
कीर्ति वृद्धिश्च जन्म भाल्लक्ष्मी भान्तरुम् ॥ ५ ॥ ३ ॥

दीका ॥ तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शत तारका धनिष्ठा अश्वरा  
यह नक्षत्र छत्र धारण में शुभ है परंतु अपने जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्ष  
त्र तक लिरवने का क्रम प्रथम मूल पर ३ जीवनाश दंड पर ७ हानि क्ष  
नक्षय कंठ पर ५ राज सन्मान मध्य में ८ छत्र पति शिरवर पर ५ की  
र्ति वृद्धि जानिये ॥२॥ २॥ ३॥ ४॥

मंचक चक्रम्

सूर्य भाद्र राये त्वांद्रं मंत्र मूले चतुश्चतुः ॥ गात्रेषु त्वे-

सैन्य नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम चक्रों पर ३ नक्षत्रों के बीच  
है नक्षत्र चक्र के बीच पर ३ सिद्धि रथ के बीच पर ३ धन लाभ चक्रों के  
३ अंग अंत के अंग पर है शुभ और सर्वत्र ३ रूप जानिये ॥ १॥

(तिलों की घानी करने का सुत्र)

कोल्हू चक्र

चारण चक्र प्रथम श्यामि सूर्य भास्वरुने चक्र ॥ त्रिणिजी  
शिवायं शीरी शीरी शीरी शयंतया ॥ शीरी शीरी तुमान्  
त्रयी जये ब्राह्मण के शुभे ॥ फलं ॥ हानि रै मूर्धे मारो रयं विना  
शोभ्यते चक्र ॥ स्वामि घाली निर्धनता भृत्युरे वसु रं कलात् १

टी० ॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा नक्षत्र तक घानी चक्र के भाग ६ में  
तिसका क्रम प्रथम भाग में है हानि दूसरे ३ भाग से श्वर्य तीसरे भाग  
आरोग्य चौथे भाग ३ नाश पांचवें भाग ३ दुख छठे भाग ३ स्वामी  
घान सात में भाग ३ निर्धनता आठ में भाग ३ मृत्यु नवें भाग ३ क  
सब इन में जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन करे ॥ १॥

(ऊख के रस काढने का सुत्र)

वेद विने चभू भूल वाता हस्त रसाः क्रमात् ॥ फलं ॥ प्र  
पभंचल भेद हनी द्वितीये हानि भेद च ॥ तृतीये सर्वला  
भय चतुर्थे चक्षयंतया ॥ पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठ्याने  
शुभं मृत्यु ॥ २ ॥ सप्तमे चैव पीडा स्वाद्य मे धन धान्य है  
सूर्य भास्वरा ये चांद्र भिक्षु यं चै नियो जयेत् ॥ ३ ॥ ३

टी० ॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा नक्षत्र के इस क्रम से भाग ६ लिखे प्रथम  
भाग ४ लक्ष्मी दूसरे २ हानि तीसरे २ सर्व लाभ चौथे १ क्षय पांच में  
३ मृत्यु छठे है शुभ सात में ३ पीडा आठ में है धन धान्य इन में जिस  
दिन शुभ आवे उस दिन रस काढने का आरंभ करे ॥ ३ ॥

(खेती करने का सुत्र)

साती ब्राह्मण ज्योतिर दिक्षियुगं राधा चतुर्के न चारे  
वसुंतर विष्णु भं कृषि विभो क्षत्रियापे विभो ५ ५

ईनीली में ३ हृदय पर ३ पीठ पर ३ पार्श्व में शुक्राणु में ३ नाव के मध्य में ईदीजिये तिन में उपर के मध्य के शुभ और स्थानों के अशुभ जानिये।

(लग्न और ग्रह बल)

त्रिषडायगतः सूर्यश्रद्धो द्वित्रायगः शुभः ॥

कुजाकी त्रिषडायस्थो त्रिषट् श्वेत रगो गुरुः ॥

द्विसूतास्लाघरिः फायरिपु संस्थो बुधः स्मृतः

रुद्रां स्यारी त्रिनाथत्रयीयानि शुभदः सितः २।

टी० ॥ नौका के चलाने और माल भरने की लग्न का ग्रह बल ज्ञान तीसरे ३ छठे ईग्यारह वें ११ सूर्य शुभ और चंद्र मंगल शुनि यह भी इन में शुभ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में गुरु शुभ २५ ७ ८ १२ ई इन स्थानों में बुध होय तो शुभ ७ १२ ई इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभ जानना ॥ २ ॥

(नौका स्थान के ग्रह)

नान्यां पापरवगाः शौम्याः शुक्राणो शुभकारकाः

व्यस्ता मृत्युकराः क्रूरः पृष्ठे कूर्पे च भीतिहृत ५।

अंते वाह्ये स्थितास्ते च ह्यलाभाय स्मृता बुधैः ।

एवं विचार्य देवज्ञो नौयात्त समयं वदेत् ॥ २ ॥

टी० ॥ लग्न समय में जो जो ग्रह जिस जिस स्थान में पडा होय तिसका तेसा फल नाडी में पाप ग्रह शुभ शुक्राणु पर शुभ ग्रह शुभ है और यह विपरीत होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर वा कूर्प पर आवे तो भयदायक और इन ग्रहों में से वाहर आवे तो लाभ होय यह विचारिक रि के ज्योतिषी नाव चन चावे ॥ १ ॥ २ ॥

दीपक चक्रम्

दीपिकाया मुरवे पंचराज सन्मान लाभदाः ॥

कंडे नवधन प्राप्तिर्मध्येष्टौ स्वामि मृत्युदाः २

दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्निकृदाच्च दीपिकाम् ।

टी० ॥ कृतिका नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम मुरव



ईनीली में ३ हृदय पर ३ पीठ पर ३ पार्श्व में शुक्राणु में ३ नाव के मध्य में ईदी जिये तिन में ३ पर के मध्य के शुभ और स्थानों के ३ शुभ जानिये।

(लग्न और ग्रह चल)

त्रिषडायगतः सूर्यश्चंद्रो द्वित्रायगः शुभः ॥

कुजाकी त्रिषडायस्थो त्रिषट् खेत रगो गुरुः ॥

द्विसुतास्त्राष्टदिः फायरिपु संस्थो बुधः स्मृतः

सूर्यां त्वारी त्रिनाथत्रयो यानि शुभदः सितः २।

टी० ॥ नौका के चलाने और माल भरने की लग्न का ग्रह चलाने जान तीसरे ३ छूटे ईंध्यारह वें १२ पूर्व शुभ और चंद्र मंगल प्राणि यह भी इन में शुभ इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में गुरु शुभ २५ ७ ८ १२ ई इन स्थानों में बुध होय तो शुभ ७ १२ ई इन स्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभ जानना ॥ २ ॥

(नौका स्थान के ग्रह)

नान्यां पापरवगाः शौम्याः शुक्राणो शुभ कारकाः

व्यस्ता मृत्युकराः क्रूरः पृष्ठे कूर्पे च भीतिहतः ॥

अंते वाहो स्थितास्ते च ह्यलाभाय स्मृता बुधैः ।

एवं विचार्य है वज्रो नौयात्त समयं वदेत् ॥ २ ॥

टी० ॥ लग्न समय में जो जो ग्रह जिस जिस स्थान में पडा होय तिसका तैसा फल नाडी में पाप ग्रह शुभ शुक्राणु पर शुभ ग्रह शुभ है और यह विपरीत होय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर वा कूर्प पर आवे तो भयदायक और इन ग्रहों में से वाहर आवे तो लाभ होय यह विचारिक रिके ज्योतिषी नाव चव चावे ॥ १ ॥ २ ॥

दीपक चक्रम्

दीपिकाया मुखे पंचराजसन्मानलाभदाः ॥

कंठे नवधन प्राप्तिर्मध्येषु स्वामिमृत्युदाः २

दंडे पंच भवेद्राज्यं अग्नि कृशाच्च दीपिकाम् ।

टी० ॥ कृतिका नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम-मुख

(वागलगानेकामु)

गोसिंहालिगतेषु चोत्तरगतेभानौ बुधादित्रये-  
चंद्रार्के च शुभा वधैरभिहितारामप्रतिष्ठा क्रिया  
टी०॥ उत्तरायनमें वृष सिंह वृश्चिक इन राशियों का मूर्य और बु  
धगुरुशुक्र रवि चन्द्रमा इनमें कोई वार हो ऐसा शुभ दिन देख  
कर वागलगाना चाहिये ॥ ५५ ॥

आश्लेषा भरणी द्वयं शतभिषकृत्यक्त्वा विशाखां कु  
हूरिक्ता पक्षति अशुभिपरिहरेत्यक्ठीमपि द्वादशीम् १  
टी०॥ श्लेषा भरणी कृतिका शतभिषा विशाखा और भावस्या रिक्ता  
तिथि द्वितिया अशुभनी द्वादशी इन सबको छोड़के दिनमें वाग लगावे ॥

(सिक्का ठालनेकामु)

मृदुध्रुव क्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शानि चंद्रवर्ज्ये  
वारं तथा पूर्णजलाब्धये च मुद्रा प्रशस्ता शुभदा हिरासा  
टी०॥ मृदु संज्ञक ध्रुव संक्षिप्र संज्ञक इन नक्षत्रों शुभहै शानि चन्द्र  
ये वार छोड़के सिक्का रचे ॥ ५६ ॥

(प्रश्न प्रकर्णतिथ्यादि प्रयुक्त प्रश्नः)

तिथिप्रहरसंयुक्तं तारका वारं मिश्रितम् ॥  
अग्निमित्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वरजस्तमः ॥ फ ॥  
सिद्धिस्तात्कालिकी सत्त्वरजसा तु विलंबिता  
तमसानिष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रथमं कोविदो २  
टी०॥ जिस तिथि वार नक्षत्र में और प्रहर में प्रश्न में करे तिसका  
उत्तर नीचे लिखते हैं ॥ उदाहरण ॥ तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ५ प्रहर  
३ इन सबों को छोड़के १७ तीन का भाग दे तो १५ गये शेष ३ रहे तिस  
का नाम दूसरा रज तिसका फलयेके कार्यमें विलंब दुस्ती प्रमारासे सब का  
फल जानना तीन वचे ३ तमनिष्फल १ वचे ती सत्त्व कार्य सिद्धि ॥ ५७ ॥ २ ॥

(अपनी छाया से प्रश्नः)

आत्मछाया त्रिगुणिता त्रयोदशासमन्वित्ती

धनसहज गतो सिता मरेज्यो कथयत आगम  
नंप्रवासि पुंसाम् ॥ तनुहिबुक गता विमौ चत  
हृत्कटितिचूसां कुरुतो ग्रह प्रवेशम् ॥ १ ॥

टी०॥ द्वितीय स्थान शुक्र तृतीय स्थानी गुरु अथवा प्रश्न लग्न में  
शुक्र चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होतो प्रेक्षणी प्रीघ्नी आया जानिये  
(कार्यो कार्य प्रप्तः)

दिशा॥ प्रहरसंयुक्ता तारका वार मिश्रिता ॥ अथ  
भिक्षुहृद्देवांग शेषं प्रप्तस्य लक्षणं ॥ फलं ॥ पं  
चैकैव रिता सिद्धिः षट् सूये च दिनत्रयम् ॥ वि  
सप्तके विलंबश्च द्वौ चाद्यौ न च सिद्धिदौ ॥ २ ॥

टी०॥ एच्छुक्र का मुख जिंस दिशा की होय वह दिशा और प्रहर वार  
नक्षत्र इन सबको एकत्र करिके ८ का भाग दे शेष वचें तिस में शुभा  
शुभ जानिये एक १ पांच ५ शेष वचें तो कार्य प्रीघ्नी सिद्धि जानिये चा  
र ४ कः ६ वचें तो तीन दिन में काम सिद्धि होती ३ सात ७ वचें तो वि  
लंब से कार्य सिद्धि होय २ दो ८ आठ वचें तो कार्य नहीं होय ॥ २ ॥

(अंक प्रप्तः)

अंकद्विगुणितं कृत्वा फलनामाक्षरेयुतम् ॥  
त्रयोदश युतं कृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ फलं  
एके हि धनवृद्धिश्च द्वितीये च धन क्षयः ॥  
तृतीये क्षेम मारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेव हि ॥ २ ॥  
पंचके च विलास स्यात् षष्ठे वंधुविनाशनम्  
सप्तमे इषिता सिद्धिरथ मे मरणं ध्रुवम् ॥  
नवमे राज्यं संप्राप्तिर्गर्भस्य वंचनं तथा ॥ ४ ॥

४	३	८
६	५	९
२	७	६

टीका॥ जितने अंक का नाम होय उनको दूना करे फल और नाम के  
अक्षरों को मिलावे फिर उसमें १३ और मिलावे ८ का भाग दे शेष  
वचें तिस का फल कहिये एक से १ धन वृद्धि दो २ से धन क्षय तीन  
से ३ आरोग्य चार से ४ व्याधि पांच से ५ स्त्री का लाभ - छ ६

पंचभिस्तुहरेद्भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत् ॥ फलं  
 पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयं आसु व्योम्नि न लभ्यते ॥  
 तेजसुराजसंज्ञेयं वाथैः प्रोक्तं विनिर्दिशेत् २

टी० ॥ तिथि चार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाने और पांच का भाग दे  
 शेष १ वचे तो पृथ्वी में जानिये दो २ वचे तो जल में जानिये तीन ३  
 वचे तो आकाश में पर मिले नहीं चार वचे तो अग्नि में राजा के गई  
 जानिये पांच वचे तो वायु में प्रोक्त जानिये ॥ १॥ २॥

(गर्भिणी प्रश्न)

नतृच्छलगे रविजीवभोमेतृतीये सप्तेन च  
 पंचमे च ॥ गर्भः पुमान्वैः ऋषिभिः प्रणीतं  
 चान्यग्रहे स्त्रीविवधेः प्रणीतम् ॥ १॥ १॥

टी० ॥ गर्भिणी जिस लग्न में प्रश्न करे उस लग्न से प्रश्न कहे लग्न के  
 वृतीय नवम पंचम सप्तम इन स्थानों में गुरु रवि भौम यह ग्रह स्थित  
 हों तो पुत्र होय इन्हीं स्थानों में अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या होय ॥ १॥

(मुष्टि प्रश्न)

मेघेरक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलं वरां कम् ॥  
 कर्के च पांडुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम् १ ।  
 कन्यायां नीलमिश्रं तु तुला पीतमिश्रितम् ।  
 वृश्चिके नामु मिश्रं च चापि पीतं विनिश्चितम् २  
 नके कुंभे कस्मि वरां मीने पीतं वदेत्सुधी ॥

टी० ॥ प्रश्नकर्ता की मुष्टि में किस रंग की वस्तु है तिसके बनाने की  
 रीति जो मेघ लग्न होय तो नील रंग की वस्तु मुष्टि में है और वृष लग्न  
 होय तो पीत मिथुन होय तो नील कर्क लग्न होय तो पांडुर सिं ह  
 लग्न में धूम्र कन्या में नीला मिला तुला में पीला मिला वृश्चि-  
 क में तांबा मिला धनु में पीला मिला मकर में हरा मिला वेलका  
 वरां कुंभ में लौह मय मीन में पीत मय वरां जानना चाहिये ॥ १॥ २॥

(लग्न से मन चिंतित प्रश्न)

षट्चतुर्भूतवाधानवाधारकपंचके ॥१॥  
 टीका ॥ तिथिवार नक्षत्र लग्न प्रहर इनकी मिलावे और ८ का  
 भाग देय शेष वचे तिससे फल कहना चाहिये ७/३ वचे  
 तो देवता की वाधा- और २/८ वचे तो पित्त की वाधा- ६।  
 ५ वचे तो भूत की वाधा १/५ वचे तो वाधानहीं जानिये ॥१॥

(लग्नदोष)

मेघे च देवी दोषः स्यात् वृषे दोषश्च पैतृकः ॥  
 मिथुने प्राकिनी दोषो कर्कटे भूतदोषकः २  
 सिंहे सहोदराणां वै कन्यायां कुलमातृजाः ॥  
 तुले दोषश्चंडिकाया नाडी दोषो हि वृश्चिके २  
 चापे च यक्षिणी दोषो मकरे ग्रामदेवतात् ॥  
 अपुत्राष्टिजाः कुंभे मीने आकाशगामिनः ३

टी० ॥ जिस लग्न में रोगी प्रश्न करे तिसका उत्तर में लघ्न में पित्त  
 दोष- वृष में आकाश देवी- मिथुन में महा माया- कर्क में वातज्वर  
 भूत प्राकिनी- सिंह में प्रेतभारु की दोष कन्या में कुल देवता तुला में चंडि  
 का पूतना- वृश्चिक जाग दोष वाज्वर पीडा- धन में यक्षिणी वा देह  
 दोष मकर में ग्राम देवी हंसे रोवे कुंभ में अपुत्रा स्त्री की दृष्टिका दो-  
 ष मीन में ज्वर जंजाल दृष्टीन योगिनी दोष जानना ॥

(मेघका प्रस)

आषाढ स्यासिते पक्षे दशम्यादि दिनत्रये ॥  
 रोहिणी कालमारव्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणं  
 रात्रौ वैव निरभं स्यात् प्रभाते मेघडंवरम् ॥  
 मध्याह्ने जल चिंदुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् २

टी० ॥ आषाढ कृत्तिका पक्ष की दशमी एकादशी द्वादशी इनमें रोहिणी  
 नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्षे तिथि कमसे जानिये और  
 रात्रि में मेघ न होय और प्रातः काल मेघ गर्ज मध्याह्न में बूदें पड़ें ऐ  
 से लक्षणा जिस संवत्सर के होंय उसमें महर्घता जानिये ॥२॥

सूर्य के होय तो वायु चले और जो दोनों चंद्रमा के होय तो मेघनबर्ष  
और सूर्य चंद्रमा के नक्षत्र होय तो वर्षा होय ॥ १ ॥

**(धान्य प्रश्न)**

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौमित्राणिसर्वशुभंगोरा  
येप्रियमुग्धनानिलपरेलाभारिनाशादिकम् ॥ रथ्यां  
गेकलहः श्रियश्चवलगेस्थानानिमित्रागमौरोरमंवि  
पदा परांगकलहखालेयशोकावहः ॥ १ ॥ ५ ५ ५ ॥

टीका ॥ २७ दाने धान्य के लेकर एक राशिको उसी राशि में से एक  
चुटकी भर निकाल के रखे ऐसे तीन राशि करे उनमें से तीन २ दाने  
जुदे २ करता जाय जो तीन राशियों में से एक एक वचे तो जय लाभ होय  
-का कहिये १ पा कहिये २ य कहिये १ ऐसी तीन राशियों से पृथक् कर  
एक एक वचे तो उसका फल जय लाभ जानिये ॥ १ ॥

२	कु	क	१	गी	क	२	मित्रादि सर्व सिद्धि
४	गो	क	३	रा	२	पे १	प्रिय भोग प्राप्ति
४	ल	३	प	१	रे	२	लाभ और शत्रु कानाशा
५	र	२	प	१	ग	३	कलह होय
६	व	३	ल	३	गे	३	लक्ष्मी मित्र लाभ
७	रो	२	रो	२	रे	२	विपत्ति होय
८	प	१	रो	२	ग	३	कलह होय
९	खा	२	ल	३	प	१	शोक प्राप्ति

ऐसे तीन बार करते से बुरा भला फल जानिये  
और राशिके समय तीन तीन दाने गिनै ॥ १ ॥

**(पशु विषय प्रश्न)**

द्युमणिभान्नवभेषुधने स्थितं तदनुषट्सुच  
कर्णपथे स्थितम् ॥ अचलभेषु गतं गृहमा  
गतं द्युमतं गतमेव मृतं त्रिषु ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ जो सूर्य नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र नववा होय तो पशु बन में

शीर्षे त्रीणि मुखे त्रयं च विभक्ते कैकभं स्कंधयोरे कै  
 कं भुजयोस्तथा करतले धिषायानि पंचोदरे ॥ नाभौ  
 गुह्यतले च जानुयुगले एकैकं च रक्षं क्षिपेत् जतोः केचि  
 दिति वुवं निगणाकाः शोपाणि पादद्वयोः ॥ अल्यायुश्च  
 णं स्थिते च गमनं देशांतरं जानुभे ॥ गुह्यस्यात्परदारलं  
 भनमहीनाभौ च सौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यं हृदि चौर्यं म  
 स्य करयोर्वाहोर्वलं वै मुखे मिष्टान्नं चलभे च मान  
 वगणो राज्यं स्थिरं मूर्द्धिनी ॥ २ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने प्रथम ३ मस्तक रा  
 ज्य प्राप्ति आगे मुख ३ मिष्टान्न भोजन १।१ कंधों पर बल अधिक हो  
 नों भुजाओं पर १।१ बलवान् हथेलियों पर १।१ चोर होय हृदय प  
 र ५ ऐश्वर्य नाभि पर १ मुख प्राः गुह्य पर १ परदार लं पटता जानु  
 पर १ प्रदेश गमन दोनों पैरों पर ३।३ अल्यायुः इस प्रकार जन्म  
 नक्षत्र का फल जानिये नव ग्रहों की टीका सुगम है सो आगे चक्र  
 लिखे हैं तिससे सब ग्रहों का फल जानना ॥ २ ॥

सूर्य संक्राति जिस नक्षत्र में अर्के उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने  
 जितने नक्षत्र आवें वही फल जानना ॥ १

स्थान	मुख	दा.हा.	पायीं	वावाहू	हृदय	नेत्रों	मस्त.	गुह्य	सूर्य
नक्षत्र	३	४	६	४	५	४	१	२	०
फल	रोग	लाभ	मार्ग	बंधन	लाभ	लक्ष्मी	राज्य	अ.सू.	चक्र

जन्म नक्षत्र से जिस नक्षत्र में चंद्रमा होय तिस पर्यंत  
 गिने जितने आवें फल जानिये ॥

स्थान	मस्तक	मुख	दा.हा.	हृदय	वा.हा.	कुक्षि	दा.पायं	वा.गयं	चंद्र
नक्षत्र	६	१	३	६	३	६	१	१	०
फल	लाभ	हानि	हानि	सु.श.	रोग प्रा	शोक	हानि	रोग	चक्र

जन्म नक्षत्र से जिस नक्षत्र पर मंगल होय तिस तक गिने

स्थान	अस्त	रा.हा.	पायीं	जा.हा.	हृदय	कंठ	मुख	भेत्री	गुह्य
नक्षत्र	३	४	६	४	३	१	२	३	२
फल	राज्य	रिपुक्ष	आर्गच	मृत्यु	लाभ	रोग	जय	सौख्य	कष्ट

जन्म नक्षत्र में केतु जिस नक्षत्र में होय उस तक गिने तिस स्थान में पडा हो उसका फल जानना

स्थान	अस्तक	मुख	हाथों	पायीं	हृदय	कंठ	गुह्य
नक्षत्र	५	५	४	६	२	४	१
फल	जय	अय	विजय	सुख	शोक	व्याधि	बड़ा भय

(लग्न शुद्ध में पंचक ज्ञान)

गत तिथि युत लग्ने नंद हूत् शेष कंच वसु यम युग  
षट्के क्षोणि संख्या क्रमेण ॥ लग्न लक्ष्मण चौर मृत्युदं  
पंचकं स्याद्गत गृह नृप मार्गो हाह के वर्जनी यम् ॥ १ ॥

टीका ॥ गत तिथि को लेकर उसमें लग्न मिलावे और नव का भाग दे शेष वचे तिसका फल कहिये ८ बचें तो रोग पंचक जानिये सो यज्ञोपवीत में वर्जित है २ बचें तो अग्नि पंचक जानिये यह गृहारंभ में वर्जित है ४ बचें तो राज पंचक जानिये और ६ बचें तो चोर पंचक जानिये यह दोनों पंचक यात्रा में वर्जित है और पांच ५ बचें तो मृत्यु पंचक जानिये यह भी विवाह में वर्जित है इससे अधिक जो अंक बचें तो निष्पंचक जानिये ये सब कार्य में विचारै ॥ १ ॥

(वारों में पंचक वर्जित)

रवौ रोगं कुजे बन्धिः सोमे तु नृप पंचकम्  
बुधे चौरं प्राणो मृत्युः पंचकानितु वर्जयेत् १

टीका ॥ रवि वार में रोग पंचक - मंगल में अग्नि पंचक - सोम वार में राज पंचक - बुध वार में चोर पंचक - शनि वार को मृत्यु पंचक इन वारों में वर्जित है ॥ १ ॥

(दिन रात्रि मानं)

अथनादिक वासर रामहताः गगना नलुवाण



र्षका भागदेजो अंक शेष रहें उतनीही गत शत्रि जानना चाहिये ॥

(अंतरगवहिरंग नक्षत्र)

सूर्यभाह दुगणं पुनः पुनर्गायता मिति च  
तुष्टयं त्रयम् ॥ अंतरंगवहिरंग संज्ञकं तत्र  
कमे विदधीतता हशम् ॥ १ ॥ ५ ५ ५ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्तमान नक्षत्र पर्यंत वार गिने तो वे अंतरंग वहिरंग संज्ञक होते हैं ॥

सूत का स्नान

करेन्दुभाग्या निलवासवां त्यै मैत्रेन्दुवाश्चि  
ध्रुवमेहि पुसाम ॥ तिथावरित्ते शुभसागन  
न्ति प्रसूतिका स्नान विधिस्मुनीन्द्राः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुणी स्वाति धनिष्ठा रेवती अनु-  
राधा मृगशिर अश्विनी और ध्रुव नक्षत्र इन में से कोई नक्षत्र  
जिस दिन होय उस दिन सूतिका का स्नान कहा है परंतु रि-  
ता तिथि छोड़िकें ॥ १ ॥

अस्यामेव दिग्वि शेषे वायु संचार फलम् ॥ आ  
षाढ्यां भास्करा स्ते सुरपति निलये वातिवाने  
षु दृष्टि सस्याद्धं प्रकुर्यां घदिद हरिशोभं दृष्टि  
यमेन ॥ नैत्रदत्यां मन्नाशो वरुणादिशि जलं  
वायुकोणे प्रवायुः ॥ कौवेर्यां सस्य पूर्णां सक  
लवसु मतीत हृदी प्राण कोणे ॥ १ ॥ ५ ५ ॥

टीका ॥ आषाढ की पूर्णा को वायु जिस दिशा की चले तो यथा-  
योग्य फल जानना चाहिये वैसाही कहै यह टीका सुगम है ॥ १ ॥

(अस्या पूर्णा मायां हुतासनी फलम्)

पूर्वे वायौ हो लिकाया प्रजाभूपलयोः सुख ॥ पला  
यन च दुर्मिदक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ पश्चिमैरण संपत्ति उ  
त्तरे धान्य संभवः ॥ यदि खेचि शिखा दृदिर्दुर्गराज्ञा च संश्रयेत् १

२२०  
दुःश्रयनमः

॥ इति ज्योतिषसारसंपूर्णमशुभम् ॥

मितीमाघ शुक्ला पूर्णमासीयांगभृगुवासरे सम्बत् २६३८

—ॐ—

हस्ताक्षर रूपलाल कायस्थ

दीहा

॥ रूपलाल जन दीन को दुःश्र चरण की प्रास ॥

॥ जैसे चात्रक मिटै ना बिना स्वातिके प्यास ॥

बरना चकती कर गहें सुवगहा के असवार

पलास सहित रक्षा करे सुनाहै बंस हमार

—ॐ—

दीहा

तपरिपुतारिपुतायुपिपु रिपु रिपे रिपेन

तारिपुके असवारसों लगे हमार नैन

लटपटपगधरती धरत अटपट बोलत नैन

कछु पीउसों खटपट भई सुटपटपटपकत नैन

गिरिधियपतिके तिलकहैं ता जननी धियकंत

ताके सुमिरन करत ही आवागवन मितंत

अजा सहलीतासुरिपु ता जननी भर्ता र

ताके सुतके प्रात्रु को भज मन बारंबार

\* { अक्षर चौगुन पंच जुत दून वसू कर पेख

राम रसे सब जगत में तुलसी चित्तमें देख

तुलसी जा संसार में पंच तत्व हैं सार

साधु मिलन अरु हरि भजन दया दीन उपकार

—◆—

॥ हिंसाबसे राम के हो अक्षर सब वस्तुओं में सिद्धे ॥